पराधीनता से स्वाधीनता

९० वर्ष की क्रान्ति का पूर्ण इतिहास

पराधीनता
से
स्वाधीनता

[१८५७ से १९४७ तक]

(नौ एकांकी नाटकों में)

—〰〰—

लेखक—

'बापू के प्यारे तथा महान् भंगी' तथा 'कर्तव्य' के रचयिता

श्री प्रेमराज शर्मा, 'विद्रोही'

एम० ए० टी० जी० (लण्डन) डिट.. एम० एम० आर्टस् प्रभाकर

अध्यक्ष—

सामाजिक शिक्षा तथा कला विभाग

श्री महावीर जैन हायर सैकण्डरी स्कूल,

देहली।

न्यू इम्पीरियल बुक डिपो,

५४४ नई सड़क, देहली।

[मूल्य दो रुपया आठ आना]

दो शब्द

'पराधीनता से स्वाधीनता" के लेखक श्री प्रेमराज शर्मा विद्रोही' बहुत पुराने जन-सेवक और कलाकार हैं। उन्होंने इस पुस्तिका में संगृहीत ६ नाटकों को किसी की प्रेरणा से नहीं, अपितु अपनी रुचि से और अपने शौक से लिखा है। युवकों मे देशभक्ति, स्वावलम्बन आदि गुण विकसित करने मे ही वह अपने जीवन की सार्थकता मानते है। स्वयं उनका अपना जीवन एक साधक का जीवन रहा है।

प्रस्तुत पुस्तिका लिखने में उनका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी और अन्य नवयुवक नाटक के रूप में अपने देश के स्वातन्त्र्य संघर्ष की कथा पढ़ कर अपना जी बहलाने का आनन्द तो उठावे ही, साथ ही उन्हे अपने देश के इतिहास के एक अन्धेरे पृष्ठ का ज्ञान भी हो जाय।

इस पुस्तिका मे सम्मिलित नाटकों से पहले भी उन्होंने सार्वजनिक विषयों पर कई नाटक लिखे है। उनमें से कई का तो दिल्ली के एक स्कूल मे सफल अभिनय भी हो चुका है। साधारण जनता के अतिरिक्त, दिल्ली के शिक्षण विभाग के अधिकारियों ने भी, उक्त अभिनय देख कर, सन्तोष, प्रशंसा और प्रसन्नता के भाव व्यक्त किये थे। प्रस्तुत नाटक भी सब

ऐसे हैं, जो पुस्तक रूप में पढ़ने के अतिरिक्त, रंगमच पर अभिनीत भी हो सकते हैं।

इन नाटकों को लिखने में एक विशेष क्रम का ध्यान रखा गया है। हमारे देश में लगभग गत एक शताब्दी में स्वतन्त्रता प्राप्ति के जिन प्रयत्नों को जानबूझ कर सार्वजनिक दृष्टि से छिपाने की चेष्टा की गयी उन्हें इन नाटकों द्वारा प्रकाश में लाया गया है। इन नाटकों के अनेक पात्र भले ही कल्पित हैं, परन्तु इनमें प्रदर्शित घटनायें सब की सब सत्य हैं। इनका क्रम ऐसा रखा गया है कि इनसे गत शताब्दी के स्वातन्त्र्य-संघर्ष के इतिहास का पाठक, दर्शक और श्रोता को ज्ञान हो जाय। अब से दो वर्ष पूर्व तक, देश की परतन्त्रता के कारण, इन नाटकों में वर्णित ऐतिहासिक सत्यों का प्रकाशन सम्भव नहीं था। परन्तु अब समय बदल गया है। आज की पीढ़ी के अधिकतर लोगों को इन नाटकों की अनेक घटनाये अपने जीवन-काल में ही घटित हुई जान पड़ेंगी। इसलिए, आशा है, उनका इन नाटकों से विशेष मनोरंजन होगा। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तका को जो पढ़ेगा, यह उसके मनोरंजन और ज्ञानवृद्धि में अवश्य सहायक होगी।

—रामगोपाल
विद्यालङ्कार

भूमिका

दासता के दिनों की सच्ची परन्तु असानुषिक घटनायें स्वाभिमानी और आत्मसम्मानवाले पुरुषों के हृदय को, राख से ढके हुए अङ्गारों की भांति, भीतर ही भीतर जलाया करती है। उस समय के इतिहासवेत्ता तक, यथार्थ घटनाओं को जानते हुए भी, उनका सार्वजनिक रूपेण उल्लेख नहीं कर सकते। वे उनकी केवल निजी बातचीत में चर्चा करके सन्तोष मान लेते है। वस्तुत: संसार में सर्वत्र परतन्त्र राष्ट्रों की कहानी इसी प्रकार की है।

जब किसी मनुष्य को संसार के कुछ भू-भागों का स्वामी बनने मे सफलता हो जाती है तब वह अपने आपको सम्राट और राजराजेश्वर कहलाने लगता है। कुछ काल पश्चात उसकी अहंकार-भावना अत्याचार-प्रियता में बदल जाती है और वह अपने आधीन दीन-दुखियों के जीवन से खिलवाड़ करने में ही सुख मानने लगता है। यदि कोई उसके विरुद्ध आवाज उठाने का साहस भी करे तो राजभक्त लोग उसकी न्याय और मनुष्यता की भावनाओं को नाना प्रकार की युक्तियां देकर दबा देते हैं। वे "महती देवता ह्येषा। नर-रूपेण तिष्टति" इत्यादि नीति वाक्यों का व्यभिचार करके जनता को भ्रम और अज्ञानान्धकार मे रखे रहते हैं। इस प्रकार के स्वार्थ-साधु लोग, वाजिद्अली सरीखे हजारों नारियों की मांग करने वालों तक की, 'समरथ को नहीं दोष गुसाईं' का हवाला देकर, वकालत करते नहीं थकते।

इनके विपरीत, जो जन-सेवक या जन-नेता, वाणी अथवा लेखनी द्वारा भी, अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते या मनुष्यता का पक्ष लेते है उन्हें बहुधा सम्पत्ति की जब्ती, जेल-खाने की यातनाओं और कभी कभी फांसी के फन्दों तक का

सामना करना पड़ता है। हमारे भारतवर्ष का इतिहास भी इस साधारण परम्परा का अपवाद नहीं। वह इस प्रकार के उदाहरणों से पटा पड़ा है। परन्तु जैसा कि हमने ऊपर लिखा है, कोई भी इतिहासकार उस इतिहास को अत्याचारियों के अत्याचार-काल में बिना किसी जोखिम के लेख-बद्ध नहीं कर सकता। किसी भी काल का सच्चा इतिहास प्रायः समय बीतने पर लिखा जाता है। शायद इसी कारण इसका नाम ही इतिहास अर्थात "जो निश्चय पूर्वक था सो" है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने, अज्ञात इतिहास की उन घटनाओं का उल्लेख किया है जिनका सम्बन्ध गत एक शताब्दी के काल से है। इस काल मे देश को स्वतन्त्र करने और यहां की जनता को शक्तिशाली अत्याचारियों के अत्याचार से छुड़ाने के लिये जो असफल परन्तु असाधारण प्रयत्न हुए उनका लेखक ने मनोरंजक नाटकों के रूप मे वर्णन किया है।

यों तो औरङ्गजेब, दाहर, अशोक, पृथ्वीराज आदि जिन राजाओं का नाम इतिहास मे अनेक कारणों से सम्मानपूर्वक लिया जाता है, वे भी अपने अत्याचारों और पापों पर परदा डालने के लिये नाना प्रकार के प्रपच रचा करते थे, परन्तु ब्रिटिश शासन काल मे जन-पीड़न और अत्याचार को आकर्षक रूप प्रदान करने के लिये जो छल-प्रपंच किये गये उनकी टक्कर कम से कम इस देश के इतिहास में अन्य किसी काल की घटनाओं से नहीं हो सकती। अशोक के जीवन का पूर्व भाग अनेक प्रकार के भोग-विलास-पूर्ण कुकृत्यों और क्रूरताओं का इतिहास है। परन्तु वह पीछे सम्भल गया और उसने "बुद्ध शरणं गच्छामि" का मन्त्र पढ़ कर और उस पर

आचरण करके मानो अपने पहले पापों का प्रायश्चित्त-कर लिया। औरङ्गजेब ने जो किया, मानो उसे छिपाने के लिये, वह मसजिदों मे खड़ा होकर लोगों के कोड़े मारता था कि तुम नमाज क्यों नहीं पढ़ते या रोजा क्यों नहीं रखते। दाहर अपने मालिक की पत्नी को कुलटा बना कर, मालिक को विष देकर गद्दी पर बैठा। और पीछे उसने हिन्दुओं को प्रसन्न करने के लिए मुस्लिम लुटेरे मोहम्मद गजनवी से लड़ाई लड़ी परन्तु हार गया। पृथ्वीराज ने एक कन्या का अपहरण किया, परन्तु धर्म-रक्षा के नाम पर एक विदेशी आक्रान्ता से लड़ता हुआ मारा गया। ब्रिटिश शासकों ने यहां जो कुछ किया उस सब का लक्ष्य तो था अपने देश ग्रेट ब्रिटेन को और उसके निवासियों को लाभ पहुंचाना, परन्तु उन्होंने ऊपर से बातें बनाई यहां के लोगों को सभ्य बनाने की, उन्हे स्वराज्य के योग्य बनाने की और उनको ससार के अन्य देशो के साथ दौड़ मे आगे ले जाने की। उनके ही राज्य काल मे नाना साहब, कुंवरसिंह, तात्या टोपे, मैनावती, कूका रामसिंह, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिह और महात्मा गाधी आदि राजकीय अत्याचारों के शिकार हुए। इस पुस्तक मे पाठकों को इन सब महापुरुषों के उन प्रयत्नों की कथा पढ़ने सुनने को मिलेगी जो उन्होंने अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए किए थे। यह पुस्तिका का विषय इतिहास नहीं है, परन्तु इसमे अब तक अप्रकाशित अनेक ऐतिहासिक सत्यों पर प्रकाश डाला गया है। यदि इससे मनोरजन के साथ साथ पाठकों को उन ऐतिहासिक सत्यो का भी ज्ञान हो गया तो लेखक और प्रकाशक अपने श्रम और व्यय को सार्थक हुआ मानेंगे।

—प्रकाशक

विषय—सूची

॥ स्वर्गीय राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचन्द गांधी ॥

स्वर्गीय ला० लाजपतराय (पंजाब केसरी)

।। स्वर्गीय मोती लाल नेहरु ।।

॥ स्वर्गीय लाला साहब ॥

॥ श्री अब्दुल गफ्फारखां सीमांत गांधी ॥
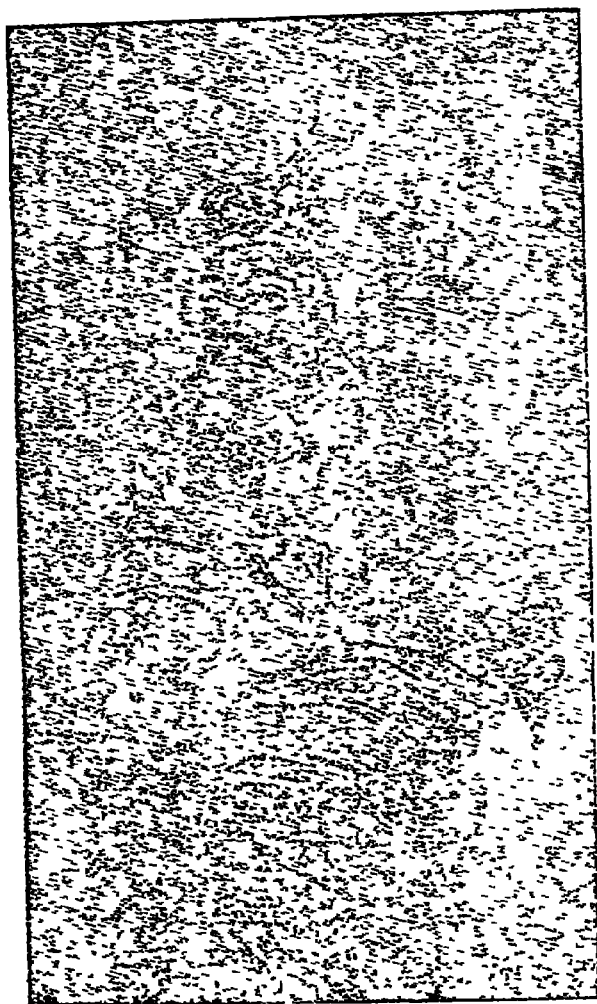
स्वर्गीय बाबू कुवरसिंह जी १८५७ की क्रान्ती के
भाग्य विधाता (बिहार)
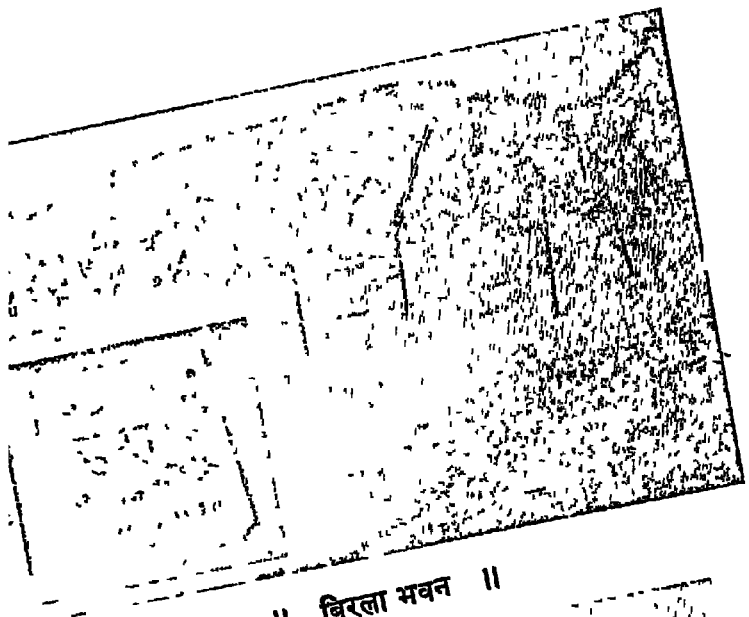
॥ बिरला भवन ॥

॥ बापू की समाधी ॥

श्री सुभाष चन्द्र बोष, स्वतन्त्र भारत के निर्माता
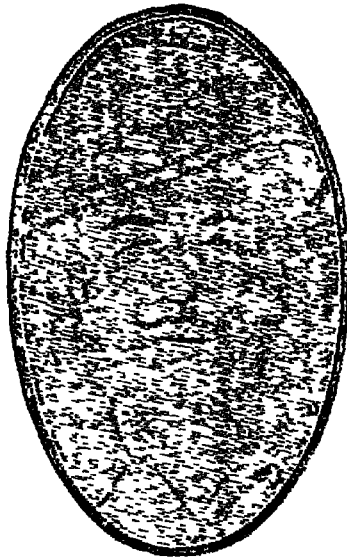
सरदार भगत सिंह आतंक क्रान्ति के प्रमुख सिंह
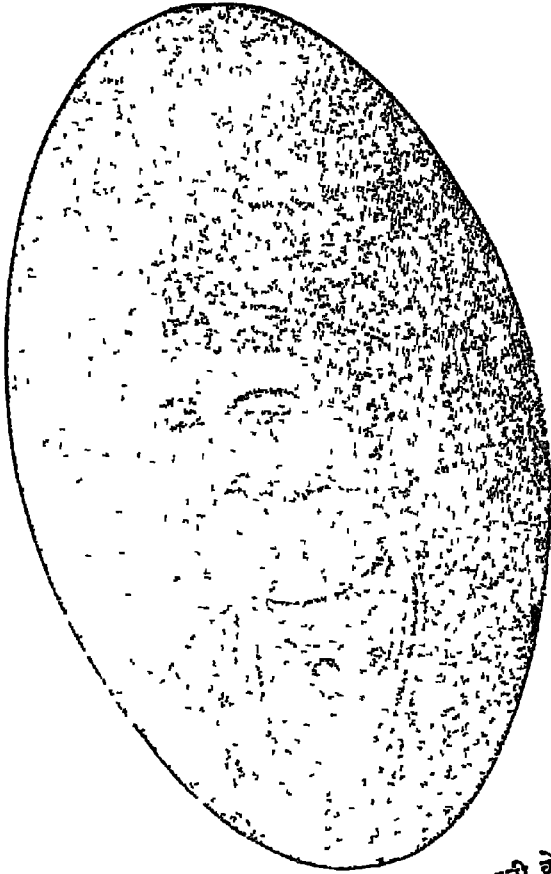
स्वर्गीय तातिया टोपी १८५७ की क्रान्ती के प्रधान
सेनापति व युद्ध सचालक

पहला तूफ़ान
१८५७

पात्र

दाताराम:—हिन्दुस्तानी सैना में नायक।

बृजमोहन:—इतिहास प्रसिद्ध सैनिक (जिसने सर्व प्रथम मेरठ छावनी के हिन्दुस्तानी सैनिकों से नए कारतूसों के प्रयोग की बात कही)

नत्थूसिंह:—हिन्दुस्तानी सैना का 'सूबेदार मेजर'

रामसिंह:—हिन्दुस्तानी सैना में 'सूबेदार'

हबीबुल्लाखां:—छावनी के हथियार घर का एक अधिकारी,

मुन्शीसिंह:—एक साधारण सैनिक

जमादार, खानसामा तथा अन्य सैनिक—

कमलापति:—कलकत्ता का एक व्यौपारी, नरेन्द्र मोहन वकील का मवक्किल।

नरेन्द्र मोहन:—कलकत्ता का प्रसिद्ध वकील (जिसके पिता दिल्ली से आकर यहा बसे थे) सुल्तान अहमद का घनिष्ट मित्र।

सुल्तान अहमद:—दिल्ली की कचहरी का भूतपूर्व नाजिर, अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित एक निर्दोष मुसलमान। नरेन्द्रमोहन का मित्र।

अजीतसिंह:—एक अंग्रेज डिप्टी कलक्टर का मुन्शी।

पहला तूफ़ान

१८५७

(प्रथम दृश्य)

[अंग्रेजों ने सन १७५७ ई० में मीर जाफ़र को अपने पक्ष में करके बंगाल के बादशाह सिराजुद्दौला को धोखे से मरवा डाला। उसी समय से भारत में ईस्ट इन्डिया कम्पनी के शासन का आरम्भ हुआ। अंग्रेजों ने अत्याचार धोखा, बेईमानी छल-कपट सभी को प्रयोग में लाकर भारतवासियों को बेड़ियों में जकड़ने का प्रयत्न किया। कुछ ही समय के बाद भारतवासियों

को अनुभव होने लगा कि अंग्रेज भारत की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक स्थिति को खराब कर रहा है। और सम्मान पूर्वक जीवन व्यतीत करना अंग्रेज के राज में असम्भव है।

अंग्रेजी राज का विस्तार करने वालों ने बल पूर्वक राजाओं नवाबों तथा ताल्लुकेदारों को शक्ति से दबाया और उनकी जागीरें छीन छीन कर ब्रिटिश राज में शामिल कर लीं। मुग़ल साम्राज्य का पतन होकर केन्द्रीय शासन छिन्न-भिन्न हो रहा था। छोटे छोटे राजा और नवाब आपस में लड़ भिड़ रहे थे। अंग्रेज ने इस फूट से लाभ उठाकर भाई भाई को आपस में लड़ाया और इसी भेद नीति के कारण सन १८०३ ई० में मरहठा सरदार सींधिया ने अंग्रेजों से 'अंजन गांव' की प्रसिद्ध सन्धि की। जिसके द्वारा दिल्ली तथा मेरठ आदि प्रदेश अंग्रेजों के कब्जे में आ गए। लखनऊ तथा दिल्ली की बादशाहतों को समाप्त करने के अतिरिक्त अंग्रेजों ने नागपुर सतारा और झांसी को भी अपने राज्य में मिला लिया। उत्तराधिकार नियम से तो सभी राजे-नवाब असंतुष्ट थे।

अंग्रेजों ने जिस नीति को प्रारम्भ से भारत मे अपनाया उसके कारण जन साधारण से लेकर राजा नवाब तक अन्दर ही अन्दर उनके विरुद्ध हो रहे थे। देश का समस्त व्यापार

धीरे-धीरे अंग्रेजी व्यापारियों के हाथ में जा रहा था। भारत के कला-कौशल को निर्दयता-पूर्वक कुचला जा रहा था। ढाका में बंगाली जुलाहों और जुलाहियों के अंगूठे कटवा देने की घटना इतिहास प्रसिद्ध है।

भारत की आत्मा—भारत के ग्राम—धीरे धीरे उजड़ते जा रहे थे। गांवों के उद्योग-धन्धों को ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा तेजी से समाप्त किया जा रहा था। ग्रामों के लोग भाग भाग कर शहरों मे मजदूरी करने पर मजबूर हो रहे थे। जागीरदारों जमींदारों, पुलिस, तहसील और अदालतों के सरकारी कर्मचारियों द्वारा गांवों की जनता खुले आम लूटी जा रही थी। हर प्रान्त के किसानों पर साहूकारों का अरबों रुपये का क़र्ज़ था। जो दिन रात तेजी से बढ़ रहा था। ग्राम वासियों की जमीन जायदादे धीरे धीरे नीलाम हो होकर उन्हें दर दर का भिखारी बनाती जा रहीं थीं। मालगुजारी लगान तथा टैक्सों के बोझ से भारत का किसान दवा जा रहा था। उसकी कमाई का सब कुछ दूसरे लूट कर ले जाते थे। रहने को घर, तन ढांकने को वस्त्र और खाने को पेट भर अन्न पाने के लिए बड़ा कठिन परिश्रम करने पर भी, सब कुछ दुर्लभ था उसके लिए।

देश के सामाजिक ढांचे को अस्त व्यस्त करने के लिए बड़ी मक्कारी से काम लिया जा रहा था। एक ओर ईसाई पादरी जगह जगह अपने मदरसे और अस्पताल स्थापित कर रहे

थे। जो ईसाइयत के प्रचार के साथ साथ अंग्रेजी राज के समर्थकों की एक फौज खड़ी कर रहे थे। देश वासियों की गरीबी और अज्ञान से अनुचित लाभ उठाकर उन्हें तेजी से ईसाई धर्म मे प्रविष्ट किया जा रहा था। इन पादरियों की फौज को सरकार और उसके कर्मचारियों का पूरा समर्थन प्राप्त था। और फिर लालच यह कि जो आदमी कल तक हिन्दू मुसलमान कहलाते हुए रोटी कपड़े और रोजगार के लिए मारा मारा फिरता था, वह ईसाई होते ही किसी उच्च पद का स्वामी होकर शान से जीवन व्यतीत करने लगता था। दूसरी ओर संस्कृत के पण्डितों और ग्राम-पाठशालाओं की बुरी हालत थी। ग्राम पंचायतों को तेजी से समाप्त किया जा रहा था। संस्कृत तथा हिन्दी का घोर निरादर था। किसी भी सरकारी व्यवहार में देवनागरी को नहीं अपनाया जा सकता था। फिर कौन पढ़ता संस्कृत हिन्दी को? हिन्दुओं की वेष-भूषा, धोती कुरते, का प्रयोग कोई सरकारी कर्मचारी अपनी नौकरी के समय नहीं कर सकता था। पगड़ी की जगह 'नगे सिर' और हैट ने लेनी शुरू करदी थी। तीसरी कक्षा तक अंग्रेजी पढ़े लिखे को तहसीलदार बना दिया जाता था। जबकि संस्कृत के विद्वानों की कोई पूछ न थी।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त हिन्दुस्तानी फौजियों का भी बुरा हाल था। उन्हें उच्च पदों से तो वंचित रक्खा ही जाता था

उनका वेतन भी अंग्रेजों से बहुत कम होता था। एक हिन्दुस्तानी सूबेदार की इज्जत मामूली अंग्रेजी सिपाही से भी कम होती थी। उसे फौज की महत्वपूर्ण बातों की जानकारी भी नहीं होने दी जाती थी। हिन्दुस्तानी सैनिकों को अंग्रेजी अफसरों के कठोर नियंत्रण मे रहना पड़ता था।

भारत मे अंग्रेजों की इस नीति और व्यवहार के फलस्वरूप भारतीय जनता तथा सरकारी कर्मचारियों मे अन्दर ही अन्दर विद्रोह की भावना जड़ पकड़ने लगी। लोगों में यह आम भावना थी कि 'अंग्रेजी सत्ता का नाश हो। सर्जान माल्कम ने एक स्थान पर लिखा है कि "जब कभी हमारी सैना की हार होती थी या कुछ सिपाही बलवा कर बैठते थे तब देश मे गश्ती चिट्ठी बंटती थी। उनमे लिखा होता था कि "अंग्रेज नीच जाति के लोग है, वे बड़े अत्याचारी है, हमारी दौलत लूटने, हमारा धर्म नष्ट करने और हमे पतित बनाने के लिए भारत में आए है।" सिपाहियों से यह भी अपील की जाती थी कि "अंग्रेज अत्याचारियों की तादाद बहुत कम है उन्हें मार डालिए।"

सन १८५७ की क्रान्ति से पूर्व भी अंग्रेजों के विरुद्ध कई स्थानों पर आग सुलग रही थी और अंग्रेज उसे पूरी शक्ति दबा रहे थे। कलकत्ते के समीप बैरकपुर की फौजी छावनी मे विद्रोह हुआ। बरहामपुर की फौजी छावनी मे भी हिन्दुस्तानी

सिपाहियों ने परेड पर जाने से इन्कार कर दिया। डमडम तथा अम्बाला छावनी में भी विद्रोह के भाव प्रगट किए गए, परन्तु हर जगह उन्हें बल प्रयोग द्वारा दबा दिया गया। सन् १८५७ ई० की क्रान्ति भारत की स्वाधीनता के लिए प्रथम सामुहिक तथा संगठित प्रयास था। जिसे अंग्रेजों ने ग़दर और सिपाही-विद्रोह का नाम दिया, और उसी बात को साठ सत्तर वर्ष तक हमारे बच्चों से दुहरवाया गया। इस क्रान्ति के नेताओं में नानाफड़नवीस (धूं धुं पन्त) तांतिया टोपी, अजीमुल्लाखां, महारानी लक्ष्मीबाई, अहमदशाह तथा कुंवरसिंह थे। अन्तिम मुग़ल सम्राट बहादुरशाह 'ज़फ़र' ने हिन्दू मुसलमानों के नाम निम्न लिखित जोश भरी अपील निकाली थी।...

"ऐ हिन्दुस्तान के फ़र्ज़न्दो! अगर हम इरादा करलें तो बात की बात में दुश्मन का ख़ात्मा कर सकते हैं! हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानो उठो, भाइयो, उठो! ख़ुदा ने जितनी बरकतें इन्सान को अता की हैं उनमे सब से क़ीमती बरकत आज़ादी की है। ख़ुदा ने हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों में अंग्रेज़ों को अपने मुल्क से बाहर निकालने की ख्वाहिश पैदा कर दी है।"

इस महान क्रान्ति के नेताओं ने सैनिक दृष्टि से भी अच्छा क्षेत्र तैयार कर लिया था। विद्रोह को प्रारम्भ करने का अवसर उन कारतूसों द्वारा प्राप्त हुआ जिनमें गाय सूअर की चर्बी लगी होना बताया गया था। इन नए कारतूसों को प्रयोग में

लाते समय सैनिकों को मुंह से लगाना पड़ता था। इस विद्रोह का मेरठ से एक विशेष सम्बन्ध है। क्योंकि विदेशी दासता की जंजीरों को तोड़ने के लिए मेरठ के सैनिकों ने सर्व प्रथम पग बढ़ाया था। इस १८५७ ई० की क्रान्ति की असफलता भी मेरठ के ही सर मंढी गई क्योंकि यहां के सैनिकों ने योजना से १ दिन पूर्व ही विद्रोह आरम्भ कर दिया था।

१० मई सन १८५७ ई० को यह प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध मेरठ छावनी के हिन्दुस्तानी सैनिकों ने भीषण विद्रोह करके आरम्भ किया। उन्होंने अपने गोरे अफ़सरों को मार डाला, बंगलों में आग लगाकर उन्हें लूट लिया। छावनी के तमाम गोरे मार डाले गए, कुछ भाग गए। जनता भी सेना के साथ मिल गई। मेरठ के बाद यह लोग दिल्ली आए और वहां की सेना से मिल गए अंग्रेजों को दिल्ली से निकाल कर उस पर अधिकार कर लिया। बहादुरशाह 'ज़फ़र' अन्तिम मुग़ल सम्राट को फिर से भारत का सम्राट घोषित कर दिया गया। दिल्ली के हथियार खाने से छैः लाख कारतूस बीस हज़ार बन्दूकें, दस हज़ार बारूद के पीपे भारतीय सिपाहियों के हाथ लगे। दिल्ली पर विद्रोहियों के अधिकार हो जाने का समाचार बिजली की तरह सारे देश में फैल गया। कानपुर विद्रोहियों का गढ़ था। वहां अग्रेजों को ढूंढ ढूंढ कर क़त्ल किया गया। लखनऊ, इलाहाबाद, बरेली बदायू, शाहजहांपुर, मुरादाबाद तथा संयुक्त प्रान्त के अन्य भागों मे बृटिश शासन समाप्त कर दिया गया। मध्य-भारत

तथा बिहार में भी विद्रोह की आग भड़की। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने खुल कर विद्रोह किया और वीरता पूर्वक अंग्रेजों से युद्ध करते करते स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान हो गई। कुंवरसिंह भी अंग्रेजी सेना से युद्ध करते करते स्वर्ग सिधारे। कहते हैं कि तांतिया टोपी, अपने एक मित्र द्वारा धोखा दिए जाने पर मारे गए। स्वर्गीय महादेव देसाई (गांधी जी के सैक्रेटरी) ने लिखा है कि वह भिलवाड़े की पहाड़ियों में २०००० अंग्रेजों को मार कर १५ दिन बाद हार गये और ८००० फौज में से केवल ५ आदमी बचे। ३ सामन्त और एक चचेरा भाई। तीनों सामन्तों को विदा करके दोनों भाइयों ने अमरूद के पेड़ में अपनी धोती से फासी लगा ली। नाना साहब ४७ दिन तक सूरत के जंगलों में घास फूंस खा कर निर्वाह करते रहे उसके बाद उनका कोई पता नहीं चला। पंजाब मद्रास तथा बम्बई प्रान्त में विद्रोह तेजी से न फैल सका और ना ही वहां के लोगों ने पूरी तरह विद्रोहियों का साथ दिया।

अंग्रजी फौजों ने पंजाबी फौजों की सहायता से दिल्ली पर अधिकार कर लिया और वे इस क्रान्ति को दबाने में सफल हो गये। सन १८५९ के पूर्व ही यह विद्रोह शान्त कर दिया गया। मई सन १८५७ से दिसम्बर १८५८ तक अंग्रेज सैनिकों और उनके हिमायतियों ने जो रक्त-पात किया उसका हाल पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सहायता पाते ही जनता चारों ओर गोली से उड़ाई जाने लगी। कानपुर के समीप 'विठूर' नामक स्थान पर जो कि नाना साहब का निवास स्थान था, हल चलवा

दिए गये। और नाना फड़नवीस (धूं धूं पन्त) की इकलौती बेटी 'मैना' को जिन्दा आग में जला दिया गया अन्तिम मुग़ल सम्राट बहादुरशाह ज़फ़र के पुत्रों को क़त्ल करवा दिया गया और अंग्रेज फ़ौजी अधिकारी हडसन ने एक शहज़ादे को स्वयं क़त्ल करके उसका खून पिया। औरबाद में आठ दिन तक उनकी लाशें कोतवाली मे पीपल के नीचे पड़ी रहीं! "बादशाह ज़फ़र को उसके शहज़ादों के सर भेंट किए गए। अन्त में बादशाह जफर पर मुकदमा चलाकर उसे भारत से बाहर रंगून में नजरबन्द कर दिया गया। और बहादुर शाह को एक बग्घी मे कलकत्ता ले गये। देहली से कलकत्ते तक हर तीसरे पेड़ पर एक हिन्दुस्तानी की लाश ग्रांड ट्रंक रोड (बड़ी सड़क) पर भयवाद फैलाने के लिये टांगी हुईं थीं।

एक अंग्रेज ने लिखा है कि सड़कों के चौराहों और बाजारों मे जो लाशे लटकी हुई थीं उनको उतार कर ढोने में सूर्योदय से सूर्यास्त तक, मुर्दे ढोने वाली आठ आठ गाड़ियां बराबर तीन महीने तक लगी रहीं। एक ही स्थान पर इस प्रकार ६००० आदमियों को झटपट खत्म करके परलोक भेज दिया गया। इलाहाबाद के पास स्टीमर पर चढ़ कर अंग्रेजों ने गंगा के दोनों तरफ दूर दूर तक के गांव जला डाले। कानपुर और इलाहाबाद के बीच 'जनरल हैवलाक' और 'रिनाड' की सेनाओं ने नावों पर चढ़कर निर्दोष स्त्री पुरुषों का शिकार खेला। बहुत से भारतीय सैनिकों को तोप के मुंह पर बांधकर उड़ा दिया गया। सर जान ने लिखा है कि "बूढ़ी औरतों और बच्चों का भी

उसी तरह वध किया गया जिस तरह उन लोगों का जो कि विप्लव के दोषी थे। उन्हें सोच समझ कर फांसी नहीं दी गई बल्कि उन्हें उनके गांव के अन्दर जला कर मार डाला गया।…”

दिल्ली की एक दो नहीं हजारों ऐसी दर्दनाक घटनाएं हैं जिन से पता चलता है कि अंग्रेज उस समय मनुष्यता से कितनी दूर हट गया था। हस्पतालों में पड़े बीमारों को निर्दयता पूर्वक क़त्ल किया गया। 'लार्डरॉबर्ट' ने दिल्ली के बाजारों का विवरण देते हुए लिखा है कि दिल्ली मे इस अधिकता से लोग मारे कि बाजार लाशों से पटे पड़े थे।”

इस स्वतंत्रता संग्राम में भी देशद्रोहियों ने अंग्रेजों का साथ दिया और उन्हीं की सहायता से अंग्रेज फिर ६० वर्ष तक भारत में अपने पैर जमा सके। विद्रोहियों के दिल्ली पर अधिकार कर लेने पर एक बार तो ऐसा मालूम होने लगा था कि अब किसी भी प्रकार भारत में अंग्रेजी राज नहीं ठहर सकता। किन्तु परिणाम निराशाजनक रहा।

अप्रैल सन १८५७ ई० में एक बृजमोहन नामक सैनिक ने अपने साथियों से, मेरठ छावनी में चर्बी वाले कारतूसों के चलाने की बात कही। सैनिकों ने उसे गो-हत्या का दोषी ठहरायाऔर कुछ दिन बाद उसके घर को आग लगा दी गई।]

अप्रैल सन१८५७ की—एक संध्या—

स्थानः—मेरठ छावनी का विस्तृत मैदान

(कुछ सिपाही एक ओर बैठे बातें कर रहे हैं छोटी छोटी टोलियों में बिखरे हुए बहुत से हिन्दुस्तानी सैनिक मैदान मे मौजूद हैं। छै से अधिक बज चुके मालूम होते हैं। सख्त गरमी पड रही है। सैनिको के शरीरों से काफी पसीना निकल रहा है, मालूम होता है वे कोई शारीरिक परिश्रम करके चुके हैं। और उन्हें कुछ समय के लिए आराम करने का अवकाश दिया गया है।)

दाताराम—(दूसरे सैनिक के कन्धे पर हाथ रखते हुए) तो क्या यह बात बिल्कुल ठीक है?

मुन्शीसिंह—(गरदन हिलाकर) इस बात के विषय में तो मैं कुछ नहीं कह सकता। किन्तु मैं तो जब छुट्टी लेकर घर गया था तब कई ऐसी ही और बातों का पता चला था। जिनको सुनकर मेरा खून खौल उठा। मैं तो उसी दिन से सोच रहा हूं कि जितनी भी जल्दी इन फिरंगी लोगों को हमारे देश से निकाला जा सके उतना ही अच्छा हो।

(दाताराम मुन्शीसिंह का हाथ पकड़कर उठने का इशारा करता है

और दोनों अपने साथियों से कुछ हटकर जा बैठते हैं ताकि कोई और उनकी बातें न सुन सके।)

दाताराम—(धीरे से) ऐसी क्या बातें सुनी हैं तूने, मुन्शी ? जरा बता तो सही ? मैं किसी से न कहूंगा।

मुन्शीसिंह—(मुस्कराकर)-वाह ! तुम्हारा भी अगर मैं विश्वास न करूंगा तो किसका करूंगा ? (आभार मानते हुए) तुम्हारी कृपा से तो आज मैं फौज में हूं। खेती की जमीन तो साहूकार के हाथ कभी की बिक चुकी थी। जब लगान न पटा तो सरकार ने घर भी नीलाम कर दिया। तब तुम्हें ही तो चचा की हालत पर तरस आया और उनके कहते ही तुमने मुझे फौज में भरती करा दिया। अब भला तुम से क्या मैं कुछ छुपाव रख सकता हूं भइया दाताराम ?

दाताराम—(गर्व से) हां यूं तो तुझ पर भी मुझे पूरा विश्वास है। (बात बदल कर) क्या उस दिन वाली कानपुर की कोई बात मालूम हुई क्या ?

मुन्शीसिंह—नहीं और तो कोई ऐसी बात नहीं। मैं तो अपने गुरुजी की बात कह रहा था। उस दिन हमारे यहां सतनरायण का पूजन था। गुरुजी जब कथा पूरी कर चुके तब उन्होंने बाद में बहुत सी बातें बताई थीं।

दाताराम—(कौतुहल से) वे ही नानक मिस्सर थे क्या ? वे तो बड़े ज्ञानी हैं। उन्होंने क्या बातें बताई मुन्शी ?

मुन्शी—जब मैंने उन्हें दच्छिना के पांच पैसे और कुछ सामान

दिया तो वे कहने लगे कि जब से इन गोरों ने हमारे देश में पैर जमाए हैं तब से दिन दिन धरम की हानि हो रही है। 'किरस्टानी' धरम को फैला कर हमारे हिन्दू धरम को नष्ट करना चाहते है, ये गोरे ! वे कहते थे कि इन्होंने धरती माता की छाती पर रेल की लीक बिछानी शुरू करदी है। बड़े बड़े खम्बे जो गाड़े गए हैं इसमे भी इनकी कोई चाल मालूम होती है। उन्होंने यह भी कहा था कि ये गोरे किसी भी दिन सारे देश को फूंक सकते हैं, बिजली के जोर से। (गौर से दाताराम को देखता है)।

दाताराम—(सिर से इशारा करके) हां ! यह तो ठीक ही बात बताई है उन्होंने। इसीलिए तो गोरों को ही अफसर बनाया जाता है। हमारी छावनी के बड़े सूबेदार नत्थूसिंह कितने वीर हैं फिर भी उन्हें कप्तान नहीं बनाया गया। पहले कप्तान के 'रिटार' हो जाने पर एक गोरे 'मकडालन' को कप्तान बना दिया गया है। यह तो अन्याय ही है ना ?

मुन्शी—पूरा अन्याय है। (कुछ ठहर कर) गुरु जी कहते थे कि ये गोरे गंगा जी को भी तो बांध रहे हैं। कितना पाप है ! भला गंगा माई नास न कर देगी इनका।

(तीसरे सैनिक बृजमोहन का प्रवेश)

बृजमोहन—(दाताराम को लक्ष्य करके) नायक, कोई ख़ास बात कर रहे हो क्या ? मुन्शी आया है न देश से होकर !

दाताराम—(सटपटा कर) नहीं तो ! हां, आओ बृजमोहन बैठो, कहो क्या बात है ?

बृजमोहन—(झेंपते हुए) बात ही और क्या है नायक ! तुमसे कोई चोरी थोड़ा ही है और फिर मुन्शी भी कौन गैर है ? (कुछ ठहर कर) हमारी टुकड़ी को दिए गए थे वे कारतूस, जिनमें कहते हैं गाय की चर्बी लगी होती है। और जिन्हें दांतों से खोला जाता है।

मुन्शीसिंह—(शीघ्रता से) फिर ? इन्कार कर दिया होगा सबने ?

बृजमोहन:—(लज्जा से) ना भाई ! हमारे यहां तो किसी को भी इतनी हिम्मत नहीं हुई। जमादार ने पहले तो कुछ हुज्जत सी की भी थी, मगर जब कप्तान ने समझाया-बुझाया तो मान गए। हम लोग भी फिर क्या करते ?

मुन्शीसिंह:—(क्रोधपूर्ण मुद्रा में) करते क्या ? मरा नहीं गया तुम लोगों से ? तुम भी अपने आपको राजपूत कहते हो ? तुम तो गऊ हत्या के दोषी हो ! उस दिन तो गंगा जी की ओर हाथ उठाकर सौगन्ध खाई थी तुमने, कि चाहे जान चली जाए मगर वह कारतूस न बरतेंगे, अपना धर्म भ्रष्ट न होने देंगे। (कुछ देर बाद घृणा से) तुम जैसे क्रिस्टानों के बल पर ही यह सब पाप हो रहे हैं। सैंकड़ों गऊ माता के लाल काट दिये जाते हैं और ये गोरे राक्षस उनका भक्षण कर जाते हैं। तुम्हें गऊ माता की हत्या पर रोष क्यों नहीं आता, तुम्हारा खून क्यों नहीं खौलता ? मैं तो पानी भी नहीं पी सकता तुम्हारे हाथ का।

(एक क्षण बाद तेजी से खड़ा होकर घृणापूर्वक बृजमोहन पर

दृष्टि डालते हुए वहां से चल देता है । कुछ दूर बैठे हुए अन्य सैनिकों में बैठकर कहता है)

मुन्शीसिंह:—(सैनिकों को संबोधन करके) कुछ और भी सुना है तुम लोगों ने ?

एक सैनिक:—(धीरे से) ना भाई । बताओ ना, कोई नई बात है क्या ? उस दिन के तो अभी कई अठवारे हैं ।

मुन्शीसिंह:—(गम्भीरता से) नहीं यार, वह बात नहीं, एक और बात पता चली है अभी (बृजमोहन की ओर इशारा करके) उस चार नम्बर कम्पनी के बृजमोहन राजपूत को जानते हो न ? वह नीच कह रहा है 'नायक' से, कि उसने वह कारतूस चलाया है । उनकी कम्पनी को दिएगए थे वे कारतूस ।

दूसरा सैनिक:—(कौतुहल से) क्य उन्होंने मना नहीं किया ?

पहला सैनिक:—भाई तुम्हारी तरह सभी धरम करम को थोड़ा ही समझते हैं !

तीसरा सैनिक:—(क्रोध पूर्ण मुद्रा में) हम तो जान देकर भी उन कारतूसों को नहीं छू सकते । चाहे कुछ भी क्यों न हो । मरना तो एक ही बार है । धर्म खोकर जीने से तो मर जाना अच्छा है ।

पहला सैनिक—(धीरे से) नायक कह रहे थे कि धीरे-धीरे रुब को देना चाहते है ये गोरे नए कारतूस। मगर एकदम नहीं देंगे। (कुछ ठहर कर) बस ! एक महीना भी तो नहीं रहा है। (जोश से दात पीस कर) पता चल जायगा ! क्रस्तान बनाना चाहते हैं सब को ! धोके बाज कही के ! नीच !...गऊ माता की हत्या (घृणा से)

(कुछ देर ठहर कर)

जब धर्म ही जाता रहा तो जीना क्या ? एक दम ही, जब मेरठ, कानपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, दिल्ली, आगरा और बरेली में ज्वाला भड़केगी तब सब पता चल जायगा।...

मुन्शीसिंह—(बीच में रोक कर, दबी आवाज़ से) चुप रहो ! (उङ्गली से इशारा करके) देखो ! उधर से कप्तान का खान्सामा आ रहा मालूम होता है। (सब चुप हो जाते हैं)

(कुछ देर बाद)

पहला सैनिक:—(आशका प्रगट करते हुए) यह बृजमोहन भी गोरों का भेदिया मालूम देता है। था क्रस्तान हो गया है। नीच ! इसे हम अपने साथ नहीं रहने देंगे। राजपूत पल्टन को छोड़ कर चला जाय या गऊ हत्या के पाप का 'पराछित'* करे।

---

* प्रायश्चित

(उङ्गली हिला कर)

यदि चार दिन के भीतर-भीतर इसने अपना ढङ्ग नहीं बदला तो सौगन्ध है गङ्गा माई की, इसके घर बार को फूंक दूंगा। (जोश से) फिर चाहे मुझे फांसी ही क्यों ना हो जाए।

(इतने ही में बिगुल की आवाज़ सुनाई देती है। सारे सैनिक जल्दी-जल्दी खड़े होकर, कई पंक्तियों में चलने लगते हैं और आगे जा कर खड़े हो जाते हैं।)

(दूसरा दृश्य)

स्थान:—मेरठ छावनी की हिन्दुस्तानी अफ़सरों की बारकें।

समय:—सायंकाल के साढ़े चार बजे हैं।

१० मई १८५७—

(कल शाम को मेरठ छावनी में, बङ्गाल की तीसरी घुड़सवार सैना को परेड के समय आदेश दिया गया था कि वे नए कारतूसों का प्रयोग करें। उनके विषय में सैनिको ने सुन रक्खा था कि इनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई होती है, और इन्हें मुंह लगा कर खोलना पड़ता है। घुड़ सवार सैना ने सामुहिक रूप से, उन कारतूसों को इस्तैमाल करने से इन्कार कर दिया। अंग्रेज़ फ़ौजी अधिकारियों का माथा ठनका। और उन्होंने, इस विद्रोही भावना को कठोरता पूर्वक दबाने का निर्णय किया। उसी समय अंग्रेज़ी फ़ौज की सहायता

से घुड़सवार सैना के हथियार छीन लिये गये। सैनिकों का 'कोर्ट मार्शल' करके उन्हें दस-दस साल का कठोर कारावास का दण्ड सुना दिया गया। बङ्गाल घुड़ सवार सैना के सैनिकों को छावनी की जेलों में बन्द कर दिया गया। हिन्दुस्तानी सैना की अन्य टुकड़ियोंमें एक दम खलबली सी मच गई। हर एक के दिल में एक आतंक सा छा गया। उन्हें आशंका होने लगी कि अब तुम्हारे साथ भी यही वर्ताव होगा। गाय और सूअर की चर्वी मुंह में लगा कर धर्म भ्रष्ट करना, या कई वर्ष के लिये जेल में सड़ना—इन दोनों मे से एक मार्ग चुनना था हिन्दुस्तानी सैनिको को। उनकी इच्छा, मौजूदा परिस्थिति स छुटकारा पाने के लिए, एक दम कुछ कर गुजरने की हुई। उन्होंने अविलम्ब सशस्त्र विद्रोह करने का निर्णय किया। उन्होंने १० मई को प्रातःकाल ही निश्चय कर लिया, और शाम की परेड का समय विद्रोह आरम्भ करने के लिए नियत हुआ।)

(सूबेदार नत्थूसिंह अन्य भारतीय सैनिक अधिकारियों के साथ अपनी बारक में बैठे हैं। बाहर कई हिन्दुस्तानी फ़ौजी सतर्कता से पहरा दे रहे हैं। किसी गम्भीर समस्या पर विचार-विमर्श हो रहा है। सब के चेहरों पर घोर चिन्ता और क्रोध मिश्रित भाव साफ़ २ दिखाई दे रहे हैं।)

नत्थूसिंह:—(बात को जारी रखते हुए) अब कार्यवाही आरम्भ करने में ज्यादा देर नहीं है। आज प्रातःकाल जो निर्णय हम लोगों ने किया था उसी के अनुसार कार्य करना है,

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप सब लोगों ने योजना के अनु-
सार तैयारी करली होगी और अपने-अपने विभाग के
जवानों को आदेश दे दिये होंगे।

जमादार:—जी हां, वह तो सब कुछ सवेरे ही तय हो चुका था,
और उसी के अनुसार पैदल पल्टन के समस्त सैनिकों को
तैयार रहने और योजना के अनुसार कार्य करने का आदेश
दे दिया गया है। उन्हें यह भी समझा दिया गया है कि,
यदि अब हम लोगों ने बुज़्दिली दिखाई, तो हमारा भी
वही हाल होगा जो तीसरी बंगाल घुड़सवार सैना के, हमारे
और भाइयों का हुआ है। सैनिक मर मिटना पसन्द
करते हैं मगर वे दस-दस साल की सख्त क़ैद में सड़ना
या नए कारतूसों का इस्तैमाल करके अपने दीन-ईमान या
धर्म को नष्ट करना नहीं चाहते। हर हिन्दुस्तानी फ़ौजी
चाहे व हिन्दू हो या मुसलमान अपने धर्म पर डटा हुआ
है। हम में जब इतना इत्तफ़ाक़ और संगठन है तो फिर
हमे कौन हमारी मर्ज़ी के खिलाफ़ कोई काम करने पर
मजबूर कर सकता है। (एक व्यक्ति की ओर इशारा करके)
सूबेदार रामसिंह मेरे साथ थे, सैनिक पूरी तरह तैयार हैं।

रामसिंह:—(खड़े होकर) सैनिक, अंग्रेज अधिकारियों के रवैये
से बहुत बिगड़े हुएहै। देखिएना ! कप्तान 'मक्डानल'* को
एक दम कितना गुस्सा आ गया कुछ भी तो शान्ति या सम-

* मैक्डॉनल्ड

झाने की बात नहीं की उसने। (क्रोध से) सब पता चल जाना चाहिए, आज इन गोरे अफ़सरों को, कि हिन्दुस्तानियों को अब भेड़-बकरी समझ कर नहीं हांका जा सकता। और ना ही इनकी बेइज्जती करके इन पर राज किया जा सकता है। गऊ की चर्बी लगे कारतूस न बरतने पर दस-दस साल की सख्त कैद ? हमने शरीर बेचा है, अपना दीन ईमान नहीं बेचा । उन्होंने ये कारतूस इस्तैमाल करने से इन्कार करके वहुत अच्छा किया, अपना धर्म तो बचा लिया ! अब हमारी आंखे खुल जानी चाहिऐं और हमें फ़ौरन अपनी कार्रवाई करके गोरे अफ़सरों के घमण्ड को मिट्टी मे मिला देना चाहिए। (बैठता है)

एक मुसलमान अधिकारीः—(जोश से) आप किसी तरह का फ़िक्र न करें। हम भी जरूर अपना धरम-ईमान बचा लेंगे। (कुछ सोच कर) मगर उस रोज़ जो, वो घुड़ सवार घूम रहे थे, उन्होंने तो कहा था कि नाना साहब ने कल की तारीख़ मुक़र्रर की है। यानी अभी एक दिन और बाक़ी है। रोटियों में जो छुपी हुई चिट्ठियां बांटी गईं थी, उनमें भी कल की ही तारीख़ थी। देख लीजिए ! हम पर वहुत बड़ी जुम्मेदारी है, हमें हर तरफ़ ग़ौर करके कोई कदम उठाना चाहिए। क्यों कि यह क़दम उठाने के बाद किसी भी कीमत पर पीछे नहीं हटाना होगा। वैसे तैयारी हमारी आज भी मुकम्मिल है।

नत्थूसिंहः—(बैठे ही बैठे) अभी अभी हमारे गोलन्दाज, जुम्मन

खां ने जो बात कही है वह बिल्कुल दुरुस्त है। मगर हम क्या करें, मजबूर हैं। हालात इतने ख़राब हो गये हैं कि अगर हम आज ही इन फिरंगियों को साफ़ नहीं करेंगे तो फिर जेल में सड़ना पड़ेगा। और धीरे धीरे ये लोग सब का यही हाल करेंगे। हो सकता है कुछ बुज़्दिल लोग अपना धर्म भी गंवा बैठें। इसलिए एक दिन का और इन्तज़ार करने में बड़े ख़तरे है। यह भी मुमकिन है कि गोरों को हम पर शक हो जाय, या उन्हें क़िसी तरह भेद खुल जाय, और वे अपनी ताक़त बढ़ालें। इसलिए मेरी राय मे हमें अपने फ़ैसले में कोई तब्दीली नहीं करनी चाहिए और बिना किसी देर के अपना क़ाम पूरा करना चाहिए। क्या आप सब लोग इसके लिए पूरी तरह तैयार हैं?

बाक़ी सबः—(एक दम) हां; हम सब तैयार हैं ।

नत्थूसिंहः—रामसिंह ! क्या तुम्हारे जवानों ने सब काम ठीक कर रक्खा है ?

रामसिंहः—(हंसंसे) जी हां, सब काम ठीक है। मेरे आठ सौ हथियार बन्द जवान तय्यार हैं। हम सर्व प्रथम कर्नल 'फ़िनिक्स' और कप्तान 'मैक्डानल्ड' के बंगलों को आग लगा कर उन्हे गोली से उड़ा देंगे। दोनों बंगलों के पहरेदारों को भी अच्छी तरह समझा दिया गया है। वे हमारे पहुंचते ही, वहां तैनात अंग्रेज सिपाहियों और बौडी-गार्डों को घेर लेंगे। या गोली से उड़ा देंगे। एक टुकड़ी जेल पर

हमला करेगी। बाक़ी जवान गोरों की बारकों पर टूट पड़ेंगे।

नत्थूसिंह:—(दूसरी ओर देख कर) जमादार ! तुम बताओ ?

जमादार:—(दृढ़ता से) मेरी आप चिन्ता न करें। मेरे जवान तो तीन घण्टे से इन्तज़ार कर रहे हैं। बिगुल बजते ही मेरा दल जेल पर टूट पड़ेगा, और सूबेदार रामसिंह के सैनिकों की सहायता से जेल पर अधिकार करके, वहां से हिन्दुस्तानी सिपाहियों को निकाल लेगा। हम सब, फिर गोरों की बारकों पर आक्रमण करने वाले सैनिकों की सहायता करेंगे। जेल का कोई भी हिन्दुस्तानी पहरेदार मुकाबला नहीं करेगा, ऐसा प्रबन्ध कर लिया गया है।

नत्थूसिंह:—(अगले व्यक्ति को लक्ष्य करके) नायक दाताराम, तुमने क्या तैयारी की हैं, आज सवेरे से ?

दाताराम:—मेजर ! मेरा सब काम पूरा है। तोप ख़ाने पर कब्ज़ा करके कुछ सैनिक तहसील और कचहरी को घेर लेंगे, बाक़ी गोरों की ख़बर लेने के लिये बंगलों में घुस जायगे।

नत्थूसिंह:—(मन्द मुस्कान से) हबीबुल्लाह खां ! आप कहिये।

हबीबुल्लाखां :—(खड़े होकर) फ़ौज के माल-ख़ाने से एक कारतूस भी आपके हुक्म के बग़ैर कोई नहीं ले सकेगा। जमादार सुरजनसिंह और मैं, खुद अपनी २ टुकड़ियों की सहायता से उस पर क़ब्ज़ा कर लेंगे।

नत्थूसिंह :—(संतोष से) अच्छा तो बस अब थोड़ा ही समय बाक़ी है आप लोग फ़ौरन तय्यार हो जायं। बिगुल बजते ही (हाथ से चुटकी बजाता हुआ खड़ा हो जाता है और भी सब उठ कर बाहर निकल आते हैं)

(कुछ देर बाद)

(शाम की परेड का बिगुल बज रहा है। सैनिकों की टुकड़िया हथियारों से लैस, घबराई हुई सी, इधर उधर दौड़ रही हैं। आज हर काम में अव्यवस्था सी मालूम देती है। सैनिक परेड के मैदान में इकट्ठे होने की बजाय कुछ और करते दिखाई देते हैं।)

(एक तरफ़ भयानक गोली वर्षा हो रही है। तड़ तड़ की आवाजें बढ़ती जा रही हैं। एक टुकड़ी जिसमें दो सौ से कम जवान नहीं होंगे कप्तान के बङ्गले की ओर तेजी से बढ़ रही है। कर्नल के बंगले को भी घेर लिया मालूम होता है।)

(कुछ देर बाद)

(कप्तान, कर्नल और दूसरे गोरे अधिकारियो के बंगलों मे से आग की लपटें निकल रही हैं। स्त्री-बच्चो का करुण चीत्कार साफ़ सुनाई दे रहा है। एक सैनिक उधर से निकल कर दूसरे सैनिक को, दूर से ही, संबोधन करके कह रहा है)

पहला सैनिक :—(चिल्ला कर) कप्तान 'मैक्डानल' मार दिया गया ! करनल साहब सिसक रहे हैं !......

दूसरा सैनिक :—अरे ! तुम तो दाताराम नायक के साथ थे न ?

पहला सैनिक :—(खुश होकर) हां, हम लोग तो अपना काम पूरा भी कर चुके। जेल को तोड़ दिया गया। कल हमारे जिन भाइयों को, चर्बी वाले कारतूस बरतने से इन्कार करने पर दस दस साल का 'कोरट' हुआ था उन्हे छुड़ा लिया गया। (हर्ष से उछल कर) अब करेगी गंगा माई नाश, इन गोरों का ! चेत रही है काली माई !

(कुछ देर तक गोलिया चलती हुई सुनाई देती हैं। दूसरी ओर गोरे सैनिकों की बारकों पर भीषण आक्रमण किया गया है। सैकड़ों घायल और मुर्दा गोरे जमीन पर पड़े हैं।)

(दाताराम नायक एक फौजी टुकडी के साथ आते हुए दिखाई देते हैं। हाथ में बन्दूक ताने सूबेदार नत्थूसिंह का प्रवेश)

नत्थूसिंह :—(उत्सुकता से) दाताराम ! क्या खबर है ?

दाताराम :—(फौजी ढंग से अभिवादन करके) तमाम गोरे मार डाले गए। कुछ बाहर भागते हुए देखे गए, उनका भी पीछा किया जारहा है, उन्हें भी अब तक समाप्त कर दिया गया होगा। कचहरी और तहसील के क्षेत्रों को भी घेर लिया

गया। वहां के क्षेत्र में अभी लड़ाई हो रही है। हमारे सैनिक गोरों को चुन २ कर साफ कर रहे हैं।

(रामसिंह का प्रवेश)

रामसिंह :—(नत्थूसिंह को अभिवादन करता है) मेजर साहब ! छावनी का काम तो अब पूरा ही हुआ समझिए, जेल और माल खाने से तमाम हथियार निकाल लिये गये हैं। गोरों को पूरी तरह खत्म कर दिया गया है। कचहरी और तहसील का काम पूरा हो चुका। बाक़ी काम को जनता अपने आप पूरा कर लेगी। अब हम यहां से बिलकुल बेफिक्र हैं। अब क्या विचार है। पहली योजना के अनुसार ही चलना ठीक रहेगा।

नत्थूसिंह :—अब हमारे लिए यही उचित है कि जरूरी काम पूरा करके दिल्ली की ओर बढ़ा जाय।

रामसिंह:—मेरी भी यही राय है। क्यों कि अगर हम दिल्ली की ओर कूच करने में देर करते हैं, तो बहुत मुमकिन है कि दिल्ली की गोरा फ़ौज हम पर हमला करदे। क्यों कि आज के समाचार अवश्य ही कल सवेरे तक दिल्ली पहुंच जायंगे। हमे इतना मौका ही नहीं देना चाहिए कि दिल्ली के गोरे संभल सकें। हमे रातों-रात चलकर दिन निकलने से पहले ही दिल्ली पहुंच जाना चाहिए।

नत्थूसिंह:—(कुछ क्षण सोचकर) ऐसी सूरत में तो यही मुनासिब है कि हम अपनी घुड़सवार सैना को हथियारों से

लैस करके दिल्ली की ओर कूच करने का आदेश देदें ।
पैदल पल्टन भी धीरे धीरे चलनी शुरू हो जाय। दिल्ली के
सैनिक, हमारे वहां पहुंचने का समाचार पाते ही तैयार हो
जायगे और इशारा पाते ही गोरों के खिलाफ़ बग़ावत करने
से नहीं चूकेंगे। तुम्हारा क्या ख्याल है?

रामसिंह:—बिल्कुल ठीक है, मैं भी यही मुनासिब समझता हूं।

(कुछ क्षण के लिए दोनों चुपचाप चलने लगते हैं)

नत्थूसिंह:—मैं समस्त अधिकारियों को शीघ्र ही बुलाकर इस
विषय में सूचित किए देता हूं। तुम भी शीघ्र मेरे पास आने
की कोशिश करो। अनावश्यक कार्यवाही रुकवा कर
सैनिकों को तैयार होने का आदेश दे दो।

(चारों ओर से जय घोष सुनाई दे रहा है। कभी-कभी गोली
चलने की आवाज़ भी आजाती है)

(तीसरा दृश्य)

(एक सुसज्जित कमरे में नरेन्द्र मोहन वकील अपने मवक्किल कमलापति सान्याल से बातें कर रहे हैं। नरेन्द्र मोहन ५० से ऊपर हैं और एक माने हुए वकील हैं।)

कमलापति:—वकील साहब आप चाहे कुछ भी कहें, किन्तु इससे तो आपको भी इन्कार नहीं हो सकता कि कम्पनी के रवैये से आम हिन्दुस्तानी नाला हैं। कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जो इस समय परेशान न हो। मगर सब के मनों में ऐसा डर छा गया है, कि कोई भी इस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत नहीं कर करता।

नरेन्द्र मोहन:—हिम्मत? हिम्मत कौन करे! किसे अपनी जान प्यारी नहीं है। देखते नहीं, हिम्मत करने वालों की क्या दुर्गति हो रही है। कुछ दिन पहले ऐसा मालूम होता था कि अंग्रेज़ कम्पनी की हुकूमत लाज़मी तौर पर हिन्दुस्तान से ख़त्म हो जायगी। मगर अब फिर सुना जा रहा है कि

ग़दर दब गया। ठीक पता तो तभी चले जब ज़रा शान्ति हो।

कमलापतिः—मैंने तो कुछ दिन पहले सुना था कि अभी तक 'तांतिया टोपी' और 'झांसी की रानी' अंग्रेज़ों से लड़ रहे हैं। और यह भी सुना गया था कि दिल्ली पर अंग्रेज़ों ने अधिकार कर लिया है।

नरेन्द्र मोहनः—जिस दिन दिल्ली पर अधिकार हो जायगा, उस दिन तो बस सब कुछ ख़त्म ही समझो।

कमलापतिः—(कुछ सोचकर) फिर भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि राजा को प्रजा का हित भी देखना चाहिये। कम्पनी का जब से राज हुआ है, देश रोज़ बरोज़ कंगाल होता जा रहा है। तमाम देश पर आहिस्ता आहिस्ता क़ब्ज़ा करने की अंग्रेज़ों की चाल कितनी तेज़ी से पूर्ण होती जा रही है। अपने बंगाल का ही देखलो न, कितना बुरा हाल है। बड़ी-बड़ी जागीरें ख़त्म होती जा रही हैं। रोज़ नए-नए टेक्स देते देते और कम्पनी के अफ़सरों की लूट से, सभी तंग हो गये।

नरेन्द्र मोहनः—और तो और धर्म पर भी हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया। ईसाई और क्रिस्टानों का ही राज़ है। आज जो क्रिस्टानी धर्म में शामिल हुआ, कल उसे ही कोई न कोई बड़ा औहदा मिल जाता है।

कमलापतिः—इसीलिये तो फ़ौजें भी बाग़ी हो गई। यदि कहीं

मेरठ में, वक़्त से पहले फ़ौजों ने बग़ावत न की होती और पूरी तैयारी पर काम शुरू किया होता तो जल्दी कामयाबी मिलती। फिर भी दिल्ली और मेरठ के सैनिकों ने बहुत अच्छा संगठन बनाया था। तभी तो वे इतने बड़े हथियार-घर पर क़ब्जा करके अंग्रेजों को निकाल सके दिल्ली से। कानपुर में भी बहुत बहादुरी और हिम्मत से डटे रहे हिन्दुस्तानी सिपाही।

नरेन्द्र मोहनः—(अचम्भे मे) तुमने और भी कुछ सोचा ? देखो ! जो मरहठे और मुसलमान, पचासों वर्ष से, अपनी अपनी हुकूमत क़ायम करने के लिये, एक दूसरे से लड़ते आ रहे थे, अंग्रेजों के खिलाफ़ वे भी एक होकर लड़े। अंग्रेजों के लिये ये चीज़ आइन्दा भी अच्छी साबित नहीं होगी। ग़दर दबे या न दबे, किन्तु यह बात साफ़ है, कि आइन्दा यदि फिर कभी, कोई जंग अंग्रेजों के खिलाफ़ हुई, तो वह उसी सूरत मे कामयाब हो सकती है, जबकि बहादुरशाह 'ज़फ़र' और 'नाना फड़नवीस' की तरह हिन्दू और मुसल-मान मिलकर कार्रवाई करें।

कमलापतिः—हां, यह तो मार्के की बात कही है आपने। यदि अब किसी प्रकार यह आग दब भी गई, तो फिर कभी न कभी यह ज़रूर भड़केगी। सच तो यह है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी की लूट और उसके अधिकारियों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों के कारण, हिन्दुस्तानियों के दिलों में जो

बग़ावत की आग सुलगी है, उसने आपस के सब भेद भाव मिटा कर, इस ग़ुलामी के जुवे को उतार फैंकने की जुस्तज ने, सबको एक कर दिया है ।

(सुल्तान अहमद का प्रवेश)

सुल्तान अहमदः—'आदाब अर्ज़' वकील साहब !

[नरेन्द्र मोहन हैरत से सुल्तान अहमद की ओर देखते हैं, दोनो कुर्सी से खड़े हो जाते हैं। नरेन्द्र मोहन सुल्तान की ओर बढ़ कर]

नरेन्द्र मोहनः—(हंसते हुए) आदाब अर्ज़,तस्लीम ! (दोनों लिपट-कर मिलते हैं) ओ हो ! आप हैं । (हाथ पकड़ कर सुलतान अहमद को कुर्सी पर बिठाता है) कहो भाई सुल्तान ! मैं तो तुम्हें देखकर एक दम अचम्भे मे रह गया था । दिल्ली से कब आना हुआ ? वैसे तो सब खैरियत से हैं ?

सुल्तान अहमद ! (ठंडी सास छोड़कर) हां ! शुक्र है अल्लाह का बड़ी लम्बी चौड़ी दास्तान है, फ़ुर्सत में सुनाऊंगा । कई हफ्तों से चला हुआ हूं, आज अट्ठाईसवें दिन आकर पहुंचा हूं यहां दिल्ली से ।

कमलापति.—वैसे घर के सब आदमी कहां हैं ? तुम अकेले ह(आए हो क्या ?

सुल्तान अहमदः—नहीं ! अकेला तो नहीं आया । मगर और सब लोगों को अपने चचा जान के पास पटना छोड़ आया औरों मे है भी कौन ? छोटी लड़की, बड़ी अम्मा

और भाई ज़ान का एक गोदी का बच्चा ! या हमारा पुराना मुलाज़िम हैदर ।

नरेन्द्र मोहन:—और सब भी क्यों नहीं आए ? दिल्ली तो बड़ा खतरा होगा ?

सुल्तान अहमद:—और सब में से वालिद साहब, बड़े लड़के उस्मान, और बड़े भाई जमील को तो सरकार ने फाँसी लग वादी। उन बे गुनाहों को एक अंग्रेज़ मैम को मारने के झूठे इल्ज़ाम में, यह सज़ा दी गई। बीवी, बड़ी लड़की हमीदा, और छोटे लड़के को अंग्रेज़ सिपाही पकड़ कर ले गये, जिनका आज तक कुछ पता नहीं ! (आखो में आसू आते हैं) बेचारे न जाने कहां और किस तरह होंगे ? अल्लाह ताला अंग्रेज़ों का बेड़ा गर्क करेगा ! बे गुनाहों की आह, बरबाद कर देगी इनकी हुकूमत को ! (ठहर कर)

घर तो अंग्रेज़ी फौज ने पहले ही दिन लूट लिया था। जो कुछ हाथ लगा, और इन लोगों को बचा कर, अपने पुराने दोस्त, सीताराम साहब के यहां पनाह ली। अब कुछ अमन होने पर इधर आया हूं। चूंकि अब और भी छानबीन हो रही है, कहीं और किसी मुसीबत में न फंस-जाऊँ।

नरेन्द्र मोहन:—तब तो अंग्रेज़ों ने बड़े जुल्म किये हैं। सुना है बादशाह सलामत भी पकड़े गये, और दिल्ली पर अंग्रेज़ों ने क़ब्ज़ा कर लिया ? क्या यह सब दुरुस्त है ? (दोनों हाथ मेज़ पर रख कर कुछ झुक जाता है)

सुल्तान अहमदः—इतना ही नहीं, उनकी बेगमात की भी बड़ी बे हुर्मती की गई। देहली के बाशिन्दों को दोज़ख की जिन्दगी बसर करनी पड़ी।

निकिल्सन मर कर भी अंग्रेजों की फ़तह करवा गया।...

कमलापतिः—(बीच ही में टोक कर) सुल्तान-साहब! आखिर हिन्दुस्तानी फ़ौजों की हार के क्या कारण बने ?

सुल्तानः—अजी जनाब-क्या कहा जाए! खुदा को यही मन्जूर था। (कुछ सोचकर) मुझे तो हिन्दुस्तानियों की शिकिस्त की यही वजह मालूम दी कि हिन्दुस्तानी फौजे तो नाच-रंग के नशे में चूर रहीं, और दिल्ली-फतह की खुशी मे वे अपने फ़र्ज को पूरी तरह नहीं निभा सकीं। नाहीं उनमें अंग्रेजों जैसा ज़ब्त था। वैसे वो बहादुरी और जवां मर्दी में किसी से कम नहीं थीं। काले खां जैसा गोलन्दाज़ जिस फ़ौज में मौजूद हो, उसकी हार होना बद-किस्मती नहीं तो क्या है ?

नरेन्द्र मोहनः—(उत्सुकता से) क्यों जी! यह काले खां कौन था।

सुल्तान अहमदः—(गर्व से) काले खां हिन्दुस्तानी फ़ौज का मशहूर गोलन्दाज था। उसने कई लड़ाइयों में दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिखाये थे। उसकी तोप का निशाना इतना अचूक होता था, कि अंग्रेजी फौज के बड़े-बड़े मशहूर गोलन्दाज भी उससे पनाह मांगते थे। उसमें एक कमाल यह

था कि जो गोला अंग्रेजी तोपोंसे छोड़ा जाता था, कालेखां उसे अपनी तोप से गोला छोड़कर वापिस अंग्रेजी फौजों पर फैंक देता था। उसकी इसकमाल निशाने बाजीसे घबराकर अंग्रेजों ने काले खां की उंगलियों के लिये २ लाख का इनाम रक्खा था। ताकि काले खां गोला न छोड़ सके। उसी की वजह से कई रोज तक अंग्रेजी फौजें आगे बढ़ कर शहर की फसील तक न पहुंच सकीं। दिन रात गोले फैंकते फैंकते उसके हाथ लहू-लुहान हो गएथे। वह आखीर दम तक अपनी तोप पर डटा रहा। और कई रोज तक अंग्रेजी फौजों को नाकों चने चबाता रहा। उसके मरते ही हिन्दुस्तानी फौज के हौसले पस्त हो गए। फिर क्या था! सिर्फ छै हजार अंग्रेजी फौज ने कई गुना हिन्दुस्तानी फौज को हरा कर, शाही किले पर कब्जा कर लिया।

(कुछ देर रुक कर)

सुल्तानअहमद:—चन्द घण्टों के बाद ही आपका चांदनी चौक* खून से नहाने लगा। हिन्दू-मुसलमानों का कत्ले-आम शुरू हो गया। हजारों बे गुनाहों को गोली से उड़ा दिया गया या फांसी पर लटका दिया गया। कई गद्दार हिन्दुस्तानियों ने अंग्रेजों का साथ दिया।

नरेन्द्र मोहन:—बहादुर शाह कैसे पकड़े गये? (उत्सुकता से, उत्तर पाने की मुद्रा में)

---

* दिल्ली का सब से प्रसिद्ध बाजार

सुल्तान अहमदः—(दुखी हृदय से) बुड्ढे बादशाह का बुरा हाल था। उन्हें बहुत बेइज्जती से गिरफ्तार किया गया। बेगमों को बे-पर्दा करके उनकी बहुत बेहुर्मती की गई। (रुक जाता है, कुछ देर ठहर कर) ज़ालिमों को इसी पर तसल्ली नहीं हुई। दिल्ली के फ़ौजी अफ़सर 'हडसन' ने सरे बाज़ार शहज़ादों को क़त्ल करवा दिया। एक शहज़ादे को तो उसने अपने हाथ से कत्ल किया और उसके जिस्म से निकलते हुए खून की चुल्लु भर कर पी गया। उफ़ !! (गहरी सास खींच कर) फिर उसका सर एक थाल में सजाकर बादशाह सलामत को, बतौर तोहफ़ा, पेश किया गया। (ठहरकर) तोबा ! (सर पकड़ कर बैठ जाता है। नरेन्द्र मोहन और कमलापति की आंखों में आसू आते हैं।)

कमलापतिः—(आंसू पूंछ कर) कितने राक्षस हो गये हैं आज कल ये गोरे ! हे प्रभू !

सुल्तान अहमदः—(बात बदलकर) और दिल्ली ही क्या ? जब से पंजाबी और गुरखा फ़ौजों ने इन अंग्रेज़ों की मदद की है, तब से अम्बाला, दिल्ली, मेरठ, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, गवालियर, झांसी, यकेबाद-दीगरे, तमाम शहर अंग्रेजों ने फतह कर लिए। बुन्धेलखण्ड भी अंग्रेजों के कब्ज़े में आगया।

नरेन्द्र मोहनः—(चौंक कर) एँ, क्या कहा ! कानपुर-मेरठ भी ?

सुल्तानः—जी हां ! नाना फड़नवीस और तांतिया टोपी, कानपुर से

भाग कर, 'झांसी' 'गवालियर' होते हुए, अपनी पूरी ताक़त से अंग्रेजी फौजों का मुक़ाबला करते रहे। झांसी की रानी 'लक्ष्मी बाई' ने देश की आजादी के लिये, अपनी जान की बाजी लगादी। नाना की बेगुनाह इकलौती बेटी—'मैना'—को अंग्रेजों ने जिन्दा आग में जलवा दिया! 'बिठूर' में, नाना के महलों पर, हल चलवा दिये गये।

कानपुर, इलाहाबाद और दिल्ली के बाजारों में, सरे आम, पेड़ों और खम्बों पर, फांसियां लगा कर मारे गए, लोगों की लाशों के ढेर के ढेर दिखाई देते थे।

(सब चुप हो जाते है.)

गावों का भी बुरा हाल है। तहसीलदार साहब ने आंखों देखा हाल बताया था। वो कहते थे कि एक गांव को अंग्रेजी फौज ने घेर कर उसमें आग लगादी। कोई आदमी बाहर नहीं निकल सकता था। अगर कोई आदमी निकल कर भागने की कोशिश करता भी था, तो अंग्रेजी फौज के सिपाही उसे पकड़ कर फिर आग में झोंक देते थे। इस तरह उस गांव के हजारों बे गुनाह इन्सानों को जिन्दा जला दिया गया। और भी ऐसे जुल्म सैकड़ों जगह हुए बताए जाते हैं। आसानी से सोचा भी नहीं जा सकता कि इन्सान इतना वहशी हो सकता है! उफ! तोबा!

नरेन्द्र मोहन:—अफसोस! हमें तो असली खबरें तक भी नसीब नहीं होतीं। वहां तो पासा ही पलट गया। कुछ वैसे भी इन फिरंगियों की उड़ाई हुई खबरों पर कोई विश्वास नहीं

करता था। (ठंडी सांस छोड़ कर) हिन्दुस्तानियों ने जिस हिम्मत और बहादुरी से फिरंगियों को निकालने की कोशिश कीं, वे सब बेकार हो गईं। फिर भी हिन्दुस्तानी फौजों की यह दिलेरी भुलाई नहीं जा सकती। (गरदन हिलाते हुए) (कुछ सोच कर) हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता, अभी ईश्वर को स्वीकार मालूम नहीं होती। (सुल्तान को लक्ष्य करके) भाई सुल्तान! मेरा अटल विश्वास है कि, गुलामी के जुए को उतार फेंकने के लिये, हिन्दू मुसलमानों की यह क़ुर्बानियां, नव जंवानों का हंसते-हंसते फांसी पर झूलना, एक दिन अवश्य रंग लाकर रहेगा! आज नहीं तो कल; फिरंगियों को इस देश से जाना ही पड़ेगा। अब इस आग को, अधिक समय तक दबाया नहीं जा सकता।

(अजीतसिंह का प्रवेश)

अजीतसिंह:—(एकसूचना पत्र दिखाकर) वकील साहब, आपकी भविष्यवाणी सत्य निकली। मल्का विक्टोरिया का ऐलान हो गया, कि कम्पनी की हुकूमत ख़त्म की जाती है। अब 'मल्का' और पार्लिमैण्ट का राज होगा, क्यों कि कम्पनी ने हिन्दुस्तानियों को नाराज़ करके, अंग्रेजों का दुश्मन बना दिया था।

मल्का ने यह भी ऐलान किया है, डिप्टी साहब कहते थे, कि किसी के धर्म मे रुकावट नही डाली जायगी, सब के साथ इन्साफ़ का बर्ताव किया जायगा। सुना है कि सब

हिन्दू मुसलमान इस ऐलान से खुश हैं।

सुल्तान अहमद:—(गर्दन हिलाकर) यह सब इनकी बदमाशी है। चाहे कम्पनी हो, चाहे पार्लिमेण्ट, ये अंग्रेज़ सब हिन्दुस्तानियों को चूसने के लिये हैं। अब ज़रा देख भाल कर बदमाशी की जायगी! (लापरवाही से)

नरेन्द्र मोहन:—कुछ भी हो, 'हेस्टिंग्स' और क्लाइव जैसों की मक्कारियों को पार्लिमेन्ट के राज में नहीं चलने दिया जायगा। अब मन-माने जुल्म करते हुए घबरायेंगे भी ये लोग। (सुल्तान की ओर देखकर) ओह! हम तो बातों में ऐसे लगे कि कुछ ध्यान ही न रहा। चलो! (उठता है, और सुल्तान का हाथ पकड़ कर उठाता है) अन्दर चलो, आराम करके फिर करेंगे और बातें। तुम तो बड़े थक रहे होगे। (दोनों चलते हैं)

(कमलापति और अजीतसिंह बाहर चले आते हैं)

२
रंग
में
भंग

रंग में भंग

के

पात्र

स्थान:—नई सड़क दिल्ली

काल:—२३ दिसम्बर १६१२

सुधीर:—ला० किशोरीलाल का भतीजा।

किशोरीलाल:—एक साधारण व्योपारी, मामूली लिखा पढ़ा, आयु ४५ वर्ष के लगभग, शौक़ीन मिज़ाज, राजनीतिक वार्तालाप का अभ्यस्थ।

मोहनकिशन:—एक अंग्रेजी पढ़ा लिखा नवयुवक, किसी सरकारी दफ्तर में क्लर्क, प्रतिष्ठित वकील का भतीजा, किशोरीलाल का पड़ौसी आयु लगभग ३० वर्ष।

नत्थू:—किशोरीलाल का घरेलू नौकर।

२—रंग में भंग

[१८५७ की क्रान्ति से अंग्रेजों की आंखें खुल गई थी। इसके बाद समस्त देश को निःशस्त्र कर दिया गया और ऐसा मालूम होने लगा कि इस देश में अब अंग्रेजों का राज्य अटल हो गया है। किन्तु पाशविक-शक्ति के बल पर किसी राष्ट्र को कुछ समय के लिये दबोंचा भले ही जा सकता हो परन्तु उसे अधिक समय तक गुलाम बनाकर नही रक्खा जा सकता। फलतः अंग्रेजों ने ज्यों २ दमन किया देश मे त्यों त्यों अशान्ति की आग बढती गई।

सर्व प्रथम गुरु रामसिंह जी के नेतृत्व मे प्रसिद्ध कूका विप्लव कांड हुआ जिसमे ३८ व्यक्तियों को तोप से उड़ा दिया गया। इस बढ़ती हुई

अशान्ति को देखकर अंग्रेज, राज नीतिज्ञों का फिर माथा ठनका। उन्होंने सोचा कि इस ज्वालामुखी की भीषण आग को भयानक रूप धारण करने से पहले ही शान्त कर दिया जावे। अत. अंग्रेजों के द्वारा ही १८८५ में, राष्टीय कांग्रेस के जन्म लेने का यही मूल कारण था। किन्तु उस समय कॉंग्रेस की नरम नीति भी नवयुवकों के हृदय में धधकती हुई आग को शान्त न कर सकी। और विद्रोह की चिनगारिया इधर उधर सुलगने लगीं। मुसलमानी राज्य में भी मरहठों और सिक्खों ने कुछ समय तक स्वतन्त्रता की सास ली थी, अंग्रेज भी अधिक समय तक इन्हें न दबा सके, और समय पाकर विद्रोह की आग पहले इन्हीं मे भड़की।

१२ जून १८९७ में, शिवाजी राज्याभिषेक के अवसर पर एक मराठा नवयुवक ने, जो आगे चलकर लो० भगवान तिलक के नाम से प्रसिद्ध हुआ, भाषण करते हुए यह घोषणा की "भगवान ने भारत का राज्य क्या विदेशियों को ताम्र-पत्र पर लिख कर सौंप डाला है? भारतीय दण्ड विधान की चहार दीवारी से बाहर निकलो और भगवद्गीता के भव्य वायु मंडल में प्रवेश करके, महापुरुषों के कर्तव्यों पर विचार करो।"

इन्हीं दिनों पूना में प्लेग फैला। जिस घर में प्लेग का शुबा होता था, उन्हें सरकार जबर्दस्ती खाली करवा कर जलवा देती थी। मन्दिरों की भी तलाशी ली जाती थी। नतीजा यह हुआ कि लोगों में सरकार के विरुद्ध, इन अत्याचारों के कारण विद्रोही भाव जाग्रत होने लगे। महाराष्ट्रीय नवयुवकों, छपेकर बन्धुओं ने, प्लेग कमिश्नर मि० रैण्ड की हत्या कर डाली। १८५७ के बाद राजनीतिक उद्देश्यों से जान बूझकर की

जाने वाली, यह पहली हत्या थी। काठियावाड़ के श्याम जी कृष्ण वर्मा सिर्फ इसलिए लन्दन गये, कि वहां के भारतीयों को ऐसी शिक्षा दें कि वे भारत लौट कर देश में क्रान्ति करने के लिये देश को तैयार करें। ऐसे छात्रों में विनायक दामोदर सावरकर भी थे (हिन्दू महासभा के भू० पू० प्रधान)।

इधर बंगाल मे वारीन्द्र बाबू नव जवानों में क्रान्ति की आग सुलगा रहे थे। बंगाल के नवयुवकों में यह बात घर कर गई थी कि अंग्रेजी राज्य की बुनियाद धोखेबाजी और अत्याचार पर कायम है। उधर लार्ड कर्जन ने बंगाल को दो भागो मे बाटने की घोषणा की, (सन् १६०४ में)। सारे बंगाल मे इसके विरुद्ध 'वंग—भंग आन्दोलन' छिड़ा। फिर क्या था, बंगाल मे क्रान्तिकारी घटनाओं की बाढ़ सी आ गई। सन् १६०८ में खुदीराम बोस ने एक अंग्रेज जज की टम टम पर बम फैंका, जिसके अपराध मे उन्हें फासी दी गई। आपको पकड़ने वाले थानेदार को भी तीन महीने बाद क्रान्तिकारियो ने गोली से उड़ा दिया। रासबिहारी बोस और आरविन्दु घोष पूरी तत्परता से क्रान्तिकारियों का संगठन कर रहे थे। दिल्ली मे लाला हरदयाल विप्लव की आग सुलगा रहे थे।

भारत से बाहर स्याम, मलाया, चीन व अमरीका में मजदूरी करने वाले सिखों को भी महाराजा रणजीतसिंह की सन्तान और महारानी जिन्दा कौर के अपमान की बातें दिली चोट पहुंचाने लगीं। और अमरीका में ग़दर पार्टी की स्थापना हुई। सन् १६०१ से १६१२ तक बंगाल में १०० से अधिक क्रान्तिकारी काड हुए। सन् १६०८ में अलीपुर षड़यन्त्र केस चला, जिसकी पैरवी श्री सी० आर० दास ने की। इस

केस के इकबाली गवाह को जेल ही में गोली से उड़ा दिया गया। सरकारी वकील की अदालत से निकलते ही हत्या करदी गई। इस केस में २८ को आजन्म काले पानी की सजा हुई थी। इस केस की अपील मे देशबन्धु चितरंजनदास ने १८ दिन तक बहस की थी और अरविन्द घोष को साफ छुड़ा लिया था।"

अंग्रेजो द्वारा, देश को नैतिक तथा आर्थिक पतन की ओर अग्रसर करने के लिये, तरह तरह के हथखण्डों से काम लिया जाने लगा। आर्थिक शोषण चरम सीमा पर पहुँचा दिया गया। देश में अकालो का प्रकोप हुआ। किसान बुरी तरह पीड़ित थे। देश की तिजारत को धीरे धीरे विदेशियों ने हथिया लिया था। जिसका नतीजा यह हुआ कि लोगों में बढ़ती हुई अशान्ति खतरे की सीमा तक बड़ी तेजी से बढ़ती गई।

बंकिम बाबू के 'बन्दे मातरम' से सरकार बहुत डरने लगी थी। और उस पर लगाए गये प्रतिबन्ध को तोड़कर नवयुवक बहुत जोश से उसे गाते थे। बहुतो को इसे गाने के अपराध में ही बहुत त्याग करना पड़ा।

एक तरफ क्रान्तिकारियो के दल अंग्रेजी सरकार के कर्मचारियों को बमबाजी से आतंकित करके भारत से विदेशी सरकार को समाप्त करने की चेष्टा कर रहे थे। और कुछ देश भक्त क्रान्तिकारी देश-विदेश में इस प्रकार का प्रयत्न कर रहे थे कि भारत में शसस्त्र क्रान्ति द्वारा अंग्रेजी सरकार का अन्त कर दिया जाय।

दूसरी तरफ काग्रेस में "भिक्षां देहि" की जगह स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' सुनाई देने लगा भगवान् लोकमान्य तिलक, ला० लाजपतराय तथा विपिन चन्द्रपाल की उग्रपन्थी शाखा का जन्म हुआ। काग्रेस ने सर्व प्रथम १९०६ में कलकत्ता काग्रेस के अवसर पर दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में, ब्रिटिस सरकार से 'स्वराज्य' की माग की। सन् १९०८ में लोकमान्य तिलक को राज्य-द्रोह के अपराध मे छै साल की सजा देकर माडले भेज दिया गया।

यूं तो सन् १८८८ मे ही सर सैयद अहमद ने मुसलमानों को काग्रेससे अलग होने की सलाह दी थी। किन्तु सन् १९०९ के 'मिन्टो-मार्ले सुधार' द्वारा भारत मे साम्प्रदायिक आधार पर निर्वाचन द्वारा एक घातक चाल चली गई, जिसके परिणाम स्वरूप, बङ्गाल ही नही बल्कि समस्त भारत आज दो भागों मे बंटा हुआ है। इसी समय से निरन्तर अंग्रेजी सरकार की यह चेष्टा रही कि, हिन्दू मुसलमानो को आपस में भिड़ा कर अपना उल्लू सीधा करती रहे। गाधी जी उस समय तक अफ्रीका में थे।

नवयुवकों का आंदोलन पूरे वेग से जारी था। सन १९११ में कलकत्ते की बजाय देहली को राजधानी बनाया गया। उसी समय दिल्ली दरबार के अवसर पर बङ्गाल को एक स्वतन्त्र प्रान्त बनाने की घोषणा की गई। शायद अंग्रेजी सरकार को यह महसूस हुआ कि यह सारा उत्पात बङ्ग भंग के कारण हो रहा है। किन्तु देश में फिर भी शान्ति स्थापित न हुई और राजनैतिक डाकों और हत्याओं का सिलसिला जारी रहा। उन्हीं दिनों बारीसाल षड्यन्त्र-केस ४१ अभियुक्तों

पर चलाया गया, जिनके विरुद्ध १४ डकैतियों का अभियोग था।]

(१३ दिसम्बर १६१२ को चादनीचौक दिल्ली में, उस समय के वायसराय 'लार्ड हार्डिङ्ग पर बम फैंका गया। जिसके अभियोग में १४ अभियुक्तों पर 'षड़यन्त्र केस' चलाया गया और मास्टर अमीरचन्द जी, अवधविहारी तथा बालमुकन्द विश्वास फासी पर लटकाए गये।)

१३ दिसम्बर सन १६१२—समय—शाम के पांच बजे।

(नई सड़क, दिल्ली की एक तंग गली में, जहा से सड़क काफी दूर है, ला० किशोरीलाल का मकान। ला० जी, चुस्त पाजामा, बन्द गले का लम्बा कोट और 'फैल्ट कैप' पहने हाथ में छड़ी लिये कही बाहर जाने के लिये तैयार हैं। मकान बहुत बड़ा है जिसके बीच में थोड़ी सी फुलवाडी भी है।)

ला० किशोरीलाल:—(ऊपर को देख कर) अरे नत्थू! अबे ओ नत्थू। (जोर से चिल्लाते हैं) अरे वहां तो फिर लाट साहब की सवारी निकल जायगी। मरता क्यों नहीं। जल्दी से······पान में इलाइची भी डलया लाइयो···। (जेब में से सुनहरी जजीर वाली घड़ी निकाल कर देखता है)

(ऊपर से किसी की घबराई हुई आवाज़ आती है) आया जी!···अच्छा जी···आया···।

(सेठ जी चौक में खड़े २, अपनी बैंत को धीरे २ घुमाते हुए कुछ गुनगुनाते हैं, और दरवाजे की ओर बढ़ना शुरू करते हैं। किसी के जीने से उतरने की आवाज होती है।)

(उसी समय नगे सर, नंगे पैर, एक १६-२० वर्ष के नवयुवक सुधीर का प्रवेश। मुंह पर पसीना आ रहा है। हापते २ चारों तरफ देखता है। ला०. किशोरीलाल को बिना देखे ही- अन्दर आ कर)

सुधीरः—(भर्राई हुई आवाज़ मे) लाला जी!......रंग में भंग... दरवाज़ा बन्द... करो! फौरन...वरना...मारे...जायं...गे बब' ब...म बम... बम (मुंह से बोल नहीं निकलता, कांप रहा है)

किशोरीलालः—(घबराकर, अचम्भे में) सुधीर ! क्या बात है (कन्धे पर हाथ रखकर) अरे कुछ बात भी है ? लगाई है बम-बम, (घृणा से) बड़ा महादेव का भगत बनता है !

सुधीर कांप रहा है)

किशोरीलालः—यहां महादेव का मन्दिर थोड़ा ही है, बम-बम की जगह मन्दिर मे है। दुनिया लाठ साहब की सवारी देख रही है, यह बम-बम रट रहा है। (सुधीर की ओर ध्यान स देखकर) अरे, तू आखिर इतना कांप क्यों रहा है ? तुझे आज हो क्या गया है ? (सुधीर बार बार दरवाजे की ओर देखता है) मैंने तुझे कुछ कहा थोड़ा ही है ? (दयापूर्ण भाव से) सच बता क्या बात है !

सुधीरः—(बहुत डरते हुए) ला ...ला......जी..., बम (आखें फाड़ते हुए कापता है) लाट सा ह...ब...ब...म...गो...ला (कुछ होश मे) दरवाज़ा बन्द ...(दरवाजे की ओर संकेत

करता है।)

(किशोरी लाल सुधीर को चौक में पड़े एक बैंच पर अपने साथ बिठाते हुए) अरे अहमक कुछ कहता भी है? तू शान्ति से बैठ, भागा आ रहा मालूम होता है। थोड़ी देर आराम करले। (सुधीर भौचक्का होकर चारों तरफ देखते हुए काप रहा है)

किशोरीलाल:—(सुधीर की कमर पर हाथ रख कर) आखिर तू इतना काप क्यों रहा है, क्या सर्दी लग रही है? (सुधीर गर्दन हिलाता है) तो आखिर कोई बात भी है?

(नौकर ऊपर से आकर पीछे खड़ा हो जाता है, सुधीर को इस दशा में देखकर)

नौकर:—लाला जी, बड़ी बहू जी कह रही हैं कि घण्टा घर की तरफ से आप जायें तो, दुकान से छोटे मुन्ने को जरूर साथ लेते जावें वह भी सवारी देख लेगा। और सेठ जी

किशोरीलाल:—(गुस्से में) बस, सुन लिया, अबे पहले इसकी तो देख क्या हालत है, ? सवारी तो पीछे ही देखी जायगी?

(सुधीर से) सुद्धो! बेटा क्या बात है?

सुधीर:—(कुछ ठहर कर) लाला जी, दरवाजा बन्द कराइए! मैं बाजार से आ रहा हूं। लाट·· साहब (घबराते हुए) पर···किसी ने···बम···का गोला' फेक कर·· मा ' रा ·· हा···थी—भागा·····। भगदड़ मची हुई है। लाट साहब 'तो शायद ही ' बचे ···· हों। सब तरफ फौज ही फौज

दिखाई देती थी।

(ला० किशोरीलाल एक दम सन्न रह जाते हैं। घबराहट में उन्हें कुछ नहीं सूझता आखें फटी जाती हैं। सुधीर की ओर मुंह खोले हैरत से देख रहे हैं।)

किशोरीलाल:—एँ ·····क्या कहा···बम···? क्या किसी बगाली ने फैंका था ?

सुधीर:—न मालूम कौन था । मेरे···पीछे ··सिपाही भागे ! गोली चल गई ! अन्धाधुन्ध लोग पकड़े जा रहे हैं। न जाने क्या होने वाला है ! (आखें बन्द करके चुप हो जाता है, अभी तक सास जल्दी ,जल्दी ले रहा है)

किशोरीलाल :—(घबरा कर खड़े होते हुए) अरे ! कोई फाटक बन्द करो। नत्थू··· (पीछे मुड़कर) अरे नत्थू ! जल्दी से बाहर की पौली बन्द करके आ । (उसी समय गली मे लोगो के दौड़ने की आवाज और शोर गुल सुनाई देता है)

(नत्थू दरवाजे की तरफ दौड़ता है! किशोरीलाल डर से इधर उधर घूमने लगता है। जल्दी जल्दी चक्कर लगाता है। दरवाजे पर किशोरीलाल के पड़ौसी मोहन, किशन, उसे अन्दर आते हुए मिलते हैं)

मोहन:—(चौक मे घुसते हुए) कहिये लाला किशोरी लाल जी ! हमारे चाचा जी ठीक कहते थे न ? तुम तो उनसे नाराज हो गए थे। अब बताओ ! तुम्हारी अंग्रेजी सरकार का

मुस्तकबिल तुम्हें कैसा दिखाई देता है ?

किशोरी:—(हसने की कोशिश करते हुए) मोहन किशन ! तुम कब दुकान से आए, देखो तो सही ये सुधीर कितना डर रहा है ? (प्रश्नात्मक मुद्रा में) क्या वाक़ई लाट साहब पे किसी ने बम फैंक दिया ?

मोहन:—(बे परवाही से) अच्छा हुआ, तुम नहीं गये ! मैं तो वहीं था, अभी अभी तो आ रहा हूं। वो तो मेरे साथ राय-बहादुर थे वरना बचता थोड़े ही ? किसी ने ऊपर से बम फैंका था। और मज़ा तो यह देखो (अचम्भे में) कि फैंकने वाले तक का पता नहीं चला, और ना ही यह मालूम हो सका कि बम किधर से आया।

(किशोरीलाल मोहन के साथ-साथ सामने दालान में बिछे कालीन पर बैठ जाते हैं। नत्थू को हुक्के की तरफ उंगली का इशारा करते हैं)

किशोरी:—अभी अभी गली में शोर सा सुनाई दिया था, वह क्या था ?

मोहन:—(हंसते हुए) शोर ? भई सारे शहर में शोर मचा हुआ है। यह गली में मकान है, कुछ पता नहीं चलता ! बाहर निकलो तो मज़ा आजाय। (ठहर कर) जब बम फटा, तो एक दम सब चौंक पड़े, चारों तरफ़ दहशत छा गई, सब को अपनी अपनी जान की फ़िक्र पड़ने लगी। लाट साहब भी ज़ख्मी हो गये। पुलिस, एक दम, चारों तरफ़ पागलों की

तरह दौड़ने लगी। मगर क्या होता था। जुलूस तितर बितर हो गया। लोग भागने लगे। न जाने सरकार कितनों पर मुसीबत ढायेगी। देखो, क्या होता है ? अब जरा पता चलेगा! ये बंगाली बड़े पक्के है अपनी धुन के।

किशोरीलाल:—क्या कह सकते हैं! अजी सरकार सबको जेलों मे ठूंस देगी, गोलियों से उड़वा देगी।

मोहन:—ला० किशोरी लाल! जब लाट साहब तक को इन लोगों ने नहीं छोड़ा, तब इन्हे किसका डर है। । सुना है यह आज का बम भी किसी बंगाली ने ही मारा है। उस दिन हमारे चचा कहते थे, कि आज कल दिल्ली मे बम पार्टी के कई आदमी आए हुए है। किसी 'रासबिहारी बोस' के आने की गुप्त बात का भी उन्हे पता चल गया था। (धीरे से) ये एक-एक अंग्रेज को चुन कर मार डालेगे। डर तो इन्हे किसी का है ही नहीं।

(नत्थू चिलम भर कर लाता है और वहीं खड़ा होकर उनकी बातें सुनने की कोशिश करता है ।)

किशोरीलाल:—(नौकर की ओर गुस्से से देखकर) तू क्यों खड़ा है, सुधीर से कहदे, कि ऊपर जाकर कुछ खा-पीले ।

(नौकर डरता हुआ चला जाता है)

किशोरीलाल:—(हुक्के की नली पकड़ कर, कश लगाते हुए) भई! ये अंग्रेज भी बड़े होशियार है। कुछ भी हो, इनके राज मे वैसे तो बड़ी शान्ति है। किसी तरह का डर भय

नहीं, चाहे बाजार में सोना उछालते हुए चले जाओ। और फिर सरकार इन बम-बाजों से डरती भी कहां है ?

मोहनः—(गरदन मटका कर) तुम्हें ही शान्ति दिखाई देती है ! देखते नहीं हो ! जब से ये बंगाली बिगड़े हैं, और सरकार खिलाफ 'बम बाजी शुरू की है, तब से ये फिरंगी इनसे कितना डरने लगे हैं। यही वजह है कि भारत की राजधानी कलकत्ते के बजाय दिल्ली बनाई गई है। मगर इन्होंने यहां भी इनका पीछा नहीं छोड़ा। बंगाल में तो सैकड़ों लोग बम-पार्टी मे होने के शुबे में पकड़े जा चुके। तुमने शायद नहीं सुना कि अभी तीन चार साल हुए जब किसी खुदी राम बोस नाम के एक लड़के को इस अपराध में फांसी लगाई गई थी कि उसने एक जज की टम टम पर बम फैंका था।

किशोरीः—(हैरत में) क्या कहा ? लड़के ने ? बड़ी हिम्मत की उसने ?

मोहनः—इतना ही नहीं ! उस १७ साल के लड़के को जब फांसी पर लटकाया गया, तो कहते हैं कि वह बड़ा खुश था, और उसके हाथ मे 'गीता' थी। एक मदनलाल धींगड़ा नामी युवक ने तो 'लन्दन' तके मे इसी अपराध में एक अंग्रेज* की हत्या करदी कि वह हमारे देश की बुराई करता था।

---

*प्रसिद्ध भारत विरोधी सर कर्जन वाइली।

(कुछ ठहर कर)

अंग्रेजों की चाल को अब हमारे देश के नव जवान तक समझने लगे हैं। अंग्रेजों की हुकूमत का असली मक़सद यही है कि हिन्दुस्तानियों को जूते के ज़ोर से ग़ुलाम बनाए रक्खे। और यहां से जो कुछ हाथ लगे लूटकर विलायत ले जाएं। (घृणा से) यहां तो चन्द टुकड़ खोरों को, नौकरी और खितावों के टुकड़े डाल कर राज कर रहे हैं ये लोग ! और वही लोग चाहते भी अंग्रेजो की हुकूमत कायम रहे।

किशोरीलाल:—(माथे में सलवट डालकर, अचम्भे में) मुझे तो हैरत इस बात की है, कि फ़ौज पुलिस और हर तरह का इन्तज़ाम होते हुए भी, इन लोगों को किस तरह ऐसे ख़तरनाक काम करने की हिम्मत हो जाती है। क्या इन लोगों को अपनी जान की परवाह नहीं होती ? (मोहन की ओर देखता रह जाता है)

मोहन:— जान की परवाह ? तुम जान को लिये फिरते हो ! (ठहर कर) जब से कर्जन लाट ने बंगाल को दो टुकड़ों में बांटने की चाल चली थी, तब से बंगाली की मक्कारी को अच्छी तरह समझने लगे हैं। बड़े बड़े घर के लड़कों ने टोलियां बनाली है, जो देश से अंग्रेजों की हुकूमत खत्म करने का बीड़ा उठाये हुए हैं। ये देश-भक्ती के सामने अपनी जान की परवाह नहीं करते। वे

कहते हैं कि हमारी कुर्बानियों से अगर देश में अपना राज कायम हो जाता है, तो देश के करोड़ों भाई बहिनों को रोटी-कपड़ा मिलने लगेगा। आखिर वे भी तो किसी माई के लाल ही हैं, जो देश के लिए अपनी जान तक न्यौछावर करने में नहीं हिचकते ? मुसलमानों के विरुद्ध भी तो शिवा जी तथा महाराणा प्रताप जैसे देश भक्तों ने, वीरता-पूर्ण लड़ाइयां लड़ीं थी। उन्हें ही क्या आराम था ? सिर्फ देश भक्ति की एक भावना ही तो थी, एक यही धुन ही तो थी कि विदेशी हम पर शासन क्यों करें ? यही विचार आज इन लोगों में हैं ।

किशोरीलाल:—(मुस्करा कर) मगर ये अंग्रेज़ भी 'आठों गांठ-कुम्मेत' हैं। इस तरह, इन छोकरों से डर कर, हिन्दुस्तान की हुकूमत छोड़ कर चले जायें, यह तो मुझे मुमकिन मालूम नहीं होता ? सिर्फ इतनी बात है, कि इस तरह वेचारे बेकुसूर लोग जरूर मुसीबत में पड़ जाते हैं। अगर बम फैंकने वाले का पता न चला, तो पुलिस तो किसी और को झूठा इल्जाम लगाकर पकड़ लेगी। आखिर इस तरह के कामों से अंग्रेज़ का क्या बिगड़ा ? (कुछ ठहर कर)

फिर हमारे पास कोई फौज नहीं, हथियार नहीं ! ऐसे किस तरह अंग्रेजों का राज खत्म हो सकता है। यूं तो और सख्ती ही करेगी 'गवरमिन्ट'।

मोहन:—(शान्ति से) ला० किशोरीलाल ! शायद तुमने यह समझा होगा, कि सिर्फ कुछ नौजवान छोकरे ही हैं; जो इधर उधेर वम वाजी करके हुकूमत को उखाड़ना चाहते हैं ? सो वात नहीं है। आज कल वड़ी गहरी राजनीति से काम लिया जा रहा है। सिर्फ बंगाल ही नहीं सारे देश में आग लगी हुई है, जो कि अन्दर ही अन्दर सुलग रही है। अपनी दिल्ली के ला० हरदयाल को तो तुम जानते हो न ? कितने काविल आदमी हैं। वे भी अन्दर ही अन्दर इसी प्रचार मे है। पच्चीस-तीस साल से एक ऐसी सभा बनी हुई है, जिसमें सारे देश के खास खास आदमी शामिल हैं। वह अब तो खुल्लम खुल्ला कहने लगी है, कि सरकार में हिन्दुस्तानियों को हक मिलना चाहिये, ऊंचे ओहदे भी हिन्दुस्तानियों को मिलने चाहिये। इस तरह के भारी टैक्स भी कम होने चाहिये। क्या कोई दस वीस साल पहले इस तरह की बातें कह सकता था ? कि देश हमारा है, और हमे ही उस पर हुकूमत करने का अधिकार है (कुछ ठहर कर)

पंजाब के ला० लाजपतराय, लो० तिलक महाराज दादा भाई नौरोजी, मुहम्मद अली जिन्ना, सुरेन्द्र वेनरजी, गोखले, और मालवी जी जैसे पचासों वकील वैरिस्टर उसमें शामिल है। इस प्रकार, आज कल तमाम वड़े वड़े हिन्दू, मुसलमान पारसी, ईसाई जाति के लोग, एक होकर काम कर रहे

हैं, ये मामूली बात नहीं है। अंग्रेज भी, जो इन्साफ पसन्द हैं, इनमें मिले हुए हैं।

(किशोरीलाल बहुत ग़ौर से मोहन की बातें सुन रहा है,)

मोहनः—(समझाते हुए) जब किसी देश के समझदार पढ़े लिखे आदमी, इस प्रकार सरकार के खिलाफ होने लगते हैं, तो किसी बिदेशी सरकार का टिकना मुश्किल हो जाता है।

फिर यदि सरकार इन लोगों से डरती नहीं है तो उसने तिलक महाराज को ब्रह्म देश में क्यों भेज दिया? लाजपतराय और दूसरे नेताओं को भी जेल की सजाऐं क्यों दीं? तुम तो बम की बात कहते हो, तिलक महाराज को तो अखबार छापने पर ही सजा मिल चुकी है। उनके अखबार को पढ़ कर बहुत-से लोग सरकार की पोल समझने लगे हैं। (ठहरता है)

किशोरीलालः—बम पार्टी का नेता तो कोई बंगाली सुना जाता है। शायद उसी का नाम है 'बोस'?

मोहनः—(लापरवाही से) अजी, इनमें न जाने कितने बोस हैं। अब तो औरों को भी बम बनाना सिखा दिया है, इन बंगालियों ने। अभी तो कुछ दिन पहले सुना था कि बृन्दावन के राजा को भी सरकार ने, इस पार्टी में होने के शुबे में, गद्दी से उतार दिया है।

किशोरीः—(अचम्भे में) अच्छा! राजा लोग भी इनके साथ

मिलने लगे ? तब तो शायद ये कुछ कर सकें। मगर राजाओं पर इतनी फौज कहा से आई। सरकार के पास तो काली गोरी, कई तरह की फौजें हैं। और फिर अंग्रेज़ लड़ते भी तो खूब है उनसे तो वैसे ही डर लगता है (डर की मुद्रा में)

मोहन:—(घृणा से) तो लाला, तुम जैसे बुजदिल ही तो सब नहीं है। ग़दर में भी तो ऐसी ही फौजें थीं। मगर जब वक्त आया तो उन्हीं देसी फौजों ने, दिल्ली पर कब्जा कर लिया। तभी से तो इन पूर्वियों और बंगालियों को फौज मे भरती नहीं करती सरकार, डरती है। (कुछ ठहर कर)

अब फिर वैसी ही कोशिश कर रहे हैं ये लोग। उसी दिन तो चचा कह रहे थे, कि ये लोग ऐसे देश द्रोहियों को भी खत्म कर देते हैं, जो इनके विरुद्ध अंग्रेजी सरकार की मदद करते हैं, या किसी मुकदमे मे इनके विरुद्ध गवाही देते है।

किशोर—ओ हो ! तब तो बड़े बड़े काम कर रहे है ये लोग। मगर ये बाते गवर्नमेंट किसी को मालूम नहीं होने देती।

(मोहन बीच मे टोककर)

मोहन:—अजी साहब, मालूम होने देने से उसकी कमजोरी ज़ाहिर होती है। ये हिन्दुस्तानी अखबार छापने पर इसलिये तो पाबन्दी लग जाती हैं। तिलक महाराज को इसीलिये तो रोकती है सरकार, अखबार छापने से, वो इनकी पोल जो खोल देते है। उन्होंने तो खुल्लम खुल्ला कहना शुरू कर

दिया है कि "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"। और भी एक बात की तरफ़ तुमने ध्यान किया ?' (उंगली उठाकर) .

किशोरीः—किस बात की तरफ़ ? मैं नहीं समझा ?

मोहनः—अंग्रेज़ की नस पकड़ली है इन लोगों ने।

किशोरीः—(अनभिज्ञता प्रकट करते हुए) कैसी नस ?

मोहनः—(हंसतेहुए) तभी तो कहता हूं कि अभी तुम्हें देश का कुछ पता नहीं। तुम तो व्यापारी हो फिर भी नहीं समझते ?

किशोरीः—(झेंपते हुए) मेरे ध्यान में नहीं आई वह बात, शायद तुम्हारे बताने से समझ सकूं।

मोहनः—(मुस्करा कर) यह तो तुम जानते ही हो कि यह गोरे पक्के व्यौपारी हैं। और व्यौपार के लिये ही ये लोग हमारे देश में आए थे। आहिस्ता आहिस्ता इन्होंने सारे देश पर ही कब्ज़ा कर लिया।

किशोरीः—(सिर हिलाकर) हां, यह तो बिलकुल ठीक बात है। हैं तो ये पक्के बनिये। (उंगली उठाकर) सरकार कोई भी वह काम नहीं करती, जिसमें उसे घाटा रहे।

मोहनः—बस ! अब इन लोगों ने, जो अपने मुल्क से अंग्रेज़ों को निकालने की कोशिश कर रहे हैं, एक बड़ी अजीब बात सोची है।

किशोरीः—वह क्या ?

मोहनः—वह यह, कि इनकी विलायत से आने वाली किसी भी

चीज को कोई हिन्दुस्तानी इस्तैमाल न करे। और बंगाल में तो कई साल से, बंगालियों ने, विलायती माल लेना बन्द कर दिया है। जिसकी वजह से विलायत के व्यौपारियों को करोड़ों रुपये का नुक्सान भुगतना पड़ रहा है। इस बात को सरकार भी नहीं रोक सकती! हमारी मर्जी, हम नहीं इस्तेमास करते विलायती माल! हम तो देसी चीज खरीदेंगे। (ठहर कर)

यह चीज ऐसी है कि सांप मरे न लाठी टूटे। हुकूमत, व्यौपार के ज़रिये, करोड़ों रुपया कमाने के ही लिये तो है। जब व्यौपार ही न रहेगा तो फिर उन्हें फ़ायदा क्या, कि अपना घर बार छोड़कर, हजारों कोस दूर, हमारे देश में पड़े रहें-और यहां बम खा खा कर मरें।

(ठहर कर)

समझे? क्या चाल चली है इन अंग्रेजी पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानियों ने? उसी से डर कर तो सरकार ने बंगाल के टुकड़े करने की बात रद्द कर दी। और बंगालियों की बात मानने पर मजबूर होना पड़ा। दूसरी तरफ़ बंगालियों ने बम-बाजी शुरू कर रक्खी है (हाथ आगे निकाल कर) जान हथेली पर लिये फिरते है ये लोग!

किशोरीलाल:—बड़ी छाती है इन लोगों की। (कुछ ठहर कर) धन्य है ये लोग! जो अपने देश के लिये इतना त्याग करते, और इस प्रकार के कष्ट झेलते हुए भी सरकार से नहीं डरते।

मुझे तो इनकी बातें सुन सुन कर ही डर लगने लगता है।
(भय की मुद्रा में)

मोहनः—(जोश में) तो क्या सारी दुनियां तुम्हारी ही तरह हो जाय। इन्हें अपने देश को आजाद कराते की धुन है। तुम्हें तो पता नहीं कि सरकार क्या क्या मक्कारी चलती है? ये अंग्रेजी पढ़े लिखे ही इन अंग्रेजों की चालों को समझ सकते हैं। मुझे तो ऐसा मालूम देता है कि यदि सरकार ने हिन्दुस्तानियों को कुछ अधिकार नहीं दिये तो लोग फिर विद्रोह कर देंगे।

(उसी समय एक दूसरे मकान से आवाज आती है)

किशोरी लाल! ·· ऐ किशोरी लाल····· !

किशोरीलालः—(चौंक कर) जी····· हां लाला जी। (उठकर बाहर आता है)

(फिर आवाज):—'अरे मोहन तुम्हारे यहां है क्या? हो तो भेजियो'।

किशोरीः—अच्छा जी! यहीं है अभी भेजता हूं, (मोहन के पास आकर) तुम्हारे चचा जी बुला रहे हैं। खिड़की से वही तो बोल रहे थे।

किशोरीः—(सटपटा कर) हो! मुझे बहुत देर हो गई (उठते हुए) अच्छा जाता हूं।

किशोरीः—अच्छा—
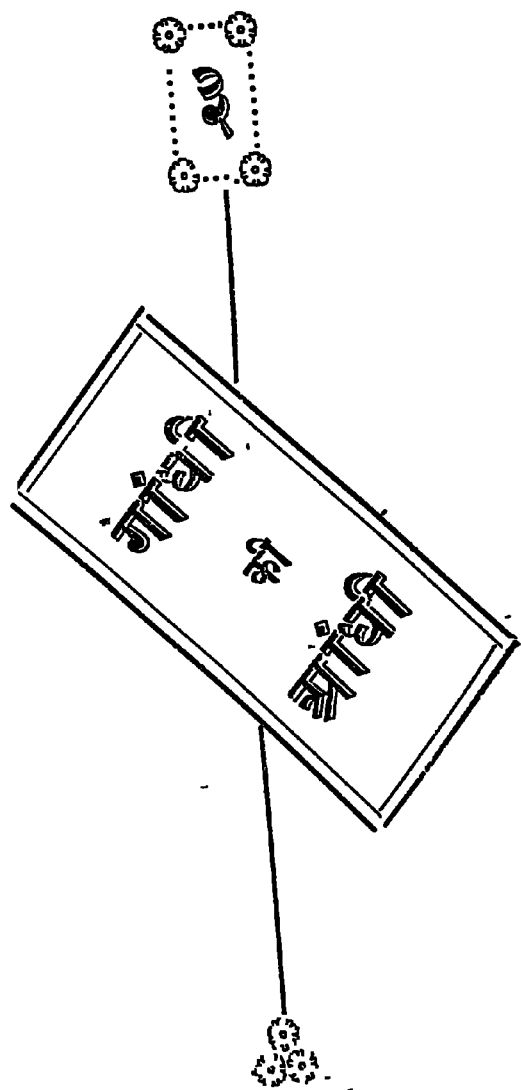
गाँधी की आँधी

के

पात्र

सुरेन्द्रः—दसवीं कक्षा का छात्र, राष्ट्रीय कार्यकर्ता, आयु १७ वर्ष।

श्यामगोपालः—किसी सरकारी दफ्तर में हैड क्लर्क, आयु ४८ के लगभग। नगर के विख्यात सरकार परस्त व्यक्ति, सुरेन्द्र के पिता।

चिन्तामणिः—नगर के प्रतिष्ठित डाक्टर। राष्ट्रीय विचारों के लिए प्रसिद्ध। नगर सभा का सदस्य और श्याम गोपाल का सहपाठी मित्र।

वेलीराम—श्याम गोपाल के दफ्तर का चपरासी जो दफ्तर के समय के पश्चात घर पर काम करता है, और वहीं रहता है। श्याम गोपाल का विश्वस्नीय पुराना नौकर।

विद्यालय के कई छात्र—श्यामगोपाल का छोटा बच्चा हरी, (हरिगोपाल) तथा बड़ा बच्चा आदि २।

गाँधी की आँधी

[भारत की स्वाधीनता के लिये दो विचार धाराएं समानान्तर चल रही थी। एक ओर 'राष्ट्रीय कांग्रेस' वैधानिक उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने के प्रयत्न में थी। दूसरी ओर सशस्त्र क्रान्ति की चिनगारियाँ सुलग रही थीं। बहुत से मनचले भारतीय, विदेशों में जा कर भी भारत की स्वतन्त्रता के सक्रिय प्रयन्त कर रहे थे। अधिक मजदूरी के प्रलोभन से बहुत से हिन्दुस्तानी बर्मा स्याम तथा चीन होते हुए अमरीका पहुँच चुके थे। वहां 'गदर पार्टी' की स्थापना की गई। इस पार्टी का काम भारतीयों को सशस्त्र क्रान्ति के लिए तैयार करना था। इस पर ब्रिटिश सरकार के जोर देने से अमरीकी सरकार ने लाला हरदयाल को गिरफ्तार कर लिया। पार्टी ने कई हजार डालर जमानत जमा करके, उन्हें छुड़ा लिया। वे स्विटजरलैण्ड आ गये। ज़मानत तो ज़ब्त हो गई किन्तु ला०

हरदयाल की जान बच गई। बाबा गुरुदत्तसिंह, कनाडा का एक 'कोमा-गाता मारू' जहाज़ किराए पर लेकर बहुत से सिखों के साथ, कलकत्ते से कनाडा गए। कनाडा सरकार से तटवर्ती तोपें 'गामागातामारो' की ओर घुमादीं, और उन वीर सिखो को नहीं उतरने दिया गया। जहाज फिर भारत लौटा बजबज बन्दरगाह पर गोरे सशस्त्र सिपाही खडे थे। अधिकारियों ने यात्रियो को वहा न उतरने का आदेश दिया। अपने देश में भी अपना यह अपमान बहा-दुर सिख बर्दाश्त न कर सके। वे बन्दरगाह पर उतरे। बन्दूकें आग उगलने लगी। लाश पर लाश गिरने लगीं, यात्री उतरते ही गए। कुछ मरे कुछ घायल हुए और कुछ क्रान्ति की आग प्रज्वलित करने के लिए, भाग निकले।

इस काड से क्षुब्ध होकर गदर पार्टी ने स्वाधीनता संग्राम छेड़ने का निश्चय कर लिया। यह वह समय था जब कि जर्मनी ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध घोषणा करदी थी। एक हजार नव-युवकों ने अपनी सेवाएं अर्पित कीं। पहले जत्थे को लेकर जिसमे १०० वीर थे, तोशामारू जहाज भारत के लिए रवाना हुआ। इस बीच शंघाई, बैंकाक, सिंगापुर व बर्मा के भारतियों में भी स्वाधीनता की आग भड़क चुकी थी। तोशामारू कलकत्ते पहुंचा २६ अक्टूबर १९१४ को। पहले की तरह इसे भी पुलिस ने घेर लिया, फिर भी कुछ लोग आख बचाकर निकल भागे। पजाब मे इनका जाल सा बिछ गया।

इन लोगो की पुलिस से मुठभेड़ हुई। दोनों ओर से गोलिया चलीं। पं० काशीराम आदि सात व्यक्ति पकड़े गए और उन्हें फासी की सजा हुई। श्री रासबिहारी बोस तथा सचीन्द्रनाथ सान्याल ने 'गदर पार्टी' के

लोगों से मिलकर, २१ फरवरी १९१५ को देशव्यापी विद्रोह की योजना बनाली थी। ऐसी व्यवस्था करली गई थी, कि नियत तिथि पर, हिन्दुस्तानी सैनिक गोरे सैनिको का कत्ले आम करके छावनियों पर अधिकार जमा लेंगे, और नागरिक शासन भी अपने हाथ मे ले लेंगे। रेल तार आदि को अस्त व्यस्त कर देने की योजना भी बन चुकी थी। राष्ट्रीय झण्डे के साथ साथ घोषणा पत्र भी तैयार किया जा चुका था। किन्तु कृपालसिंह नामी एक व्यक्ति ने, जो कि पार्टी में शामिल था, सारा भेद खोल दिया। सरकार ने छावनियों के शस्त्रागारों पर, भारतीयों की जगह गोरे सैनिकों को नियुक्त कर दिया। निशस्त्र हिन्दुस्तानी सेना कुछ न कर सकीं।

सन् १८५७ के बाद ऐसी व्यापक योजना कभी नहीं बनी थी। इस योजना का भेद खुलने पर सरकार ने व्यापक तलाशिया लीं और गिरफ्तारिया कीं। षड्यन्त्र के ९ मुकदमे चलाए। इनमें ६१ आदमी थे। जिनमे भाई परमानन्द सरदार करतारसिंह और पिंगले मुख्य थे। १३ दिसम्बर सन् १९१६ को २४ को फासी और अनेको को काले पानी की सजा दी गई। दूसरे षड्यन्त्र केस में ७४ अभियुक्तों पर मुकद्मा चलाकर ५ को फासी और ४२ को काले पानी का दंड दिया गया। तीसरे केस मे ४ को फांसी हुई। छावनियों में फौजी अदालतों के हुक्म से अनेकों को गोली का निशाना बनाया गया। फिर भी विप्लव की आग बुझी नहीं।

जर्मनी के साथ मिलकर देश में विद्रोह करने की योजनाएं बनाई गईं। राजा महेन्द्रप्रताप जर्मनी गए और जहाजो द्वारा शस्त्रास्त्र मंगाए गए। बंगालियों की भी सैना और पुलिस के साथ सशस्त्र मुठभेडें हुईं।

गोहाटी और बालासौर को पहाड़ियों और जंगलो में तो बाकायदा युद्ध हुए। लगातार सात सात दिन तक सेना ने क्रान्तिकारियों का पीछा किया। इसी बीच सिंगापुर की सैना मे विद्रोह कराया गया, और सात दिन तक भारतीय सैनाओं की हुकूमत रही। अन्त में रूसी और जापानी सैनाओ की सहायता से यह विद्रोह दबाया गया। बर्मा मे भी षड्यन्त्र केस चला। पञ्जाब और बङ्गाल में भी, कई विप्लववादी नेताओं को फासी दे दी गई, काले पानी भेज दिया गया या गोली से उड़ा दिया गया। इस प्रकार सन् १९१४—१८ तक क्रान्ति की तैयारिया की गई किन्तु वे सफल न हो सकीं।

आग भीतर ही भीतर सुलग रही थी। उसके दबाने के लिए 'रोलट एक्ट' बनाया गया। और प्रसिद्ध जलिया वाला हत्याकाड हुआ। यह कैसे आश्चर्य की बात है कि इस 'जलियावाला-हत्याकाड' के गर्भ से अहिंसावादी 'गांधी-युग' का प्रादुर्भाव हुआ।

(सन् १९१४ में योरुप में प्रथम महायुद्ध छिड़ गया। इसमें भारत ने ब्रिटेन को भरपूर सहायता दी। वर्षों से देश के राष्ट्रीय नेता राजनैतिक अधिकारो की माग कर रहे थे। उन्होंने यह भलीभाति अनुभव कर लिया था, कि अब कुछ ऊंची सरकारी नौकरियों और पदों से उस समय तक कुछ लाभ नहीं जब तक कि सत्ता भारतियो के हाथ मे न हो। यदि कुछ ऊंची नौकरिया या पद मिल भी गए तो वे अपमान का कारण बनेंगे। लोकमान्य तिलक और श्रीमती 'एनीबीसेंएट' ने बड़े जोरो के साथ 'होमरूल' आन्दोलन चलाया। उनकी माग थी कि भारत का शासन भारतीयो द्वारा हो, और उन्हें स्वराज्य का अधि-

ओर दिया जाए। अंग्रेजी माल का बहिष्कार, स्वदेशी प्रचार तथा राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार, आन्दोलन के मुख्य कार्यक्रम थे। इसी समय दक्षिणी अफ्रीका से लौटकर महात्मा गांधी सर्व प्रथम भारत के सार्वजनिक जीवन मे उतरे। आन्दोलन बड़े वेग से चला। स्त्रियो और बच्चों ने भी इस आन्दोलन मे खूब भाग लिया। बड़े-बड़े नेता नजरबन्द कर दिए गये। उन्हें छुड़ाने के लिए सत्याग्रह की योजना बनाई जाने लगी। हालत को अधिक बिगड़ता देखकर सरकार ने 'मान्टेगू-चेम्सफोर्ड-शासन सुधार' योजना पास की। जिसे कांग्रेस ने बहुत असन्तोषजनक बताया।'

यूरोपीय महायुद्ध के समाप्त होते ही सरकार ने भारत की नई जागृति तथा राष्ट्रीयता को कुचल डालने का विचार किया। करोड़ों भारतवासियो के घोर विरोध की परवाह न कर 'रौलट एक्ट' नामी काले कानून पास कर दिए। महात्मा गाधी ने इसके विरोध मे सत्याग्रह आन्दोलन जारी किया। गाधी जी समस्त देश का दौरा करने निकल पड़े। ६ अप्रैल सन् १६१६ को समस्त देश मे हड़ताल रक्खी गई, उपवास किए गये, और जगह-जगह सभाएं करके, इन कानूनों के विरोध मे प्रस्ताव पास किए गए। लोगों मे बड़ा जोश था। ठीक ऐसे ही समय महात्मा गाधी के पञ्जाब प्रवेश पर रोक लगा दी गई। उन्होंने इस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया। उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। फिर क्या था, जनता मे बडी उत्तेजना फैल गई। कई स्थानों पर दगे होगए। अमृतसर मे नेताओं को धोके से बंगले पर बुलाकर, जिला मजिस्ट्रेट ने, उन्हें किसी अज्ञात स्थान को भेज दिया।

जनता मे इस काड से खलबली मच गई। एक झुण्ड नेताओ का पता लगाने बङ्गले की ओर चला। उस पर सैनिकों ने रास्ते में ही गोली वर्षा कर दी। कई व्यक्ति हताहत हुए। मृतकों का जुलूस निकाला गया। बड़ी उत्तेजना फैल गई। क्षुब्ध भीड़ ने ५ अंग्रेजो को मार डाला। और कई इमारतों को जलाकर भस्म कर दिया। १३ अप्रैल को बीस हजार स्त्री-पुरुषों की जलियावाले बाग मे एक सभा हुई। जब सभा हो रही थी, तब जनरल डायर १०० भारतीय तथा ५० गोरे सिपाही लेकर वहा पहुचा, और बिना किसी सूचना के निहत्थी जनता पर गोलिया चलाने की आज्ञा दे दी। जबतक सब कारतूस समाप्त नहीं हो गए गोलिया चलती रहीं। सरकारी बयान के अनुसार इस दुर्घटना में ४०० व्यक्ति मरे तथा दो हजार घायल हुए। ५० को फासी दी गई और ४६ को काले पानी की सजा हुई।

महात्मा गाधी को इस दुर्घटना से महान् दुःख हुआ। आपने प्रायश्चित-रूप से तीन दिन का उपवास किया। सन् १६२० की कलकत्ता काग्रेस ने ला० लाजपतराय की अध्यक्षता में असहयोग की नीति को स्वीकार किया। उन्हीं दिनो, तुर्की के खलीफा के कैद हो जाने से मुसलमानों में बहुत असन्तोष फैल रहा था। इसी अवसर पर महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन इतने वेग से चलाया कि ब्रिटिश शासन की नींव हिल गई। आन्दोलन को दबाने के लिए सरकार ने कठोर नीति अपनाई। हजारों काग्रेसी हिन्दू-मुसलमान जेलों में ठूस दिए गये। जनता, पुलिस की लाठी और गोली की कुछ परवाह नहीं

करती थी। बहुत जोश उमड़ा हुआ था। हिन्दू-मुसलमानों का ऐसा सङ्गठन फिर देखने को नहीं मिला। हजारों ने सरकारी नौकरियों को लात मार दी। छात्रों ने विद्यालय त्याग दिए। विदेशी माल और कपड़ा घरों से निकाल-निकाल कर फूंका जाने लगा। वकील और बैरिस्टरों ने वकालत छोड़कर बापू की फौज में भरती हो, देश सेवा करने का व्रत लिया।

विश्व की निगाह भारत की ओर खिंच गई। सत्य और अहिंसा को राजनीति में प्रयुक्त करने का अनोखा ढंग गांधी जी ने दुनिया के सामने रक्खा। 'चरखा कातो-खादी पहनो' का वरदान देकर वे अंग्रेजी साम्राज्य'शाही को भारत से समाप्त करने का व्रत लिए मैदान में आए। एक तरफ निहत्थी असहाय जनता थी, तथा दूसरी ओर विश्व की शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य शाही अपनी फौज पुलिस

दूसरे गोलाबारूद, से तैयार थी। सब से अद्भुत बात यह थी कि सत्याग्रही गांधी अपने विरोधी के प्रति भी सच्ची भावना रखता था। ऊंचे से ऊंचे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए भी वह अपवित्र साधन का प्रयोग नहीं करना चाहता था। शुरू से ही उनका सिद्धांत 'सत्य अहिंसा-प्रेम बन चुका था। उन्होंने राजनीतिक युद्ध शास्त्र को ही बदल डाला था। 'प्रार्थना' का स्थान 'घोषणा' ने डेपूटेशन का स्थान 'सत्याग्रह' ने और 'आन्दोलन' का स्थान 'लड़न्त' ने ले लिया था। लड़न्त या लड़ाई अहिंसात्मक थी। जिसमें लड़ने वाले सिपाही न अपने लिए दया की आशा रखते थे और न चाहते थे।

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की आधारभूत कल्पना बदल गई थी।

'हमें स्वराज्य मिलेगा' इसके स्थान पर 'हम स्वराज्य लेंगे' यह कल्पना मन में घर कर गई थी। जो अब तक केवल आन्दोलन था, वह शान्ति-मय युद्ध के रूप में परिणत हो गया था। कोरे प्रस्ताव पास करने वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, अपना पुराना चोला बदल कर अब शक्तिशाली क्रान्तिकारी संस्था का रूप धारण कर रही थी।

विदेशी सरकार, विदेशी वेश भूषा, तथा विदेशी शिक्षा पद्धति के विरुद्ध, सक्रिय विरोध उग्ररूप धारण करता जा रहा था।

(पहला दृश्य)

(एक स्कूल के बाहर कुछ छात्र खड़े बातें, कर रहे हैं। काफी बड़ा स्कूल मालूम देता है। शायद हाई है। कुछ लड़के अन्दर बाहर आ-जा-रहे हैं। अभी स्कूल का समय होने मे कुछ देर है। कुछ अध्यापक भी आ गये हैं। वे लोग स्कूल के दफ्तर में हैं, कुछ बैठे हैं कुछ उसके बाहर खड़े हैं। एक अध्यापक को कुछ लड़के घेरे खड़े हैं। 'हैड मास्टर' साहब अभी तक नहीं आए हैं।)

एक छात्र:—(जो गांधी टोपी पहने हुए हैं) आज तो चाहे जुर्माना क्यों न हो जाए मैं तो क्लास में जाऊंगा नहीं।

दूसरा:—क्यों? क्या बात है। तुम तो कभी क्लास से गैर-हाजिर होना पसन्द नहीं करते?

पहला छात्र:—(गम्भीरता से) पसन्द तो नहीं करता मगर आज तो करना पड़ेगा।

तीसरा छात्र:—क्यों आज क्या बात है ? क्या काम करके नहीं लाए या (Poetry) 'पोइट्री' याद नहीं है।

पहला:—नहीं जी ! तुम्हें तो अपनी जैसी बात मालूम हुआ करती है। मैं कभी ऐसी बातों की वजह से क्लास से 'एब्सैण्ट' रहा हूं ?

दूसरा छात्र'—(व्यङ्ग से) तो आखिर आज क्या मक्खी ने छींक दिया जो स्कूल से भागने की सोच रहे हो ?

पहला—वाह खूब कही ! भागूंगा क्यों ? यहीं रहूंगा मगर क्लास में नहीं जाऊंगा !

दूसरा—आखिर इसकी वजह ?

पहला:—वजह ? तुम्हे क्या बताऊं ! क्या तुम्हें मालूम नहीं गांधी जी ने ऐलान कर दिया है कि तमाम छात्रों को स्कूल और कालिज छोड़ कर बाहर आ जाना चाहिये। उनका कहना है कि हम अपने देश में अंग्रेजी शिक्षा दिलाना नहीं चाहते। ऐसी पढ़ाई जो हमारे देश में बेकार नौजवान पैदा करती है, फ़िजूल है। आज नगर के समस्त स्कूल और कालिजों के छात्र 'तिलक हाल' में जमा होंगे वहां से एक जुलूस निकलेगा, जो गांधी ग्राउण्ड में होने वाले बड़े जल्से मे शामिल होगा, जहां आज गांधी जी का व्याख्यान होना है।

दूसरा:—और अगर यहां 'एब्सैन्ट' लग गई तो फिर ?

पहला:—(लापरवाही से) कौन करता है इस बात की परवाह ! इसकी फ़िक्र तो उसे हो जिसे इस निकम्मी तालीम को हासिल करना हो। जब महात्मा गांधी जैसे महा पुरुष अपना सर्वस्व त्याग कर देश को स्वतंत्र कराने और अंग्रेज़ी हुकूमत को देश से समाप्त करने के लिये आन्दोलन कर रहे हैं, सैकड़ों नौजवान अपनी जान की बाज़ी लगाए हुए हैं। तिलक महाराज ने अपना सारा जीवन बिता ही दिया, हिन्दुस्तान को आज़ाद कराने की धुन में ! तब भी अगर आप लोग इस अंग्रेज़ी शिक्षा से चिपटे रहें तो इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है ?

चौथा:—सुरेन्द्र ! तुम्हारी बातें तो ठीक मालूम देती हैं। मगर घर वाले तो नहीं मानते ? मेरे पिता जी तो कट्टर गवरमेन्ट परस्त हैं। मै तो बहुत चाहता हूं, मगर मजबूरी यही है।

पहला:— (जोश मे) तुम्हारे पिता जी अगर गवर्मेण्ट के आदमी हैं, और वे अपने कर्तव्य को नहीं समझते तो इस का मतलब ये थोड़ा ही है कि तुम भी अपने कर्तव्य से विचलित हो जाओ। तुम्हें पता है आज कितना ज़ुल्म होरहा है हमारे देश में। जब से अंग्रेजी हुकूमत आई है तब से देश कङ्गाल होता जारहा है। तुम तो यहां शहर मे रहते हो, ज़रा जाकर देखो न गावों मे ! तुम्हें असली हालत का पता चल जाय। उस दिन मैंने एक अख़बार मेपढ़ा था कि देश में

करोड़ों आदमियों को, दोनों वक्त, पेट भर सूखी रोटी भी नहीं मिलती। तन ढांकने को कपड़ा भी नसीब नहीं होता। उफ! कितनी दुर्दशा है। इसीलिये जो गांधी जी ने नव-जवानों को पुकारा है। क्या देश को स्वतंत्र कराने के लिये हमारा कुछ भी कर्तव्य नहीं है।

दूसरा.—सुरेन्द्र! भाई तुम ठीक कहते हो। हमें अपनी ऐसी पढ़ाई जो देश की सेवा मे बाधक होती है, फौरन त्याग देनी चाहिये। मै भी प्रण करता हूं कि आज से ही देश के कार्य मे लग जाऊंगा और तभी शुरू करूंगा फिर यह पढ़ाई जब देश स्वतंत्र हो जायगा।

पहला. -(चारो तरफ देखकर) भाइयो! मैं आप लोगों से प्रार्थना करूंगा, कि आप लोग स्कूल न जाकर जुलूस में शामिल होने के लिए तय्यार रहे। और भी जो लड़के अन्दर चले गये हैं, उन्हे भी इस प्रोग्राम की सूचना दे दें।

(इसी बीच मे, लड़कों को एक जगह इकट्ठे देख कर और भी बहुत से छात्र वहा आ जाते हैं।)

पहला छात्र:—

भाइयो! जब हमारे देश के इतने बड़े २ नेता, अंग्रेजी सरकार को उखाड़ने के लिए, इतनी कुर्बानियां कर रहे हैं, उन्हे जेल और कालेपानी की सजाएं दी जा रही है, हमारी मां बहनों की बे इज्जती की जा रही है, और आप लोग आनन्द मना रहे है यह कितनी लज्जा की बात है। आप-

अपने कर्तव्य को समझें, और ऐसी निकम्मी शिक्षा को ग्रहण करने से इन्कार कर दे। और भी कुछ नहीं तो आज के जुलूस में तो अवश्य ही शामिल हों।

(स्कूल में घंटा बजता है। तमाम लड़के इधर उधर से इकट्ठे हो कर प्रार्थना स्थल की ओर जाने लगते हैं। स्कूल के बाहर खड़े हुए छात्र वहीं खड़े रहते हैं। कुछ उनमें से अन्दर जाना भी चाहते हैं मगर शर्म से नहीं जा पाते। उनमें से पहला छात्र आगे बढ़कर सड़क पर पहुंचता है।)

पहला छात्र:—(पूरे ज़ोर से) महात्मा गांधी की!

स्कूल के बाहर खड़े छात्र:—(एकदम) जय हो!

(इस प्रकार कई बार जय घोष होता है। स्कूल में से बाकी छात्र भी बाहर आते हैं, और उसके पीछे चलने लगते हैं। स्कूल में शोर होने पर अध्यापक गण तथा हैड मास्टर जल्दी प्रार्थना स्थल की ओर देखते हैं। वहां थोड़े से ही छात्र बाकी रहते हैं।)

(दूसरा दृश्य)

(नगर के गुंजान महोल्ले में छात्रों का एकदल गाता जा रहा है। पहले दो छात्र किसी किताब में से पढ़ कर गाते हैं उसके बाद, उनके पीछे चलने वाले छात्र बोलते हैं। छोटे २ बहुत से बच्चे और जन साधारण ही उन के साथ२ चल रहे हैं। मोहल्ले की मा बहनें छज्जो पर खडे होकर ध्यान से सुन रही हैं।)

प्यारी मां बहनों चरखा चला लो,

लाज भारत की अब तुम बचालो।

छोड़ चरखा जो तुमने दिया है,

घेर दुश्मन ने हमको लिया है,

उसके पंजे से हमको छुड़ा लो—

प्यारी.........

कैसे पंजाब में जुल्मे ढाए ।
बम जहाजों से हम पर गिराए ।
तुम भी चरखे की तोपें बना लो

प्यारी ....

मानचेस्टर के सब कारखाने,
लूट कर भर रहे है खज़ाने,
उनकी जेबों से धनको निकालो

प्यारी......

तुमको गांधी जी बतला रहे हैं,
सच्चा रस्ता वो दिखला रहे है,
डूबती नाव अपनी बचा लो ।
मेरी मां बहनों चरखा चला लो ।

(छात्रों का दल गाता हुआ चला जाता है । अब उसकी आवाज भी कभी २ बहुत धीरे २ सुनाई देती है । मोहल्ले के एक मकान से दो लडके निकले । एक के सिर पर साफ़ कपड़ों की बडी गठरी है । दूसरा छोटा लड़का भी उसके साथ है मगर खाली है । लडके अभी बड़े दरवाजे से निकले ही हैं । दरवाजे के बाहर बडा चबूतरा है ।)

(बाबू श्यामगोपाल का वेश, बाबू साहब की आयु ४८ के लगभग है, जिनके सर पर बढ़िया फ़ैल्ट हैट, एक हाथ में छडी, और

कलाई पर घड़ी बंधी हुई है, रेशमी सूट पहने चबूतरे पर चढ़ते हैं। उनके पीछे एक आदमी और है, शायद उनका चपरासी है। उसकी बग़ल में एक फ़ाइल और कुछ काग़ज दबे हुये हैं, हाथ में एक पोटली लटकाए हुए है जिसमें कुछ फल और सब्जी मालूम होती हैं।)

श्याम गोपालः—(बड़े बच्चे के सर पर गठरी देखकर) अरे! कल ही तो 'धन्ना' आया था, तो गया पुराने कपड़े? ये कहां से आये? और फिर तुम क्यों ले जा रहे हो इन्हें, चपड़ासी दे आएगा ना?

(लड़के बाबू साहब को देखकर ठिठकते हैं)

श्याम गोपालः—(नजदीक पहुंच कर) अरे! ये तो धुले हुए साफ कपड़े हैं? रेशमी साड़ियां भी मालूम होती हैं, (क्रोध से) इन्हें कहां ले जाते हो?

बड़ा बच्चाः—(घबराकर) कहीं नहीं बाबू जी। (गठरी नीचे उतारता है)

श्याम गोपालः—(कुछ शान्ति से) नहीं! कहीं तो? (डांटते हुए) सच बताओ।

बड़ा बच्चाः—(गर्दन नीची करके) बाबू जी! माता जी कहती थीं

कि गाँधी बाबा का हुक्म है कि आज विलायती कपड़ों की होली जलाई जावे। इसलिये माताजी ने अपने पहनने के तमाम कपड़े इकट्ठे करके दे दिये हैं, कि ६ बजे गली मे जब होली जले तो इन्हे भी जला देना। वे कहतीं थीं कि वे अब विलायती कपड़े नहीं पहनेंगी और न हमे पहनायेंगी। और······

(छोटा बच्चा श्यामनाथ का हाथ पकड़कर बीच ही मे बोलते हुए)

छोटा बच्चा:—बाबू जी ! आज टो हम भी डान्धी बाबा टे पास डये ठे। (कुछ ठहर कर) मैं और माटा जी, तो सौथी डी टे साठ डान्धी बाबा टे डर्शन टरटे आए हैं। (प्यार से श्याम बाबू की ओर देख कर, कौतुहल से) और बाबू डी ! मौठीं डी ने टो हाथ टे डस्टबन्ड ओल डो अंडूठीं भी डांढी बाबा टो डेडीं। (उत्तर की प्रतीक्षा मे श्याम बाबू के मुह की ओर देखता है)

श्याम बाबू:—(क्रोध से फटकारते हुए बडे बच्चे को लक्ष्य करके) तुम्हारी माता जी की ये सब वाहियात बातें मुझे पसन्द नहीं है। उन्हें तो सब हरा ही हरा दिखाई देता है। (नौकर की तरफ मुड कर) बेलीराम !

बेलीराम:—(डरता हुआ सा) जी सरकार ! (कुछ झुक कर श्याम बाबू की ओर देखता है)

श्यामबाबू:—(उसी मुद्रा मे) यह सब्जी बच्चे को दे दो, और इस गठरी को फौरन अन्दर ले चलो। (ठेठ-हकूमती लहजे मे)

जल्दी आओ, कोई देखने न पाए, (छोटा बच्चा कौतुहल से श्याम बाबू की ओर देख देखकर अचम्भे में है)

छोटा बच्चा:—(श्याम बाबू का हाथ हिलाते हुए) बाबू डी, टुम्हें माटा डी शे डर नहीं लड़टा ? वेखी ! (नौकर की ओर आंख नचवा और उङ्गली उठा कर) टू पिटेडा ! माटा डी टुढे मारे...डी...

(बड़ा बच्चा निगाहें नीची किये २ ही नौकर से फलों की पोटली ले लेता है ।)

श्याम बाबू:—(छोटे बच्चे को डाटते हुए) हटो ! चलो अन्दर !

(श्याम बाबू की फटकार से बच्चा सन्न सा रह जाता है और धीरे २ दर्वाजे की ओर चलने लगता है ।)

(श्याम बाबू चारों तरफ चौकन्ने होकर देखते हैं कि कोई देख तो नहीं रहा है । रास्ते से गुजरते हुए बाबू श्यामगोपाल के मित्र, डाक्टर चिन्तामणि, आवाज सुनकर चबूतरे पर चढ़ते हैं)

चिन्तामणि:— (व्यङ्ग से) कहिये बाबू श्याम गोपाल ! आज इस कदर नाराज क्यों हैं ? क्यों इस बच्चे को डाट रहे है ? कहिये कुशल तो हैं ?

आइए ! (श्याम गोपाल, चिन्तामणि को देख कर हंसने की कोशिश करता है और उससे हाथ मिलाता है)

श्याम गोपाल:—(मकान में चिन्तामणि के साथ घुसते हुए) डाक्टर साहब, आपका इस बारे में क्या ख्याल है । ये क़ीमती कपड़ों का जला देना, कहां तक ठीक है ।

अगर पुलिस को पता चल जाय, तो जान आफ़त में आ जाय (शंका' गट करते हुए) और फिर सर्विस भी छूट जाय तो ताज्जुब नहीं। भला देखो तो सही, सैकड़ों रुपयों में बनते हैं, आज कल ये कपड़े, (नौकर के हाथों में पकड़ी हुई गठरी की तरफ़ इशारा करके) यूं ही इन्हें जला डालना कौनसी अक्लमन्दी है?

(चिन्तामणि की ओर प्रश्नात्मक मुद्रा में देखता है)

चिन्तामणि:—(गम्भीरता से) आखिर क्या बात है?

(दोनों बैठक में पड़ी हुई कुर्सियों पर बैठते हैं।)

श्याम गोपाल:—(मेज पर हैट रखते हुए) अजी साहब! क्या बताऊं! अजीब चक्कर चलाया है, इस 'गांधी' ने। (कुछ ठहर कर चिन्तातुर मुद्रा में) बड़ा लड़का तो नौकरी छोड़कर गांधी टोपी पहने फिरता है, कहता है जब हिन्दुस्तान आज़ाद हो जायगा, तभी करेंगे अब नौकरी, सरकार की! दूसरा लड़का भी कई दिन से कॉलिज नहीं जा रहा, वह कहता है 'गांधी बाबा' ने ऐलान कर दिया है, कि कालिज स्कूलों की पढ़ाई बेकार है, जब तक मुल्क आज़ादी हासिल न करले! इतने बड़े लड़कों को धमकाया भी नहीं जाता।

(कुछ देर ठहर कर चिन्ता युक्त होते हुए)

इधर कई दिन से सी० आई० डी० दफ्तर में चक्कर लगा रही है। आज भी इन्सपैक्टर साहब आए थे, वे

कहते थे, कि अगर तुम्हारा लड़का इस आन्दोलन में भाग लेगा, तो उसकी जुम्मेदारी तुम्हारे सर पड़ेगी। मैंने तो उन्हे आज साफ़ साफ़ कह दिया, कि बड़ा लड़का मेरे पास नहीं रहता, वह मुझ से अलहदा हो गया है, (लापरवाही से) मगर साहब कौन सुनता है! अजीब जान आफ़त मे है। (ज़रा जोर से) अब दफ़्तर से घर आया हूं तो देखता हूं कि एक छोटे साहब घर के कपड़े इकट्ठे करके फूंकने ले जा रहे है। और उनकी माता जी जुलूस निकाल रही है।

चिन्तामणिः—(मुस्कराकर व्यंग से) ख़ैर! बच्चों में तो इतनी हिम्मत और समझ कैसे हो सकती है कि बिना किसी की आज्ञा के इतने क़ीमती कपड़ों को जला सके, श्रीमती जी ने तो नही भेजे थे?

श्याम गोपालः—क्या बताऊं! इन बच्चों की माता जी भी गांधी बाबा की चेली हैं। वे भी तो इन क़ीमती कपड़ों पर सैकड़ों रुपया ख़र्च करके, अब इन्हे जलाने की सोच रही हैं। (सोच मे) क्या करूं, अजीब परेशानी में जान है!

चिन्तामणिः—श्यामबाबू! महात्मा गांधी का चलाया हुआ यह आन्दोलन, ब्रिटिश सरकार के लिये काफ़ी परेशानियां पैदा कर रहा है। सरकार ज्यूं ज्यूं इसे दबाने की कोशिश करती है यह उतना ही बढ़ता जाता है,। (शान्ति से) देखो न! जब छोटे छोटे बच्चे और औरतें तक इसमें हिस्सा लेने लगी, तो फिर किस तरह यह आग दबाई जा सकती है?

श्याम गोपाल:—(गंभीरता से) डाक्टर साहब! कोई भी गवर्नमेण्ट इस तरह की खिलाफ़ क़ानून हरकतों को बर्दाश्त नहीं कर सकती। अगर इस तरह की बातों को दरगुज़र किया जाता रहे, तो हुकूमत चलनी ही मुश्किल हो जाय। लड़कों और औरतों को इस तरह भड़काना, उनकी तालीम को बन्द करने की तर्ग़ीब देना, क्या मुल्क के लिये फ़ायदेमन्द साबित हो सकता है?

चिन्तामणि:—यह तो ठीक है, मगर आप यह भी समझें कि किसी मुल्क के बाशिन्दों की मर्ज़ी के खिलाफ़ कोई हुकूमत अधिक समय तक उन पर राज्य नहीं कर सकती। फिर यह भी एक माना हुआ सिद्धांत है कि बन्दूक के ज़ोर से जो राज्य किया जाता है वह जनता के शरीरों पर ही हो सकता है, मनों पर नहीं। जनता के मन जिस सरकार के विरुद्ध होंगे उसे तो जल्दी या देर से हटना ही पड़ेगा। इतिहास भी इसका साक्षी है। इन्हीं अंग्रेजों की हुकूमत आयरलैंड से खत्म हो गई, रूस में ज़ार-शाही का कितना बुरा अन्त हुआ।

(कुछ ठहर कर)

आपको मालूम है कि अमृतसर के 'जलयान वाले बाग़' में हुकूमत ने कितने जुल्म ढाए हैं अब आई है। उसकी ठीक ठीक खबर! वहां हज़ारों को मौत के घाट उतार दिया होगा। चार सौ के मरने की खबर तो सरकार भी मानती

है। दो हज़ार के घायल होने को भी सरकार ने माना है। पचासों को काला पानी और फांसी की सज़ा दीगई सो अलग। यह भी सहन किया जा सकता है, मगर दूध पीते बच्चों को संगीनों से कत्ल करना, स्त्रियों की बेइज्जती, और निरपराध व्यक्तियों को पेट के बल रेंगने पर मजबूर करना, घोर अत्याचार नहीं तो क्या है? क्या ये ही सभ्य कहलाने वाली अंग्रेजी सरकार का न्याय है?

(जोश में)

ऐसी घटनाओं के पश्चात भी हिन्दुस्तानियों का खून न खौले? भारत का बच्चा बच्चा ऐसी सरकार के विरुद्ध न हो जाय? हम अपने देश में न्याय, खाने को पेट भर अन्न, तन ढांकने को कपड़ा ही तो मांगते है? और हमें दिया जाता है ये, कि लाजपतराय जैसे जन—प्रिय नेताओं को हम से जुदा करके 'काले पानी' भेजा जाता है।

(दया पूर्ण मुद्रा में)

क्या इन सब क़ुर्बानियों का नतीजा नही निकलेगा? तिलक महाराज जैसे महापुरुषों का जीवन अंग्रेजी राज की जड़े हिलाते हिलाते समाप्त होगया। उन्होंने जो पौदा लगाया था, गांधी जी आज उसे ही सींच रहे हैं। याद रखिये! इनका ढंग निराला है। असहयोग का यह अस्त्र जो उन्होंने अपनाया है, अंग्रेजी राज के लिये मौत की घंटी साबित होगा।

श्यामगोपालः—मेरी तो समझ में नहीं आता कि इतनी बड़ी ताक़त को शिकिस्त दे सकेंगे, गांधी जी इस तरह ? भला आप गोलियों के सामने कैसे ठहर सकते हैं ?

चिन्तामणिः—यही तो अजीब बात है इस असहयोग में ! आप आज तक दुनियां के किसी इतिहास में ऐसा मुक़ाबला नहीं पढ़ा होगा। कि एक तरफ़ गोला बारूद से लैस फ़ौज पुलिस, और दूसरी तरफ़ निहत्ती जनता। जिसको आदेश हो कि गरदन कट जाये, शरीर के टुकड़े टुकड़े हो जायं, मगर किसी पर हाथ न उठाए। यह है अहिंसा की शक्ति।

(ठहर कर)

आप ज़रा यह तो सोचिये कि सरकार कब तक निहत्तों पर बिना किसी कारण के गोली चलवाए जायगी ? अहिंसा से हिंसा को जीता जा सकता है, हिंसा से अहिंसा पर विजय नहीं पाई जा सकती। जब गाधी जी ने देखा, कि देश निहत्था है, और बन्दूक तोप का मुक़ाबला नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने यह अहिंसा का हथियार इस्तैमाल करने की शिक्षा दी है। महात्मा गांधी की इस नीति से अंग्रेज़ ही नहीं दुनियां दंग है।

श्याम गोपालः—(सोच कर) मगर हम क्या करें। चप्पे चप्पे पर सी० आई० डी० के आदमी घूम रहे हैं। परसों हमारे मुहल्ले के तीन आदमी ऐसे पकड़े गये हैं, जो किसी तरह इस आन्दोलन में शामिल ही नहीं थे। किसी ने दुश्मनी

से शिकायत करदी। बस फिर क्या था ! लाख सिर पटकने पर भी थानेदार न माना। और ठूंस दिया जेल में।

चिंतामणि:—(लापरवाही से) अजी जेल और फांसी तो आज कल मामूली बात हो गईं हैं। (कुछ ठहर कर) जब 'डाक्टर अन्सारी'; हकीम अजमल खां, मौलाना मोहम्मद अली जैसे मुसलमान, 'तैयब जी' जैसे पारसी, 'एनीबीसैन्ट' और 'एन्ड्रूज़' जैसे अंग्रेज भी गांधी जी के पीछे चल रहे हैं, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे कट्टर आर्य समाजी. जब दिल्ली की जामा मस्जिद मे लैक्चर देते हैं, हिन्दू मुसलमानों में कोई भेद दिखाई नहीं देता, तो फिर कौन हिन्दुस्तानी ऐसा होगा, । आज़ाद कराने की इस जंग में पीछे रहेगा।

हकीक़त तो ये है, कि जर्मन जंग के बाद किसी को भी अंग्रेजों की बात पर विश्वास नहीं रहा। (घृणा से) देखो न, लड़ाई के दिनों मे कैसे-कैसे वायदे किये थे सरकार ने, (घृणा पूर्ण हसी से) मगर लड़ाई जीत जाने, लाखों हिन्दुस्तानियों को लड़ाई मे झोंक देने, और अरबों रुपए का माल हड़प लेने के बाद, अब वे वायदे हवा हो गये ।

तभी तो गांधी जी को इनके विरुद्ध यह आन्दोलन जारी करना पड़ा। और इसीलिये सब हिन्दू मुसलमान संगठित होकर, अंग्रेजी हुकूमत को खत्म करने पर तुले हुए हैं । तमाम देश में अशान्ति है। जगह जगह विद्रोही हो गई है जनता ! सरकारी नौकर, नौकरियों को लात मार रहे हैं।

छात्रों के लिये राष्ट्रीय विद्यालय खुल गये हैं। बाजारों में उल्लू बोल रहे हैं। हड़तालें नित्य की बात हो गई हैं।

(श्याम गोपाल मंत्र-मुग्ध सा सुन रहा है, उसके चहरे के उतार चढ़ाव साफ दिखाई दे रहे हैं)

श्याम गोपाल:—(मजबूरी जाहिर करते हुए) किन्तु मेरे लिए तो यह बड़ा कठिन है कि इस तरह गवर्नमेंट के खिलाफ़ किसी काम में हिस्सा ले सकूं, या अपने घर के किसी आदमी को लेने दूं। (दृढता प्रगट करता है) क़ानून की हद में रहते हुए भी तो देश-सेवा की जा सकती है।

चिन्तामणि:—(व्यंगमय मुसकराहट से सर हिला कर) खूब! तुम हवा के रुख़ को नहीं बदल सकते, श्याम बाबू! (ठहर कर उसी मुद्रा में) मोतीलाल नेहरू भी इसी तरह कहा करते थे! मगर जब उनका इकलौता बेटा, जवाहर लाल नेहरू, विलायत से बैरिस्ट्री पास करके आया, और गांव २ घूमकर किसानों को गवनमेंट के विरुद्ध संगठित करने लगा, तो मोतीलाल नेहरू पर भी बड़ा जोर पड़ा। तमाम बड़े २ अफ़सर मोतीलाल के मित्र थे, वहीं 'आनन्द भवन' में पार्टियां उड़ती थीं। गवर्नमेंट ने बड़े२ ओहदे देने चाहे 'जवाहर लाल नेहरू को। मगर वह तो दुनियां की हवा देख चुका था, अपनी राह पर डटा रहा।

कभी २ मोतीलाल नाराज़ भी होते,तो जवाहर लाल नेहरू की मां, स्वरूपरानी, उनका पक्ष लेतीं। अन्त में मोतीलाल को

ही अपना शाही ठाट-बाट छोड़कर, खुल्लम खुल्ला, गवर्नमेंट के ख़िलाफ़ आन्दोलन में हिस्सा लेना पड़ा। अब तो सारा नेहरू खान्दान ही गांधी बाबा का चेला बना हुआ है। ौर इस आन्दोलन में काम कर रहा है।

(कुछ ठहर कर)

हिन्दुस्तान अब पहला हिन्दुस्तान नहीं रहा है। ऐसा जादू चलाया है गांधी बाबा ने, कि अंगरेज की अक़्ल भी हैरान है। वे तो कहते हैं कि 'चरखा कातो' और 'सरकार को किसी काम मे सहयोग न दो'। (धीरे से) सरकार की यह सब अकड़ दिखावटी है। 'टाल्सटाय' ने एक जगह लिखा है कि किसी देश की विदेशी हुकूमत उसी समय सख्ती करती है, जब उसमें भीषण कमजोरी आ जाती है। आज अंगरेजी सरकार का भी यही हाल है (कुछ झुक कर) मैं परसों सिविल सर्जन की कोठी पर गया था' मालूम हुआ कि सरकार ने तमाम गोरों को किसी भी हालत के लिए तैयार रहने का हुक्म दे दिया है। उन्होंने अपने अपने बीबी-बच्चों को भी बम्बई भेज दिया है। कहते थे कि जाने कब हिन्दुस्तान से जाने का हुक्म मिल जाय।

श्याम गोपाल:—(अचम्भे में) अच्छा! तब तो बड़ी खराब हालत मालूम देती है सरकार की। मुझे एक बात से तो शक हुआ था, (कुछ सोचकर) उस दिन मैंने अखबार में

पढ़ा था, कि देहली में सरकार ने जुलूस को रोकने के लिए मशीनगनें लगाने का विचार किया है।

चिन्तामणिः—(व्यङ्ग से) अब इन घुड़कियों से नहीं डरते हिन्दुस्तानी। दिल्ली में निकला न हिन्दू मुसलमानों का शानदार जुलूस ? जब जुलूस 'चांदनी चौक' में पहुंचा तो घण्टाघर पर मशीनगनें लगी होने का समाचार मिला। स्वामी श्रद्धानन्द जुलूस के आगे आगे थे। घण्टाघर पर पहुंचते ही वे मशीनगन के आगे सीना तान कर खड़े हो गये, और बोले कि "निहत्ती जनता को मारने से पहले मेरे सीने पर गोलियां चलाओ।"

(उसी समय बाहर शोर होता है, लोगों के भागने की आवाज़ साफ़ सुनाई देती हैं, श्याम गोपाल का नौकर, बेलीराम, हांपता हुआ अन्दर दाखिल होता है।)

बेलीरामः—(जल्दी जल्दी सास लेते हुए) सरकार···बजार में गोली चल गई। छोटे बाबू जखमी हो गए। मदरसों के बहुत से बाबू लोग झल्लूस बना कर जा रहे थे, थानेदार ने उन्हें रोका, मगर वो नहीं रुके। कहते हैं उन्होंने बजार की दुकानें बन्द करने को कहा, उधर से कई गोरों ने आकर झल्लूस पर गोली चलानी शुरू करदी। सरकार छोटे बाबू भी उसी 'झल्लूस' में देखे थे मैंने, उनके हाथ में १ झण्डा था, हज़ारों आदमी गाते जा रहे थे। बहुत सी औरतें भी

थीं। मगर मुझे बहू जी का कुछ पता नहीं चला। (श्याम बाबू एक दम कुर्सी से खड़े हो जाते हैं)

श्याम गोपाल:—(क्रोध तथा चिन्ता में) मैंने उस नालायक से कल ही मना किया था, मगर नहीं माना। (लापरवाही दिखाकर) मरने दो, मैं कहां तक इन्हें समझाऊं। (कुछ ठहर कर शान्ति से) डाक्टर साहब, क्या करना चाहिये ?
(बड़े बच्चे का प्रवेश)

बड़ा बच्चा:—(भय से) बाबू जी ! अम्मा जी को पुलिस पकड़ कर ले गई। मैं भी उनके साथ ही जुलूस में था। उन्होंने कहा है कि हमारी चिन्ता न करें। भाई साहब तो बेहोश हो गये थे। उनके सिर मे से खून बह रहा था। मैं भी अम्मा के साथ ही था, मगर मुझे पुलिस ने गाड़ी से उतार दिया। अम्मा ने मुझ से कहा कि तुम घर जाओ। बाबू जी ! गोरे गोली छोड़ रहे थे।

चिन्तामणि —बाबू श्याम गोपाल ! तुम्हारा तो सारा ही घर गांधी बाबा के साथ है। तुम्हारे लिए अब यही उचित है कि सरकारी नौकरी को लात मार कर देश-सेवा मे लग जाओ।

श्याम गोपाल:—(घबराई हुई आवाज़ से) मैं समझता हूं कि अब मुझे किसी भीं तरह गवर्मेंण्ट माफ़ नही कर सकती।

(उठते हुए) अच्छा, तो चलिए, हरों के मामां से जरा इस बारे में मशवरा करले, तभी कुछ आखिरी फैसला करना ठीक है। (दोनों उठते हैं और घर से बाहर निकल जाते हैं, चलते-चलते बेली को कुछ कह जाते हैं)
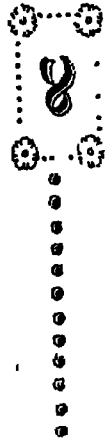
४
बलिदान-गृह
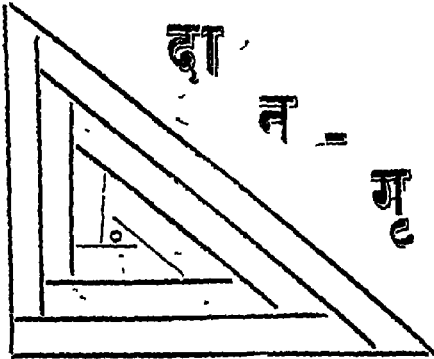
बलिदान-गृह

के

पात्र

काल:—सन १९२८

ला० लाजपतराय:—(ऐ०) शेरे पंजाब, भारत के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता। जिनकी मृत्यु, साईमन कमीशन का बहिष्कार करते समय लाठी चार्ज से हुई बताई जाती है।

अंग्रेज अफ़सर:—(ऐ०) मि० स्कॉट और मि० सांडर्स, जिन्होंने साईमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन करते समय ला० लाज़पतराय और अन्य प्रदर्शनकारी भारतीय जनता पर, अमानुषिक लाठी प्रहार कराया।

स० भगतसिंह, श्री सुखदेव व राजगुरू—(ऐ०) प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नवयुवक। जिन्हें सांडर्स को गोली से उड़ा देने तथा अन्य क्रान्तिकारी कांड करने पर फांसी का दण्ड दिया गया (सन १९३१, २३ मार्च को)

पंडित जीः—(ऐ०) प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता, श्री चन्द्रशेखर आजाद।

नवयुवतीः—(ऐ०) श्रीमती दुर्गादेवी, प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगवती चरण की स्त्री।

मोटर सा० सवार पुलिस -अधिकारीः—(ऐ०) मि० सांडर्स, जिन्हें लाला जी पर लाठी-प्रहार कराने पर, भगतसिंह आदि ने गोली से उड़ाया।

चाननसिंहः—(ऐ०) पुलिस का सब इन्सपैक्टर।

सद्दीके, शादी आदिः—(का) रेलवे स्टेशन के कुली।

बाबूः—(का) रेलवे का एक साधारण क्लर्क।

अनेकों सिपाही, पुलिस-अधिकारी, नवयुवक तथा हजारों जन साधारण।

(ऐ०) ऐतिहासिक

(का०) काल्पनिक

बलिदान-गृह

[गांधी जी द्वारा सञ्चालित, असहयोग-आंदोलन पूरे वेग से चल कर शान्त हो गया। 'जलियां वाले कांड' के पश्चात, 'मोपला विद्रोह' 'प्रिन्स आफ़ वेल्स का बहिष्कार' तथा 'चोरी चोरा काण्ड' विशेष महत्व रखते हैं। मालाबार के मुसलमान अंग्रेज़ी सरकार की नीति से असन्तुष्ट होकर विद्रोही हो गये थे। उनके उत्पातों को सरकार ने घोर हिंसा द्वारा कुचल डाला। 'खिलाफत' का आन्दोलन भी पूरे वेग से चला। जिसमें लेकर 'अलीबन्धु', डा० किचलू, शारदा पीठ के जगद् गुरू शंकराचार्य आदि पर मुकदमा चला। १७ नवम्बर सन १९२१ को युवराज (प्रिन्स आफ वेल्ज़) भारत में आये। कांग्रेस के आदेशानुसार उनके स्वागत में होने वाले समस्त उत्सवों तथा कार्यों का सफल बहिष्कार किया गया। स्वागतार्थ निर्धन ग्रामीण जनता को रुपए दे दे कर

बुलाया गया। जनता ने जगह जगह विदेशी माल की होली जलाई। बम्बई में चार दिन तक खून खच्चर होते रहे। जिनमें ५२ आदमी मरे और ४०० घायल हुए। ये दंगे गाधी जी व सरोजिनी देवी के रोके भी न रुके। जनवरी सन २१ मे मदरास मे भी, युवराज के आगमन पर दंगे हुए। ५३ आदमी मारे गये, और लगभग ४०० घायल हुए। गाधी जी ने प्रायश्चित स्वरूप ५ दिन का उपवास किया।

काग्रेस और 'खिलाफत' के हज़ारों स्वयं सेवक संगठित रूप से सत्याग्रह कर रहे थे। हजारों पकड़े गये। स्वयं सेवक भरती करना भी सरकार ने खिलाफ़ कानून क़रार दे दिया था। बंगाल में युवराज के पहुंचने पर बहुत से आदमी पकड़े गये। जिनमें देशबन्धु चितरंजनदास, उनकी धर्म पत्नी और पुत्र भी थे। इसके बाद संयुक्त प्रान्त और पंजाब की बारी आई। वहा सरकार ने भीषण दमन किया। और ला० लाजपतराय, प० जवाहरलाल नेहरू, मोतीलाल नेहरू आदि पकड़े गये। प० मदनमोहन मालवीय और श्री मोहम्मद अली जिन्ना की मध्यस्थता से सरकार और काग्रेस मे समझौते की कोशिशें की गईं, किन्तु सफलता नहीं मिली। गाधी जी ने बारदौली के मामले को लेकर चेतावनी दी किन्तु सरकार न झुकी। हड़तालें, पिकेटिंग आदि पूरे वेग से जारी थे।

५ फरवरी सन् १६२२ को युक्तप्रान्त मे गोरखपुर के निकट 'चोरी चोरा' मे एक काग्रेसी जुलूस निकाला गया। जनता मे बहुत जोश था। इस अवसर पर उत्तेजित भीड़ ने वहा के थाने के २१ सिपाहियों और १ थानेदार को थाने मे बन्द करके थाने में आग

लगा दी। वे सब आग में जल मरे। इस घटना के फलस्वरूप बार-डोली में सामूहिक सत्याग्रह न छेड़ने का निर्णय किया गया। गाधी जी ने देश के प्रबल विरोध के होते हुए भी 'चोरी चोरा काण्ड' को लेकर सत्याग्रह आन्दोलन बन्द कर दिया। उसी वर्ष गाधी जी को पकड़ लिया गया, और राज्यद्रोह के अभियोग में छै वर्ष का कारावास दण्ड दिया गया। इसी मुकदमे में आपने अपना ऐतिहासिक लिखित बयान दिया।

गाधी युग के प्रारम्भ में, असहयोग आन्दोलन के तूफानी दिनों मे लगभग तीन वर्ष तक, भारत के क्रान्तिकारियों का आन्दोलन शान्त रहा। किन्तु उसके बाद ही चिनगारिया फिर भड़क उठीं। डकैतियों की धूम सी मच गई। १२ जनवरी सन १९२४ को पुलिस कमिश्नर टेगर्ट के धोके में मि० डे की हत्या होने के बाद हत्याओं का सिलसिला बढ़ा। विशेष आर्डिनेन्स निकाल कर १२६ व्यक्तियों को नजर बन्द कर दिया गया। जिनमें श्री सुभाषचन्द्र बोस भी थे। कानपुर और मेरठ में षड्यन्त्र केस चलाए गये। पजाब में ९१ बब्बर अकालियों पर मुक़दमा चला कर ५ को फासी और १२ को काले पानी की सजा दी गई। मद्रास में श्री रामराजू का विप्लवी दल संगठित हुआ और उसने कई बार ब्रिटिश सेना का सामना कर, कई अफसरों को यमलोक भेज दिया। सरकार के लाख सर पटकने पर भी श्री रामराजू हाथ नहीं आए। इन दिनों में सब से प्रमुख घटना काकोरी काड की हुई। ९ अगस्त सन १९२५ को काकोरी के पास रेल गाड़ी रोक कर सरकार का ४० हजार रुपया लूट लिया गया। इस अपराध में सर्व श्री

रामप्रसाद 'बिस्मिल', अशफाक उल्ला, राजेन्द्र लहरी, और रोशनसिंह आदि चार व्यक्तियों को फासी और १२ को बड़ी २ सजाएं हुई। कई वर्ष से चल रहे गुरुद्वारा आन्दोलन में भी सरकार ने कठोरता से काम लिया। किन्तु वीर सिखों के टिड्डी दल की त्याग भावना ने सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया।

असहयोग और खिलाफत आन्दोलन में हिन्दू मुस्लिम सगटन से ब्रिटिश सरकार की नींव एक बार बुरी तरह हिल चुकी थी। सरकार किसी भी रूप में हिन्दू मुसलमानों के इस भाई चारे को, जो ब्रिटिश सरकार के लिए, मौत की घण्टी से कम न थी, नहीं पनपने देना चाहती थी। सरकार ने अपने समस्त शासन सुधारो में साम्प्रदायिकता का विष भरा। हिन्दू मुसलमानों के संगठन को भंग करने और उनमें वैमनस्य पैदा करने के लिए, ब्रिटिश सरकार ने हर तरह के हथकण्डों का प्रयोग किया। दोनों को एक दूसरे के विरुद्ध भड़काया गया। जिसके परिणाम स्वरूप, असहयोग आन्दोलन के ठण्डा पड़ते ही देश के विभिन्न भागों में, भीषण साम्प्रदायिक झगडे हुए। यह झगड़े प्रायः सी० आई० डी० द्वारा आयोजित किये जाते थे। जिनमें सरकार एक न एक सम्प्रदाय का पक्ष ले लिया करती थी। मुल्तान, दिल्ली, कानपुर, कलकत्ता, इलाहाबाद, सहारनपुर, हैदराबाद आदि शहरों में भीषण रक्तपात हुआ। मन्दिरों, मस्जिदों को आग लगा दी गई। लूट पाट और आग लगने की घटनाएं बहुत बड़ी संख्या में हुई। प्रायः यह झगड़े उन सम्प्रदायिक आन्दोलनों का परिणाम थे, जो मुसलमानों ने तब लीग और हिन्दुओं ने 'शुद्धि' के नाम से राजनैतिक उद्देश्यों की

पूर्ति के लिए अपनी २ संख्या वृद्धि के लिये जारी किए थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता, और असहयोग आन्दोलन के सफल सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या भी इसी साम्प्रदयिक वैमनस्य का परिणाम थी।

प्राय: यह दंगे बाजा, बकरईद पर गाय की कुर्बानी या इसी प्रकार के अन्य धार्मिक प्रश्नों को लेकर शुरु हुए थे।

सन १९२४ की बेल गाव कांग्रेस के अध्यक्ष गाधी जी बनाए गये। आपने हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये २१ दिन का उपवास किया।

कांग्रेस संगठित रूप से आगे बढ़ रही थी। उसने सरकार से स्वराज्य की माग की। यह पूछने पर कि वह कब मिलेगा? इसका उत्तर दिया जाता रहा कि, ज्यों २ भारत वासी उसके योग्य होते जायेंगे त्यों २ उन्हें थोडे २ अधिकार धीरे २ मिलते रहेंगे। सुनने में यह आश्वासन बुरा नहीं था। भोले भारतवासी यह सिद्ध करने का यत्न करने लगे कि अब हम स्वराज्य के योग्य हो गये हैं। जब पूछा जाता था कि स्वराज्य कैसा होगा, जो भारत वासियों को मिलेगा। तो उत्तर दिया जाता था कि जैसा ब्रिटिश साम्राज्य के और उपनिवेशो को प्राप्त है। महात्मा जी 'औपनवेशिक स्वराज' के ध्येय से सन्तुष्ट थे, इस कारण कांग्रेस भी सन्तुष्ट थी, और देश भी।

सन १९३४ में देश के भरोसे को एक और ठोकर लगी। उस समय कांग्रेस में स्वराज्य पार्टी बन चुकी थी, और धारा सभाओं में पहुंच चुकी थी। उसकी ओर से केन्द्रीय एसैम्बली में यह जोर दिया गया कि सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य देने की तिथि निश्चित करे।

उस समय के होम मेम्बर सर माल्कम हेली ने इस माग का स्पष्टीकरण करते हुए, केन्द्रीय असेम्बली में घोषणा की, कि औपनिवेशिक स्वराज्य की माग भारतीय शासन विधान से मेल नहीं खाती। और यह बिल्कुल नई चीज़ है। भारत को स्वराज्य की ओर बहुत धीरे २ बढ़ाया जायगा।

सर मैल्कम हेली के इस वक्तव्य ने उन भारतवासियों को भी चक्कर मे डाल दिया जो कि औपनिवेशिक स्वाराज्य के खूटे से अपनी नाव को बाध कर सन्तुष्ट थे। महात्मा गाधी और मोतीलाल नेहरू तक ने भी यह अनुभव किया कि अंग्रेजी सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य के सर्व सम्मत मन्तव्य को तैयार नहीं है।

सन १९२८ में एक सर्व-दल-सम्मेलन बुलाया गया जिसमे 'नेहरू-रिपोर्ट के नाम से एक विधान स्वीकार किया गया। विधान तो स्वीकार हुआ, किन्तु मुसलमानो ने संयुक्त-निर्वाचन-प्रणाली को नहीं माना। इस विधान को बनाने वाली कमेटी के प्रधान प० मोतीलाल नेहरू थे। इसी वर्ष कलकत्ता में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के लिये भी उन्हें ही अध्यक्ष चुना गया। जब 'नेहरू रिपोर्ट' का मसौदा स्वीकृति लिये पेश हुआ तो आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के मुख्य प्रस्ताव पर एक संशोधन पेश करने का नोटिस दिया गया। जिसका आशय यह था कि कांग्रेस का ध्येय भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना है। उस संशोधन के प्रस्तावक पं० जवाहरलाल नेहरू और समर्थक सुभाषचन्द्र बोस थे। अजीब सा दृश्य था। एक तरफ़ मोतलाल नेहरू थे, दूसरी ओर थे जवाहरलाल नेहरू जो पिता के प्रस्ताव को देश के लिये घातक समझते थे। वे 'पूर्ण स्वाधीनता' देश का ध्येय बनाना चाहते थे। वृद्ध भारत और

तरुण भारत के विचारों में टकराव था। आखिर गांधी जी के बीच में पड़ने से मामला सुलझा। गांधी जी ने स्वयं मुख्य प्रस्ताव को पेश किया। गांधी जी का प्रभाव यह हुआ कि जवाहरलाल नेहरू, संशोधन उपस्थित करते समय अनुपस्थिति हो गये।

किन्तु इसका यह प्रभाव पड़ा कि कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार को १ वर्ष का यह नोटिस दिया, कि यदि सरकार ने, 'नेहरू रिपोर्ट' के आधार पर, भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य न दिया तो ३१ दिसम्बर १६२६ के पश्चात भारत का ध्येय पूर्ण स्वराज्य होगा। कांग्रेस ने यह भी स्वीकार किया कि इस अवधि के बाद, कांग्रेस देश को यह सलाह देगी कि वह सरकार को किसी प्रकार का सहयोग न दे। और वह अहिंसात्मक असहयोग-आन्दोलन जारी कर देगी।

नई सुधार-योजना की रिपोर्ट तैयार करने के लिये सन १६२८ में साइमन कमीशन भारत आया। कमीशन के सातों सदस्य अंग्रेज थे। इस लिये इसके विरोध में कांग्रेस ने इसका व्यापक बहिष्कार किया। इधर कमीशन के आते ही, उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड इरविन ने, एक धमकी भरी घोषणा की, कि यदि कमीशन के काम में भारतीयों की सहायता प्राप्त न हुई तो भी कमीशन अपना कार्य बदस्तूर चलाता रहेगा। और अपनी रिपोर्ट पार्लियामेण्ट को पेश कर देगा। ६ फरवरी को कमीशन बम्बई में आकर उतरा। उस दिन समस्त देश में हड़ताल मनाई गई। मद्रास में पुलिस ने उत्तेजित भीड़ पर गोली चलाई। कलकत्ते में भी छात्रों और पुलिस में मुठभेड़ हुई। बम्बई से कमीशन सीधा दिल्ली आया। दिल्ली में जैसे ही कमीशन के कदम पड़े कि उसका विराट विरोधी-

प्रदर्शनो द्वारा स्वागत किया गया। "साइमन गो बैक" और "साइमन वापिस जाओ" के नारों और काले झण्डों के अतिरिक्त बड़े २ मोटो उन्हें दिखाये गये।

कमीशन के बहिष्कार की इतनी प्रबल सफलता देखकर सरकार झुंझला उठी। उसने कमीशन के बहिष्कार को दमन और आतंक द्वारा रोकना चाहा। लाहौर में कमीशन के बहिष्कार के लिए ला० लाजपतराय के नेतृत्व में एक बड़ा भारी जन-समूह स्टेशन पर एकत्रित हो गया। पुलिस वालों ने प्रदर्शनकारी भीड़ पर भीषण लाठी प्रहार किया। और प्रतिष्ठित नेताओं को लाठी और डण्डों-से पीटा। लाला जी के कई जगह गहरी चोट आई। और कहते हैं कि इन्हीं जख्मो के कारण उनका स्वर्गवास हुआ।

इसके अतिरिक्त लखनऊ पुलिस ने भी निहत्थी जनता पर डण्डे बरसाये। युक्तप्रात की पुलिस ने तो जवाहरलाल नेहरू तक को भी न छोड़ा। चार दिन तक लखनऊ में पुलिस के हमले होते रहे। पुलिस घरों तक में घुस २ कर पीटती थी। केसर बाग में, पुलिस के भारी पहरे में साइमन कमीशन को पार्टी दी गई। किन्तु आसमान से सैकड़ों गुब्बारे और काली २ पतंगें बाग में आकर गिरीं, जिन पर "साइमन गो बैक" और "साइमन वापिस जाओ" लिखा था, तो पार्टी का सारा मजा किरकिरा हो गया। इसी प्रकार पटना में भी कमीशन का सफल बहिष्कार हुआ। कुछ मुस्लिम संस्थाओं को छोड़ कर सारे देश ने कमीशन का बहिष्कार किया।

उसी साल अर्थात सन १९२८ में ,बारदोली का प्रसिद्ध सत्याग्रह हुआ। बन्दोबस्त में मालगुजारी बढ़ा देने के विरोध स्वरूप वहा के किसानों ने कर बन्दी आन्दोलन शुरू कर दिया। इस प्रसिद्ध आन्दोलन का नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल ने लिया था। इससे पहले वल्लभभाई पटेल 'सरदार' नही थे। इसी आन्दोलन की सफलता, और उनकी संगठन शक्ति ने, उन्हें 'सरदार' बना दिया था। सरकार ने बाहर से पठान बुला २ कर जानवरोंकी कुर्की करनी आरम्भ कर दी। लोगों ने कुर्कियों के बीच में कोई रुकावट नहीं डाली। बम्बई कौन्सिल के कई सदस्यों ने विरोध स्वरूप कौंसिल से त्याग पत्र दे दिया। और वे आन्दोलन में दिलचस्पी लेने लगे। केन्द्रीय एसेम्बली के अध्यक्ष और सरदार पटेल के बड़े भाई, विट्ठलभाई पटेल, ने भी वायसराय को एक पत्र लिखा। कि यदि इस मामले मे सरकार न झुकेगी तो, वे भी अपने पद से त्याग पत्र देकर इसी काम मे जुट जायेंगे। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा। किसानों की शिकायत सुनी गई। बढ़ी हुई मालगुजारी कम हुई, कुर्क की हुई जायदाद वापिस हुई।।

क्रान्तिकारियों ने संयुक्तप्रांत की 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन् असोसिएशन' और पजाब की 'नवजवान भारत सभा' को एक मे मिलाकर, प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री चन्द्रशेखर आज़ाद के नायकत्व में 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' को जन्म दिया। झासी को केन्द्र बनाया गया। और सरदार भगतसिंह को इसके संगठन का काम सौंपा गया। लाहौर, सहारनपुर, आगरा और कलकत्ता मे इसके केन्द्र स्थापित हुए। उन्हीं दिनो प्रसिद्ध 'मेरठ षड्यन्त्र केस' चलाया गया, जिसमें

विदेशों के भी बहुत से व्यक्ति पकड़े गये थे। अभियुक्तों पर साम्यवादी प्रचार का अभियोग लगाया गया था।

पंजाब के नवजवानों के आत्माभिमान को लाला लाजपतराय पर हुए प्रहार से बहुत आघात पहुंचा था। उन पर 'लाठी चार्ज' का आदेश देने वाले, लाहौर के सीनियर सुप० पुलिस मि० स्काट का वध करने के धोके में, ला० जी के स्वर्गवास के ठीक एक महीना पश्चात, मि० साण्डर्स की भगतसिंह के दल द्वारा हत्या कर दी गई। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि स्वर्गीय भगतसिंह उसी दिन, युरोपियन पोशाक में, तथा 'राजगुरू' उनके खानसामा की पोशाक में, [सैकड़ों पुलिस वालों की आखों में धूल झोंक कर लाहौर से चम्पत हो गए थे। स्वर्गीय चन्द्रशेखर 'आजाद', मथुरा के चोबे बने हुए, अपने 'यात्रियों' के साथ थे।]

(प्रथम दृश्य)

स्थानः—एक बड़े रेलवे स्टेशन के बाहर।

(स्टेशन के फर्स्ट क्लास गेट के बाहर धीरे धीरे लोग एक तरफ इकट्ठे होते जा रहे हैं। आने-जाने वाले मुसाफिर कभी २ चकित होकर उनकी ओर देखने लग जाते हैं। गेट के बाहर खड़ी हुई मोटरों की संख्या शनैं २ बढ़ती जा रही है।)

(भीड़ में एक जोशीला गाना गाया जाता है)

जमीं बदली जमा बदला हवा बदली जमाने की,

बदल जा चर्ख१ कज२ तू भी न कर कोशिश मिटाने की।

तराशे जा रहे हैं बेल बूटे जो पुराने थे,

कलम की जा रही हैं टहनियां सय्याद३ ख़ाने की।

कलीसा४ शक्ल काबे५ में मुब्दिल६ होता जाता है,

मिली जाती है सूरत गंगो जमजम७ के दहाने की।

वही इज्जत वही हशमत वही ताक़त गुज़िश्ता फिर,

वही हां हां वही प्रताप अकबर के जमाने की।

कहो बिजली ख़ुदावन्दाने८-लन्दन से ज़रा जा कर,

न छानेंगे कभी अब ख़ाक तेरे आस्ताने९ की

(गेट के बाहर आज पुलिस का विशेष प्रबन्ध मालूम होता है। भीड़ में कुछ लोग काले झण्डे लिये हुए हैं। कालिज और स्कूलों के छात्र भी काफी संख्या में इकट्ठे हो गये हैं। कुछ कुली एक ओर बैठे बातें कर रहे हैं)

१—आकाश, २—टेढ़ा, ३—शिकारी का घर, ४—गिरजा-घर, ५—काबा—मुसलमानों का तीर्थ-स्थान, ६—बदलना, ७—काबे के समीप एक जलाशय, जिसे मुसलमान गंगा जी की भांति पवित्र मानते हैं, ८—अंग्रेजी सरकार, ९—घर।

एक कुली:—(दूसरे कुली से) सद्दी के।

सद्दीके:—हां !

पहला कुली:—आज यह क्या मामला है ? ये कालिजां दे बाबू लोग इतनी बड़ी तदाद में क्यूं जमा हुए ने एत्थे ? (भीड़ की ओर इशारा करके) और किसी किसी के हाथ में तो झण्डे भी हैं। मगर ये काली झण्डियां क्यू उठाई है इन लोगों ने ?

सद्दी के:—(कुछ सोचकर) आज कोई बड़ा लीडर आ रहा मालूम होता है। और··

तीसरा कुली:—(बीच में टोक कर) अरे नहीं, तू तो यूंही बका करता है। जमादार को बुलाया था कल छोटे टेशन मास्टर ने (धीरे से) वह जमादार को कहता था कि विलायत से साहब लोग आयंगे।

सद्दीके:—अच्छा कई दिन हुए जब भाटी गेट के बाहर भी जल्सा हुआ था। उसमें कांग्रेस वालों ने लक्चर दिये थे। वो तो कहते थे कोई 'सामन क्मीशन' नाम का साहब विलायत से आयेगा ।(घबराते हुए चौथे कुली शादी का प्रवेश)

शादी:—अबे ओ सद्दीके ज़रा-सुन तो। (तीनो उस के पास जाते हैं।

सदी के:—(शादी को घबराहट में देख कर हंसी से) क्यों ? क्या बात है, किसी सवारी से झगड़ा होगया क्या ? या कोई माल हाथ लग गया ?

शादी:—(उसी मुद्रा में) अबे, तुम्हें तो मज़ाक सूझ रहा है। आज यहां न जाने क्या होने वाला है।

दूसरा कुली:—(घबराकर) ऐसी क्या बात है ? बता तो ?

शादी:—बात क्या बताऊं, आज तो सारे टेशन पर पुलिस ही पुलिस भरी हुई है। पुलिसकप्तान, कई कई सारजंट, दरोगे, सभी हैं। टेशन मास्टर के दफ्तर में और कई गोरे पुलिस अफ़सर भी भरे हुए हैं।

सदी के:—(आतुरता से) तो, मैं फिर जाकर मेहरा साहब से पूछ आऊं, कि क्या मामला है ? (उठने की कोशिश करता है।)

शादी:—(उसका हाथ पकड़ कर) मैं सब पूछ आया हूं। आज तो रब्ब ही खैर करे।

(सामने की भीड़ काफ़ी बढ़ गई है, कई हज़ार आदमी होंगे। दूर से काले झण्डे उठाए हुए एक और जुलूस सा आरहा है। लोग ज़ोर २ से नारे लगा रहे सुनाई देते हैं। पुलिस के सिपाही चौकन्ने होकर चारों तरफ़ देखने लगे हैं।)

शादी:—वह सरदार दारोगा है ना हमारी टेशन की पुलिस का?

सदी के:—हां, वही स्याल कोट वाला ना?

शादी—हां! वही स्याल कोट वाला। (धीरेसे) वह मेहरा साहब से कह रहाथा, कि आज न जाने टेशन पर क्या हो। पुलिस कप्तान ने बन्दूक वाले सिपाही बुलाये हैं। ६ नं० प्लेट-फ़ारम पर डेढ़ सौ ब्लोची सिपाही लाठियों से तय्यार बैठे है। कप्तान का हुकम है, कि अगर ये कांगरेस या कालिजों के लड़के कुछ गड़ बड़ करें तो फ़ौरन लाठी मार कर भगा दो।

सदीके—(अचम्भे मे) गड़ बड़ कैसी? ये क्यों गड़ बड़ करेंगे?

शादी—(व्यंग से) सदी के, तूभी है पुरानी नसल का गधा! (सब हंसते हैं) अबे लाहोरे में रहते हो, तुम्हें दुनिया की भी कुछ खबर है।

सदी के—(चौसंसे) बच्चू तीन जमात पढ़ लिये हो, इसी से तुम हम लोगों को बेवकूफ़ बताते हो। कहीं अगर मेरे अब्बा को, रावलपिण्डी के डाके में पुलिस ने फंसाकर, चौदह साल को जेल न भिजवा दिया होता, तो मैं भी तेरे जितना तो जरूर ही पढ़ लेता। (बात बदल कर) मगर पहले असली बात बताओ।

शादी—हमारे मुल्क में विलायत से अंग्रेज भेजे हैं, बाद शाहने। उन्हें यह काम सौंपा गया है कि वो हिन्दुस्तान के तमाम

बड़े २ शहरों मे जाकर मशूर२ आदमियों से मिलें और यहां के सब हालात लिख कर लेजाये। वो लंगा बादशाह को यह बताएंगे कि हिन्दुस्तान अभी आजादी पाने के क़ाबिल हुआ है या नहीं।

सद्दीके :—इसमें झगड़े की कौन सी बात है? यह तो मेरे समझ में आई नहीं—

शादीः—(रोक कर)हां, हां, सुनो तो सही बे पहले! (कुछ ठहर कर) जब हिन्दुस्तान के लीडरों को पता चला कि विलायत से अंग्रेज़ इस काम के लिये आरहे हैं। तो उन्होंने कहा कि यह तो धोका है। पहले तो...(उसी समय पीछे से कोई आवाज़ देता है)—कुली! कुली! ए कुली

शादीः—(पीछे मुड़कर खड़े होते हुए)आया साहब! आया हजूर!

(शादी किसी बाबू के पास दौड़ कर जाता है, और दो तीन मिनट बाद उसके साथ वापिस आ जाता है, शादी के हाथ में कोई पोटली देकर)

बाबू:—अच्छा! मैं अब घर जारहा हूं। मेरी ड्यूटी तो रात को ८ बजे से आये गी। खन्ना साहब को ये दे देना।

शादीः—(याचनापूर्वक) बाबू जी! आपका एक मिन्ट और लगेगा जरा इस साद्दीके और सुल्तान को बता दीजिये, ये सब क्या मामला है?

बाबू:—(पतलून की जेब में हाथ डाल कर चारों तरफ़ देखते हुए) अरे बात क्या है। पहले तो अंग्रेजों ने यह कहा कि जर्मन

जंग हम जीत जायेंगे तो हिन्दुस्तान को आजाद कर देंगे। जब लड़ाई जीत गए तो फिर हिन्दू—मुसलमान को लड़ा कर बहाना ढूंढने लगे। और कहने लगे कि तुम आपस में मिल कर कोई स्कीम पेश करो तो हम मान लेंगे। इधर हिन्दू मुसलमानों ने आपस में मिल कर समझौता कर लिया, और मोतीलाल नेहरू, मौलाना मुहम्मद अली वगैरा ने मिल कर 'नेहरू रिपोर्ट' तैयार करके दी तो अब अंग्रेज फिर अपने वायदे से भाग रहा है। अब ये साइमन कमीशन जो आज आ रहा है। इसको तमाम मुल्क ने बाइकाट कर रक्खा है। इसे हर शहर में काले झण्डे दिखाये गये है। लाहौर में भी आज एक बहुत भारी जुलूस निकल रहा है जो बाद में यहीं पर आकर खत्म होगा। जुलूस के लीडर ला० लाजपतराय होंगे।

सदीके:—क्यों बाबू जी, ये काले झण्डे क्यों दिखाते है। क्या गोरे ज्यादा चिड़ते हैं इनसे ?

बाबू:—भाई, काले झण्डे तो मातम की निशानी है ! इनके दिखाने पर तो कई जगह झगड़े हो गये। पुलिस ने लाठी और गोली चला कर लोगों को मार २ कर भगा दिया। मगर हर जगह दिखाये जरूर गये यह काले झण्डे।

सदीके—(प्रश्नात्मक मुद्रा बनाकर) मगर इनसे मतलब क्या निकलेगा ! बाबू—मतलब तो सिर्फ इतना ही है कि हिन्दुस्तानी यह जाहिर करना चाहते हैं कि हमें यह कमीशन मन्जूर

नहीं है। अब तो आजादी चाहिये। इन बातों से अब हमें बेवकूफ़ नहीं बनाया जा सकता। गवर्नमेण्ट तो इ॰ तरह की तिफ्ल तसल्लियां देकर टाइम 'पास' करना चाहत है।

(नैपथ्य में गाया जा रहा है)

कह दो इन लन्दन वालों से,
कह दो इन योरुप वालों से।
हम हिन्द के रहने वाले हैं,
और आफ़त के परकाले हैं,
ना झगड़ें भारत वालों से,
इन आफ़त के परकालों से,
कह दो इन लन्दन वालों से
नित नए कमीशन आते हैं,
हम को नाहक बहकाते
क्यों टकराते बदहालों से,
हम जूझ रहे भूचालों
कह दो इन लन्दन वालों

स मय (पुलिस का एक बड़ा दल आ अन्दर से बाहर तक, दोनों तरफ़ सिपाही लाइन ब जाते हैं। पुलिस के बड़े अफ़सर पिस्तौलें लटकाए, की पेटिया डाले घूम रहे हैं। सामने से एक वह आकर उसी भीड़ में मिल जाता है। सिपाहियों

पा॰
पकी
चले
लम्बा
। ग्स॰
हता है,
भी हमे
ाइयों को
कोई रंज
गी मूरत में
वर्मेण्ट का
न होनें दिया

बड़ी मजबूत लाठिया हैं, जिनके सिरों पर लोहा और, पीतल मढा हुआ है। जुलूस और पहली भीड़ मिल कर तो बहुत बड़ी भीड़ हो गई हैं। भीड़ बराबर नारे लगा रही है। एक आदमी स्टूल पर खड़ा होकर कुछ गाने लगा है, बाकी हजारों आदमी उसके बाद बोलते हैं। बहुत जोश से हाथ ऊपर उठा २ कर बोल रहे हैं।)

रखणी नहीं रखणी सरकार जालिम नहिं रखणी।
आई थी व्यौपार करण को,
जहांगीर की शरण गहन को
बनी गले का हार जालिम नहीं रखणी......
(हजारों आदमियो की भीड़ भी साथ बोलती जाती है)
रखणी, नही रखणी सरकार, जालिम, नहीं रखणी।
जुलियां वाले बाग के अन्दर,
होगारे कई हजार जालिम नहीं रखणी ...

सहीके:—एक आवाज भीड़ को चीरती हुई आती है)
गोरे मा गांधी की (हजारों कण्ठों से आकाश को गुंजा देने
बाबू:—भाल निकलती है) जय हो !
दिखा (चिल्ला कर) साइमन कमीशन ..
और गे—मुर्दाबाद !
मगर (चिल्ला कर) साइमन कमीशन...
सहीके—(प्र
लेगा ! वापिस जाओ ! (आसमान गूंज उठता है। सारे
यह जाहि...चली सी मच जाती है। दफ्तरों मे काम करने

वाले क्लर्क, आने जाने वाले मुसाफिर, कुली, तांगे वाले, और दूसरे हजारों लोग, भीड की ओर देखने लगते हैं। पुलिस के कई सिपाही और अफ़सर भीड के पास पहुंचते हैं।)

पुलिस अफ़सर:—(आगे खडे हुए आदमियों को लक्ष्य करके) आप लोग, महरबानी करके यहां मजमा न करें। आपको पता है कि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने दफ़ा १४४ लगा रक्खी है, और इस तरह का मजमा इकट्ठा करना खिलाफ़ कानून है। (आदेश देने की मुद्रा मे) इस लिये एस० पी० साहब ने मुझे आपसे यह कहने भेजा है, कि आपकी हरकत खिलाफ़ क़ानून है। आप लोग यहां से चले जाय।

एक व्यक्ति:—(जिसके सर पर सफ़ेद पगडी और शरीर पर लम्बा कोट चुस्त पाजामा है आगे बढ कर कहता है।)
अच्छा ! यह तो हम अच्छी तरह समझते हैं। एस० एस० पी० से कह दो, कि लाजपतराय कहता है, मजमा नहीं हटेगा, और तुम्हारे क़ानून की भी हमे परवाह नहीं है। जो कानून हमारी जाइज़ कार्रवाइयों को बन्द करना चाहता है, हमे उसके टूटने का भी कोई रंज नहीं है।

पुलिस अफ़सर—(शान्ति से) लाला जी, आज किसी भी सूरत में मि० स्कॉट इस चीज़ को पसन्द नही करेंगे। गवर्मेण्ट का हुक्म है, कि कमीशन के खिलाफ़ कोई मुज़ाहरा न होनें दिया

जाय। और जहां लोग न मानें वहां उन्हें सख्ती से दबा दिया जावे।

ला० लाजपतराय—(जोश और क्रोध मिश्रित भाव से) लाजपतराय को इन धमकियों से नहीं डराया जा सकता। जो अपनी जानें हथेली पर लिये फिरते हैं, वह किसी भी जुल्म के सामने सर नहीं झुका सकते। एक नहीं, अगर हज़ार 'स्काट' भी आ जाएं, तब भी लाजपत राय यहीं डटा रहेगा। और साइमन कमीशन के मेम्बरों को जाहिर कर देगा, कि तुम्हारी आमद हम हिन्दुस्तानियों के लिए दुख का समाचार लाई है। हम विदेशी हुकूमत की ग़ुलामी से निजात हासिल करना चाहते है, और कमिशन, हमारी आजादी की घड़िया नजदीक लाने की बजाय, बरसों देर करने के लिये भेजा जा रहा है। (कुछ शान्त होकर) मि० स्कॉट से कह दीजिए कि साइमन कमीशन का बाइकाट जरूर होगा और हम कांग्रेस के निर्णय के अनुसार उसका वैसा ही इस्तक़बाल करेंगे जैसा कि होना चाहिऐ।

(पुलिस अफसर वापिस मुड़ता है, लाला जी एक स्टूल पर खड़े होकर भीड़ को लक्ष्य करके कुछ कहना प्रारम्भ करते हैं।)

ला० लाजपतराय:—अजीज दोस्तो और भाइयो! आज फिर एक बार पंजाब की आजमाइश होने जा रही है। ब्रिटिश सरकार की लाठी और गोलियां आज फिर हमारा इन्त-जार कर रही हैं। इन्सानियत से वहशीपन फिर टकराना

चाहता है। याद रखिये ! (भाव पूर्ण ढंग से) जुल्म करने वाले से जुल्म बर्दाश्त करने वाला ज्यादा क़सूरवार होता है। हिन्दुस्तान की आज़ादी की मांग को ब्रिटिश सरकार सख्ती से कुचल देना चाहती है। क्या हम सख्ती, वहशीपन और जुल्म के सामने उन सरों को झुका दें जिन्हें ज़ालिम 'डायर' भी नहीं झुका सका। क्या हम डर कर पीछे हट जाएं। (भीड़ में से आवाजें आती हैं) हर्गिज नहीं ! हर्गिज नहीं !!

(ला० लाजपतराय कुछ देर ठहर जाते हैं)

ला० लाजपतराय.—तो फिर हमें फैसला करना चाहिये कि चाहे लाठियां पड़ें, चाहे गोलियां चलें, क़दम पीछे नहीं हटायेंगे, मैदाने जंग से मुंह न मोड़ेंगे। एक बात जो मैं आप लोगों से खास तौर पर कहना चाहता हूं, वह ये है कि मक्कार पुलिस हमें हर तरीके से जोश दिलाने और हमारे जज्बात को भड़काने की कोशिश करेगी। ताकि हम तशद्दुद करने लगें, और गवर्मेंट को हम पर खुल कर अन्याय करने का मौक़ा मिले। (व्यङ्ग से) इस मजमे में सी० आई० डी० के भी कई भाई हमारे साथ मिले हुए होंगे, जो मजमे को भड़काने और पोशीदा बातें जानने के लिये यहां आये हुए होंगे। आप उनसे भी जरा होशियार रहें। (गंभीर होकर) आप किसी भी हालत में तशद्दुद न करें। वर्ना कांग्रेस का मक्सद पूरा नहीं होगा।

हमें त्याग और बलिदान का रास्ता अख्त्यार करना है, और यही हमारे लीडर महात्मा गांधी का हुक्म है।

(धीरे से खासकर)

गाड़ी से उतर कर जब वे लोग प्लेट फ़ार्म पर क़दम रक्खेंगे, तभी हमें नारे शुरू कर देने हैं। और कमीशन के मेम्बरों के यहां से जाने तक जारी रखने हैं। आज 'प्लेट फ़ार्म' पर पब्लिक को जाने से रोक दिया गया है। लेकिन फिर भी, मुमकिन है, वहां भी कोई उनका हमारी तरह स्वागत कर सके।

आख़ीर में, मैं आप लोगों से दरख़्वास्त करूंगा, कि अगर आप अपने मुल्क से अंग्रेजी हुकूमत को ख़त्म करना चाहते हैं, तो आपको कई 'जलियांवाले बाग़' और सन १८५७ के मन्ज़र देखने के लिये तय्यार रहना चाहिए। भाइयो, अपने फ़र्ज़ को समझो, और उस पर ठीक तरीक़े से अमल करो। हमारा आज का प्रोग्राम, शान्ति पूर्वक, साइमन कमीशन की आमद के ख़िलाफ़, मुज़ाहरा या प्रदर्शन करना है। (स्टूल से नीचे उतर जाते हैं)

(फ़स्ट क्लास गेट के बाहर वाले बराडे के बाहर भी एक नई लाइन सिपाहियों की खड़ी की गई है। कुछ सिपाही प्रदर्शनकारी समूह के समीप ही २५-३० गज के फ़ासले पर आकर ठहर गये

हैं। इनके पास भी लाठिया हैं। ऐसा मालूम देता है, कि पुलिस कई तरफ से प्रदर्शनकारियों को घेर लेना चाहती है। एक अंग्रेज अफसर कई वार घूर २ कर प्रदर्शनकारियों को देख चुका है। वह फिर गेट के बाहर खड़ा होकर इधर देख रहा है। दूसरे कई हिन्दुस्तानी अफसर भी उसके साथ हैं, उङ्गली से इशारा करके कुछ समझा रहा है। बहुत क्रोधित मालूम होता है। गाधी टोपी धारी, तथा कोट पतलून वाले, हजारों नवजवान बूढे, एक अनुशासन में खड़े हैं। बहुत से छोटी उमरों के छात्र छात्राएं भी शामिल हैं। जिनकी बगलो मे किताबे दबी हुई साफ दिखाई देती हैं।)

ला० लाजपतराय:—(एक पास खडे हुए सज्जन से) गाड़ी तो अब आने ही वाली है, हम सब को तय्यार हो जाना चाहियें। सिर्फ ३ मिनट बाकी है, 'तूफ़ान मेल' आज ठीक टाइम पर आ रहा है।

दूसरा व्यक्ति:—मेरा ख्याल है, हमे कुछ आगे बढ़ कर प्रदर्शन करना चाहिये। आपका क्या ख्याल है?

ला० लाजपतराय:—तजवीज तो आपकी बड़ी अच्छी है, मगर पुलिस ने खारदार तार लगा दिये हैं। इस वक़्त आगे बढ़ने से तो रास्ता बिल्कुल बन्द हो जायगा। गाड़ी के आ जाने के बाद हमे आगे बढ़ना चाहिए।

(गाडी के आने की धड धड धड धड़ की आवाज और इंजिन की जोरदार सीटी सुनाई देती हैं। पुलिस के बैठे हुए सिपाही

तैयार होकर खड़े हो जाते हैं, और अपनी लाठियों को सम्भालने लगते हैं। अन्दर बाहर पुलिस अफसरों की सीटियां साफ सुनाई देती हैं। प्रदर्शनकारियों में एक जोश की लहर सी दौड़ जाती है। हजारों निगाहें प्लेट फार्म की ओर देखने लगती हैं। उसी समय भारी भीड़ में से एक जोर की आवाज़ उठती है।)

'साइमन कमीशन!' .....

(हजारों कण्ठ बोल उठते हैं) वापिस जाओ।

(फिर वैसी ही आवाज) 'साइमन कमीशन'...

(हजारों कण्ठ) 'गो-बेक' (Go Back)

(बार २ 'साईमन कमीशन, गो बैक' के नारों से स्टेशन गूंजने लगता है। नारे उत्तरोत्तर और तेज़ होते जाते हैं। प्रदर्शनकारियों में सब से आगे ला० लाजपतराय हैं। जिनके हाथ में एक बड़ा काला झण्डा है। उनके पीछे हजारों जोशीले पंजाबी हैं। प्रदर्शनकारी धीरे धीरे आगे बढ़ना शुरू करते हैं, और गेट के बाहर वाले बरांडे में घुसना उनका लक्ष्य है। नारे बराबर लग रहे हैं। पुलिस अफसर इधर उधर दौड़ रहे हैं, काफी परेशान मालूम होते हैं। प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ता देख सब इन्सपैक्टर ईश्वरसिंह कुछ सिपाहियों के साथ उधर दौड़ता है।)

(ईश्वरसिंह का प्रवेश)

ईश्वरसिंहः—(प्रदर्शनकारियों को लक्ष्य करके, ज़ोर से) आप लोग आगे न बढ़ें, बरांडे से बाहर रहिए। (लाठी धारी सिपाहियों की ओर देख कर) जल्दी दौड़ो, और भीड़ के आगे

एक लाइन में खड़े हो जाओ। ताकि लोग आगे न बढ़ सकें। (एक सिपाही की ओर उंगली उठा कर) रामलुभाया! देखो तुम उधर चले जाओ, कोई आदमी तारों को न लांघे। उन काले झण्डे वाले लड़कों को पीछे हटाओ। खैर दीन! (दूसरे सिपाही से) धकेल दो पीछे, इन लोगों को। (जनता में से एक आवाज)

'साइमन···कमीशन'···

(हजारों कण्ठ चिल्ला उठते हैं) वापिस जाओ।

नारे और जोश से लगने शुरू हो जाते हैं, और प्रदर्शन-कारी, सिपाहियों की पंक्ति को तोड़ कर आगे बढ़ना प्रारम्भ करते हैं। बरामदे के अन्दर, गेट के बाहर सीढ़ियों पर खड़े हुए दो अंग्रेज पुलिस अफसर, प्रदर्शनकारियों के जोर को देख कर घबरा उठते हैं। काले झण्डे लिए हुए, जोशीले नवजवान, निकल निकल कर बरामदे में घुस आते हैं, और गगन भेदी नारों से सारा स्टेशन गूंज उठता है। इस समय हर एक के मुख से निकल रहा है—'साइमन गो बैक', 'साइमन गो बैक'। अन्दर की तरफ, गाड़ी प्लेट फार्म पर रुक चुकी है, बहुत से आदमी कुछ आद-मियों को घेरे हुए हैं। उनमें से कइयों के गले में हार पड़े दिखाई देते हैं। सब इन्सपैक्टर ईश्वरसिंह मुश्किल से भीड़ से निकल और, फिर बराडे में आकर, अंग्रेज पुलिस अफसरों से कहता है।)

ईश्वरसिंह:—हुजूर भीड़ काबू से बाहर हुई जा रही है।

(घृणा मिश्रित क्रोध से)

अंग्रेज अफसर:—टुम क्या करटा है ? ये लोग कैसे ईंदर घूसटा है ?

(उङ्गली से इशारा करके) पीशे हटाओ ! 'पुश देम बैक' ! (ला० लाजपतराय की ओर इशारा करके) हू इज दा लीडर ? चार्ज हिम एटवन्स ।

(कुछ लोग जिनके गले मे हार पडे हैं, प्लेट फार्म के फस्ट क्लास गेट से गुजर कर बाहर आ रहे हैं, उनके साथ बडे २ अफसर भी हैं । पुलिस दोनों तरफ क़तार बाधे खडी है । उधर बाहर खडी हुई जोशीली भीड उन्हें देखते ही जोर शोर मे नारे लगाती हुई, आगे बढने और काले झण्डो से उनका 'स्वागत' करने को कटिबद्ध मालूम होती है । उन्हे पचासों सिपाही और गोरे सारजेन्ट पीछे धकेलने की असफल चेष्टा कर रहे हैं ।)

ला० लाजपतराय:—(आगे बढ कर) 'साईमन, गो बैक"

समस्त प्रदर्शनकारी:—(जोर से आसमान गुंजाते हुए) 'साईमन गो बैक' ।

(प्रदर्शनकारियो की भारी भीड काले झण्डे लिये, जिनके आगे की पंक्ति मे, ला० लाजपतराय साफ दिखाई दे रहे हैं, पुलिस का तारों वाला घेरा तोड कर, नारे लगाती हुई आगे बढ़ती है । दो गोरे पुलिस अफसर क्रोध भरी मुद्रा मे किसी हिन्दुस्तानी पुलिस अफसर से कुछ कह रहे है ।)

हिन्दुस्तानी अफ़सर:—सरदार ईशरसिंह !

ईशरसिंह:—(पीछे मुड़ कर) हाज़िर हुआ, जनाब !

हिन्दुस्तानी अफ़सर:—(क्रोध से) मि० स्काट का हुक्म है, कि अगर ये लोग इस तरह बाज़ नहीं आते, तो फौरन 'लाठी चार्ज' से इन्हे मुन्तशिर कर दो। 'मि० सान्डर्स' की भी यही राय है।

ईशरसिंह:—बहुत अच्छा ! मैं तो हुक्म की इन्तजार मे ही था। बिना लाठी चार्ज किये, ये लोग नहीं मान सकते। (सिपाहियों को लक्ष्य करके) इस मजमे को फौरन 'लाठी चार्ज' करके पीछे हटा दो। (उंगली का इशारा करके) मोहम्मद सद्दीक़ ! क्या देखते हो, करो 'लाठी चार्ज'। इन हरामज़ादों को मार २ कर पीछे हटा दो। नाक में दम कर रक्खा है। कानून को कुछ समझते ही नहीं हैं, ये लोग।

हिन्दुस्तानी अफ़सर:—(उगली से इशारा करके) ये तमाम काले झण्डे भी छीन लो इनसे। जो गड़बड़ करे फ़ौरन गिरफ्तार करके हवालात में ठूंस दो। (दांत पीस कर) जल्दी करो।

(लाठी चार्ज का हुक्म पाते ही, पचासों सिपाही और गोरे सारजेन्ट प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर टूट पड़ते हैं, और निर्दयता पूर्वक लोगों को मारना शुरू कर देते हैं। भीड़ मार खाकर चारों तरफ़ को

भागना शुरू करती है। कुछ लोग उसी तरह खड़े नारे लगाते रहते हैं।

ला० लाजपतराय:—(भीड़ को लक्ष्य करके) भाइयो! भागो मत, अपनी २ जगह डटे रहो! कायरों की तरह भागने से मर जाना अच्छा है। इस तरह डर कर भागना कायरों का काम है। तुम" "(उसी समय उनके शरीर पर लाठियां पड़नी शुरू हो जाती हैं। और वे गिर पड़ते हैं। सिर से खून बहने लगता है। दो तीन साथी उन्हें सहारा देने की कोशिश करते हैं उन पर भी कई २ लाठियां पड़ती हैं। वे भी घायल हो जाते हैं।)

ला० लाजपतराय:—(घायल अवस्था में) भाइयो! हिम्मत न हारो, इस जालिम सरकार को दिल खोल कर जुल्म कर लेने दो, याद रक्खो! मेरे शरीर पर पड़ी एक २ चोट इस जालिम सरकार के ताबूत की कील होगी।" जालिमों को इस जुल्म की सजा अवश्य भुगतनी पड़ेगी।

(ला० जी के गिर जाने से जनता को जोश आता है। नारे अभी तक लग रहे हैं।)

(भीड़ में एक व्यक्ति, भागने वालों को रोकते हुए)

एक व्यक्ति:—(जोर से) भाइयो! भागो मत, देखो हमारे 'शेरे पंजाब' ला० लाजपतराय किस बहादुरी से डटे हुए हैं, और तुम बुजदिलों की तरह, जान बचाकर भाग रहे हो। क्या इसी प्रकार हिन्दुस्तान को आजाद कराओगे?

जालिम अंग्रेजी सरकार को क्या इसी बल-बूते पर मुल्क से निकालना चाहते हो ? (भीड़ कुछ रुकती है)

सुखदेवः—गुरू ! वह देखो ,लाला जी पर पुलिस लाठियां बरसा रही है, सैकड़ों सिपाही होंगे। (कुछ दूर जाकर भीड़ फिर नारे लगा रही है, आवाज़ साफ़ सुनाई देती है। 'जालिम हुकूमत बरबाद हो', 'अंग्रेजी हुकूमत मुर्दाबाद' के नारे चारो तरफ गूंज रहे हैं।

राजगुरुः—(जोश से चिल्लाता है) 'टोडी बचा'...

हजारों कण्ठः—'हाय ! हाय !!'

महावीरसिंहः—(रंज से) अफ़सोस ! लालाजी जख्मी होकर गिर पड़े है। नौजवानों धिक्कार है तुम्हारे जीवन को (जोश में) तुम्हारे बुजुर्ग इस तरह पीटे जाएं, और तुम देखते रहो ? पंजाब की शान इस तरह मिट्टी में मिला दी जाय, और तुम्हारा खून न खौले ?

तीसरा व्यक्तिः—सुखदेव, पहचाना इनमे से उन दोनों को ?

सुखदेव.—(धिक्कारता हुआ) क्या होगा इससे ? वही जालिम स्काट और 'सांडर्स हैं दोनों।

महावीरसिंहः—(छाती पर हाथ मार कर) सुखदेव राज ! ना-उम्मीदी की बातें मत करो। महावीरसिंह के खानदान में कायर नहीं, दिलेर पैदा होते है। हमारी नस २ में देश-

भक्ति का जज्बा कूट २ कर भर दिया जाता है। लाला लाजपतराय पर लाठी चार्ज का हुक्म देने वालों को उनकी करतूतों का मजा चखाए बिना चैन से नहीं बैठूंगा। अगर लाला जी को कुछ हो गया तो

सुखदेव:—(महावीरसिंह की ओर इशारा करके) वक्ती जोश में आकर यूं ही कुछ मुंह से निकालने का वक्त नहीं है। (धीरे से) सी० आई० डी० से खबरदार!

(पुलिस के सिपाही लाठिया मारते २ थक कर रुक गए हैं। दो जवान लड़किया बुरी तरह घायल होकर बेहोश हो गई हैं सरों से खून बह रहा है।)

(प्लेट फार्म से बाहर आने वाले आदमियों को लेकर, बाहर खड़ी हुई मोटर, हार्न बजाती हुई तेजी से स्टेशन से बाहर निकल जाती है, जनता भाग कर इधर उधर छुप जाती है। बहुत से व्यक्ति पडे रह जाते हैं। कुछ व्यक्ति, ला० लाजपतराय को वहा से उठा कर, एक मोटर में बिठा बाहर होजाते हैं। बाकी घायलों को उठा २ कर पुलिस एक लारी में पटक रही है। कुछ बच्चे और स्त्रिया भी दर्द से बुरी तरह रो रहे हैं।)

(दूसरा दृश्य)

नवम्बर १९२८ की एक रात:—

[लाहौर की घनी अबादी का एक मकान। ऊपर के एक कमरे में बैठे हुए कुछ व्यक्ति किसी गुप्त मन्त्रणा में संलग्न हैं। गठे हुए शरीर का एक व्यक्ति, जिसे यह लोग 'पंडित जी' कह कर सम्बोधित कर रहे हैं, गरम चादर लपेटे एक पलग पर तकिये के सहारे, गंभीर विचार में मग्न हैं। अन्य नवयुवक, जो सब उससे कम आयु के हैं, दूसरे पलंग पर बैठे हैं। पास ही पड़ी हुई कुर्सी पर एक सूट धारी नवयुवक बैठा है, जिसकी पगड़ी पलंग पर रक्खी है। दूसरी कुर्सी पर एक युवती बैठी हुई कुछ सोच रही है। आयु २०-२५ के लगभग मालूम देती है। कुछ समाचार पत्र और पत्रिकाएं कोने में रक्खी हुई मेज पर पड़ी हैं। रात के १०॥ से अधिक का समय हो चुका है, सर्दी काफी पड़ रही है।]

पण्डित जी:—इस घटना से तो जरूर सारे देश में खलबली मच जायगी। और मुझे इसका भी पूरा यक़ीन है, कि पुलिस हमें मौके पर गिरफ्तार भी नहीं कर सकेगी। (कुछ ठहर कर मुस्कराते हुए) वाकई, भगतसिंह की स्कीम

कमाल की है। और अगर किसी वजह से पकड़े ही गये तो उस सूरत में तुम्हारी क्या योजना है भगतसिंह ?

भगतसिंह:—पण्डित जी! मैं पकड़े जाने और मरने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं करता। मेरा तो यह पुख्ता यक़ीन है, कि क़ुर्बानियों के बग़ैर 'ज़ालिम हुकूमत' की जड़ें नहीं हिलाई जा सकतीं। और क़ुर्बानियों के लिये हिन्दुस्तान के नवजवान ही तैयार हो सकते हैं। हमें आयरलैण्ड, फ्रांस और रूस वग़ैरा की तारीख़ें साफ़ बता रही हैं, कि हमारा क्या फ़र्ज़ है। अगर कुछ आदमियों को फांसी हो भी जाती है, तो इससे मुल्क के नवजवानों मे जोश ही बढ़ेगा। यह तो आप भी अच्छी तरह समझते हैं, कि भारत के नवजवानों में, देश भक्ति के जज़्बात भड़काए बग़ैर, कोई ताक़त अंग्रेज़ नौकरशाही के खिलाफ़ कामयाब नही हो सकती। फिर यह भी एक खुली हक़ीक़त है कि 'कुछ मामूली इन्सानों को कुचल कर सारी क़ौम को ख़त्म नही किया जा सकता।' मेरा तो यह अटल विश्वास है कि अगर लोगों के हौसले और विचार ऊंचे उठाने हैं, तो हमें अपनी क़ुर्बानी दे देने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिये।

पण्डित जी:—तुमने अभी २ जो कहा था कि एक ख़ास बयान अख़बारात में छपा है वह क्या था?

भगतसिंहः—यह ही तो एक ऐसी चीज़ थी जिसने मेरी नींद हराम कर रक्खी है। रात दिन मेरे कानों में वह बयान गूंजा करता है। मैं हमेशा अपने मन में शर्मिन्दा सा रहता हूं। वह हम सब के लिए एक चैलेंज है। उसे पढ़ कर हमारी गर्दन शर्म से झुक जाती है। उसका जवाब बातों से नहीं दिया जा सकता। भारत के नवजवानों का इम्तिहान है उस बयान में। और फिर पंजाब के नव-जवानों को तो ख़ास तौर पर मुख़ातिब किया ही गया है उसमें।

पंडित जीः—(विस्मय से) आखिर हम भी तो सुनें ऐसी क्या चीज है?

भगतसिंहः—उसी बयान के सिलसिले पर ही तो आज सब कामरेड इकट्ठे हुए हैं। वरना आप तो जानते ही हैं कि आज कल सी० आई० डी० भूत की तरह पीछे पड़ रही है। (कुछ देर ठहर कर)

(जेब से एक कागज़ निकालता है)

भगतसिंह—(एक अखबार का कटा हुआ भाग आगे करके) यह देखिये नवजवानों की गैरत को चैलेंज करने वाला बयान!

पंडित जीः—हां! हां! तुम ही पढ़ो, सब सुनेंगे।

भगतसिंह—(कागज को सीधा करके) यह तो आपको पता ही है कि चाहे हम लोग लाला जी के राजनीतिक विचारों से

विरोध रखते हैं। किन्तु फिर भी उनकी इज्जत हमारे दिलों में किसी से कम नहीं है। मैं तो उस दिन के लाठी चार्ज को देखकर ही एक खास फैसला कर चुका था। इस बयान ने मेरे दिल में एक आग सी लगा दी है। और वह आग उस वक़्त तक नहीं बुझ सकती, जब तक इस बयान में किए गये सवाल का अमली तौर पर ठीक जवाब नहीं दे दिया जाता। लालाजी से हमें गहरी अक़ीदत है। वे हिन्दुस्तान के नवजवानों के लिए मशाल थे। उन्होंने कौमी वक़ार को बरक़रार रखने का अमली सबक सिखाया था।

(कुछ शान्त होकर)

उनकी मौत की खबर से तमाम मुल्क में मातम ही नहीं छा रहा बल्कि एक भूचाल सा आगया है। इस सिलसिले में लालाजी की मौत का खबर पाकर, एक सिंहनी ललकार उठी है। एक फटकार है नवजवानों के लिए! हम इस बयान से अपनी आखें बन्द करके नहीं बैठ सकते। दूर! बंगाल से हमें ललकारा गया है, बहुत सीधे साधे लफ्ज़ हैं।

सुनिये! श्रीमती सी० आर० दास लिखती हैं। वैसे तो बयान काफी लम्बा है मगर उसके आखिरी अल्फ़ाज़ सुनिए (मुद्रा बदल कर) "क्या मुल्क के नवजवान अभी तक मौजूद

हैं। मैं एक औरत की हैसियत से इसका साफ़ २ जवाब चाहती हूं।"

(कुछ देर तक सब निस्तब्ध बैठे रहते हैं,)

पंडित जी:—(शोकातुर मुद्रा में) निस्सन्देह, यह बयान लोगों की आंखें खोल देने के लिए काफ़ी है। क्या मुल्क के नवजवान अभी तक मौजूद है ! (ठंडी सास छोड़ते है) सुखदेव राज ! (एक तीसरे नवयुवक को संबोधन करके) क्या समझे ? कुछ आता है समझ में ?

सुखदेव राज:—(गरदन नीची किए हुए ही) हां पंडित जी, खूब समझ गया। "क्या मुल्क के नवजवान अभी तक मौजूद हैं' का साफ मतलब मेरी समझ में यही आता है, कि अगर मुल्क के नवजवान अभी तक मौजूद हैं तो उन्हें इस क़ौमी बेइज्जती का बदला लेना चाहिए। एक अदना से अंग्रेज़ ने, हमारे मुल्क के इतने बड़े नेता को, जिस पर देश के नवजवान जान देने का दावा करते हैं, इस तरह बेदर्दी से पीट कर बेइज्जत ही नहीं किया, बल्कि उनको जान तक लेने का कारण बना। इससे ज्यादा कौमी बेइज्जती और क्या हो सकती है ? अगर हम कांग्रेस की नीति पर विश्वास नहीं करते तो इसका मतलब अंग्रेज़ी सरकार को हर्गिज यह नहीं लगाना चाहिये कि हम उन नेताओं की इज्जत नहीं करते, या हम उन्हें दुनियां के किसी भी बड़े नेता से कम समझते हैं। वे हैं तो भारत माता के

लाल ही, हम लोगों के बुजुर्ग ही। देश को आज़ाद कराने और नौकर शाही को मुल्क से निकालने के लिए जो बलिदान लाला जी या दूसरे चोटी के नेताओं ने किए है, उन्हें कोई भी नवजवान, चाहे वह इन्कलाब पार्टी मे हो चाहे सोशलिस्ट, नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकता। हमारा और उनका मकसद क़तई एक है, रास्ते ही तो जुदा २ हैं। हमने उनहीं की जिन्दगियों से यह पाठ पढ़ा है।

हमें हर हालत में इस बयान का सही सही जवाब देना चाहिऐ। और अंग्रेजी-नौकर-शाही को बता देना चाहिए, कि इस तरह का गुन्डापन करने वाला, बड़े से बड़ा अफ़सर भी, अपने जुर्म की सज़ा पाए बिना नहीं रह सकता। भले ही अंग्रेजी हुकूमत इस नीच काम को, जो सांडर्स ने किया है, उसके फ़र्ज़ की अदायगी कहती रहे। किन्तु हिन्दुस्तान के नवजवानों की निगाह में, यह काम एक लुटेरों के गिरोह द्वारा, एक ऊँची हस्ती को कत्ल कर देने से किसी सूरत मे कम नहीं है। हम अंग्रेजी लुटेरों के इस फे़ल को बर्दाश्त नहीं कर सकते। मेरी राय साफ़ है! मौत के बदले मौत।

(क्रोध पूर्ण मुद्रा मे) लालाजी की मौत के बदले, स्काट और सांडर्स जैसे, हज़ार जालिम अंग्रेजों के बध से भी मेरी तसल्ली नहीं हो सकती।

नवयुवती :—(बारीक आवाज में) कॉमरेड सुखदेव राज ने जो विचार प्रगट किए हैं, उनसे कौन स्वाभिमानी भारतीय इन्कार कर सकता है। हमारी पार्टी का मक़सद, कांग्रस की तरह, शान्ति-प्रिय और वैधानिक उपायों द्वारा तो राज-सत्ता ग्रहण करना या स्वाराज्य प्राप्त करना है नहीं। हमारा तो काम भारत के जन साधारण, मजदूर, किसानों और शोषित वर्ग में क्रान्ति पैदा करके, भारत से अंग्रेजी लूट को समाप्त करना है। फिर चाहे इस उद्देश की पूर्ति के लिए हमें कैसे भी कठोर उपाय ग्रहण करने पड़ें। यदि हम इस कसौटी पर कस कर अपनी समस्या का हल सोचें, और सोचना ही चाहिए, तो फिर हम सब की राय एक ही है। अब तो निर्णय करने की बात सिर्फ यह है कि स्काट और सांडर्स को इस दुष्कर्म की क्या सजा दी जाय और कब ?

भगतसिंह —(बीच ही मे टोक कर) इस सिलसिले मे यह भी ध्यान रखना चाहिए, कि हमारे काम से जन साधारण और जालिम हुकूमत का ध्यान, हमारी क्रान्तिकारी भावना की ओर अवश्य खिंच जाए, और भविष्य मे किसी भी अंग्रेज को ऐसी हरकत करने की हिम्मत ही न हो सके। इस प्रकार हम कोई क्रान्तिकारी कदम उठाकर 'डबल परपज सर्व' कर सकेंगे। (अर्थात दो उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे) एक तरफ तो अंग्रेज नौकरशाही को उसकी कमीनी हरकतों की सजा दूसरी ओर भारत के नवयुवकों मे जागृति की लहर

दौड़ाना। और अगर कोई पकड़ा भी जाता है, तो उस सूरत में, लाज़मी तौर पर, फांसी की सजा होगी। किन्तु खुली अदालत में मुकद्मा चलने पर अपने क्रान्तिकारी बयानात से देश के नवजवानों में, अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ़, नफरत का जज्बा पैदा करने, और नौकरशाही की चालों का परदाफाश करने का अच्छा मौक़ा मिल सकेगा। इस प्रकार कुर्बानियां देकर हम हज़ारों नवजवानों के दिलों में क्रान्तिकारी भावनाओं को उत्पन्न कर सकेंगे। यदि आज नहीं तो कल यही क्रान्तिकारी नवयुवक, भारत से अंग्रेज़ नौकरशाही को समाप्त करके जनता की हुकूमत स्थापित करने में कामयाब होंगे।

नवयुवती :— (कुछ हल्की सी मुस्कराहट से) यह तो सब कुछ ठीक है मगर आप में से किसी कामरेड ने अभी तक श्रीमती सी० आर० दास के सवाल के दूसरे हिस्से पर विचार नहीं किया। वे जो कहती हैं कि मैं एक स्त्री के नाते इसका साफ़ २ उत्तर चाहती हूं "इसके बारे में आपके क्या विचार है।"

(कुछ ठहर कर)

मैंने एक स्त्री की हैसियत से इस पर पूरी तरह विचार किया है। श्रीमती सी० आर० दास एक वृद्ध स्त्री अवश्य हैं, किन्तु उनके विचार अभी तक भी वृद्ध हुए मालूम नहीं होते। उन का सारा जीवन भारत में अंग्रेज, नौकरशाही

के भारतीय जनता पर होने वाले अत्याचार देखने में बीता है। स्वर्गीय सी० आर० दास का जीवन देश को ऊंचा उठाने और क्रांतिकारियों के मुकदमों की पैरवी करते २ बीता था। जिस ज़माने मे क्रांतिकारियों के मुकदमों की पैरवी करते हुए वकील बैरिस्टर डरा करते थे। उस समय भी मि० दास ने ही, बड़ी निर्भीकतापूर्वक बड़े २ षड्यन्त्र केसों मे, सरकारी पक्ष को, नाकों चने चवाए थे। श्रीमती सी० आर० दास को वे सब बातें याद हैं! वे भारत के नवजवानों की ओर से कुछ निराश सी होगई मालूम होती है। वर्ना उन्हें यह पूछना न पड़ता कि "भारत के नवयुवक अभी तक मौजूद हैं।"

जहाँ वे यह कहती हैं कि मैं एक स्त्री की हैसियत से इसका साफ़ २ जवाब चाहती हूं "वहाँ उनका आशय स्पष्ट है कि भारत के नवजवान अगर सो गए हों तो वे अपनी नींद से जग जांय और इस प्रकार का राष्ट्रिय अपमान बर्दाश्त न करे। साथ २ उनका यह भी आशय मालूम होता है, कि यदि भारत के नवजवान इस जवाब को न देसकें तो भारत की नवयुवतियाँ इस प्रश्न का उत्तर देकर उनकी आंखें खोल दें। उन्हे तब तो कुछ शर्म आयगी ही।

भगतसिंह:—मैं आपना आशय बहुत अच्छी तरह समझ गया हूं। हमारा जवाब साफ़ है, और वह भी अमली रूप मे। हमें चाहिए कि हम लाला जी की मौत के ठीक एक महीने

बाद जालिम स्कॉट को उसके दफ्तर से निकलते ही गोली से उड़ादें। इस विषय में मैंने सब इन्तजाम कर लिए हैं। बाकी स्कीम अब पंडित जी से मिलकर पूरी करने और उनके मशवरे के मुताबिक अमल करने की बात बाकी थी, वह भी आज पूरी समझिये मेरा पुख्ता यकीन है कि हम योजना के अनुसार अपना काम पूरा कर सकेंगे। फिर मथुरा के चौबे और चेले बनकर, लाहौर की सी० आई०डी० की आंखों में धूल झोंक कर, बाहर चले जाना तो पंडित जी के बांएं हाथ का काम है।

(कुछ ठहर कर)

भगतसिंह:—और फिर हमने 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' की तरफ़ से जो चिट्ठी प्रकाशित की है, उससे तो सारे ब्रिटेन मे खलबली मच गई है। इस बात को पढ़ कर कि हर महीने की १७ तारीख को किसी न किसी बड़े अंग्रेज अफ़सर का क़त्ल किया जाया करेगा, पंजाब की पुलिस और सरकार के छक्के छूट गये हैं। बड़े २ इन्तजामात किए जा रहे हैं।

पण्डित जी:—इतना ही नहीं, बड़े २ अंग्रेज अधिकारियों ने १७ तारीख को अपनी २ छुट्टी रखनी, और ड्यूटी पर न जाने का निर्णय किया है। साधारण जनता में भी खलबली है। वे भी कहती सुनाई देती है, कि चूंकि १७ ता० को ला० लाजपतराय का स्वर्गवास हुआ था, इसलिए बमपार्टी

वालों ने यह ऐलान किया है।

भगतसिंह:—यह चिट्ठी जब शहरों में जगह २ चिपकी पाई गई तो सरकारी मशीनरी एक दम तेज हो गई, और तमाम शहर में से उसको ढूंढ २ कर दीवारों पर से उतारा गया। उसकी इस हरकत से जनता को और भी विश्वास हो गया, कि वाकई यह सच्ची बात है, इसी लिए इनसे सरकार डरने लगी है।

पण्डित जी:—तो फिर यह ही ठीक रहेगा। इस प्रकार सब से पहला वार, लाला जी पर लाठी बरसाने वाले पर ही होने से, सारे देश मे तूफान सा आ जायगा। और हमारी पार्टी की भी सरकार पर धाक जम जायेगी।

नवयुवती:—पण्डित जी! भगतसिंह जी की योजना बड़ी सुन्दर है। मैं समझती हूं इस पर अच्छी तरह कार्य हो सकता है।

(मुस्करा कर) इस योजना को कार्यान्वित करने की जुम्मेदारी, जब कामरेड भगतसिंह स्वयं अपने ऊपर ले रहे हैं, और उनकी सहायता को तैयार है, आप फिर तो सोने पर सुहागा है। हम अवश्य सफल होंगे। जहां आप जैसे अचूक निशाने बाज महारथी हों, वहां हमे क्या चिन्ता?

(पण्डित जी की ओर देखकर मुस्कराती है)

पण्डित जी.—(गम्भीरता से) तो यह ही तय रहा कि भगतसिंह और राजगुरु इन्द्रपाल की सहायता से १५ दिसम्बर को

चार बजे स्काट को ठिकाने लगाएं। और इनकी रक्षार्थ मैं डी० ए० वी० कालिज की लायब्रेरी में रहूं और यदि कोई इनका पीछा करे तो उसे खत्म कर दूं।

राजगुरु:—(बीच ही में) हम लोग डी० ए० वी० कालिज के होस्टल में, पहले से तैयार, मोटर साइकिल पर चढ़ कर नौ दो ग्यारह हो जायं। और फिर आप हमें स्टेशन पर मथुरा के चौबे की शकल में मिलें, और चेलों को लाहौर से निकाल ले जायें (हंसता है)।

भगतसिंह:—(मुस्करा कर) अच्छा! मेरे सुपुर्द सब सामान कल रावी के टापू में देखा जा सकता है।

नवयुवती:—मिस्टर भगवतीचरण भी हमें उसी स्थान पर कल रात को ११ बजे मिलेंगे। उन्होंने मुझ से कहा था कि मैं आप लोगों को सूचित कर दूं।

(उसी समय किसी ने विशेष प्रकार की मुंह से सीटी बजाई। जिसे सुन कर सारे नवयुवक एक एक करके नीचे उतरे, और कुछ दूर जाकर घोर अन्धकार में विलीन हो गये। वहां रह गई अकेली नवयुवती और पण्डित जी।)

(कुछ देर बाद)

(नवयुवती धीरे २ गा रही है)

कोई दिन में नम्दा कसा चाहता है।
हुकूमत का बिस्तर बधा चाहता है।
उठो नवजवानों कि पौ फट रही है,

चिरागे हुकूमत बुझा चाहता है।
हुकूमत के लाशे को जल्दी उठाओ,
अफ़ूनत× से भेजा फटा चाहता है।
उतर जायेंगे यूनियन-जैक* सारे,
कि अब कौमी झण्डा उठा चाहता है।

(तीसरा दृश्य)

दिन के साढ़े तीन बजे होंगे, दिसम्बर की १७ तारीख है, सन है १६२८। लाहौर के डी० ए० वी० कालिज की इमारत काफी बड़ी है। सड़क की दूसरी तरफ़ 'लॉ कालिज' का नया होस्टल आदि हैं। एक तरफ कोर्ट रोड है, जिस पर, डी० ए० वी० कालिज के सामने ही, लाहौर की पुलिस का प्रधान कार्यालय है। सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस मि० स्काट और डिप्टी सुप० पुलिस मि० साडर्स नियमित रूप से यहां आते हैं, और पुलिस कार्यवाहियों का संचालन करते हैं। लॉ कॉलिज के होस्टल के सामने पुलिस हैड क्वार्टर के बराबर 'डिस्ट्रिक्ट कोर्ट' आदि कई इमारतें हैं। इस प्रकार लोअर माल को पार करके आने वाली कोर्ट रोड यहां चौरस्ता बनाती है। 'लॉ कॉलिज होस्टल' और कचहरियों के बाद विख्यात 'लोअर माल रोड' है। जिसके एक तरफ़ गवर्नमेण्ट कालिज आदि इमारतें तथा दूसरी ओर लाहौर का प्रसिद्ध 'गोल बाग' है। लोअर माल रोड का बड़ा चौराहा यहां से साफ दिखाई देता है। डी०ए०वी० कालिज और लॉ कालिज होस्टल के आगे, सड़क

× सख्त बदबू

* अंग्रेजी झण्डा

के साथ २ छोटे २ घास के प्लाट बने हुए हैं। जिस में प्रायः कालिज के छात्र बैठे हुए दिखाई देते हैं।)

इस समय भी दो नवयुवक डी० ए० वी० कालिज तथा लॉ कालिज होस्टल के बीच वाली कोर्ट स्ट्रीट के सिरे पर बैठे बातें कर रहे हैं। दोनों की आयु २०-२५ के लगभग मालूम होती है।)

पहला नवयुवकः— अभी तो तीन बजकर २५ मिनट हुए हैं। काफ़ी समय है।

दूसराः हां! मगर हमें तो कुछ पहले ही आजाना चाहिए था ना! पंडित जी भी कालिज की लायब्रेरी में ही हैं। कुछ मिनट बाद वे भी अपनी जगह पर मौजूद होंगे।

पहलाः - (उत्सुकता से) तुम्हारे पास (ठिठक कर) रिवाल्वर में तो पूरी गोलियां है ना?

दूसराः—(हंसी की मुद्रा में) अच्छा, तो बिना पूरी तैयारी के ही उस जालिम का कामतमाम करने थोड़ा ही आए हैं तुम्हारे सामने ही तो मारा था। और भी कई फालतू कारतूस डाल लाया हूं। (जेब पर हाथ रख कर) इसमें सब कुछ तैयार है।

(दोनों का ध्यान बार-बार पुलिस हैडक्वार्टर की तरफ़ जाता है। कभी-कभी चौकन्ने से होकर भी इधर-उधर देखने लगते हैं।)

पहला नवयुवक-(गंभीरता से) देखो राजगुरु! चाहे कुछ भी हो जाए, मगर आज यह काम अवश्य पूरा करना है। पूरा एक

महीना हुआ, इसी तारीख को इस मनहूस स्कॉट के कारण, लालाजी हम से जुदा हुए। हम हिन्दुस्तानियों को कुत्ते से भी बदतर जिन्दगी गुजारने पर मजबूर कर दिया है इन गोरा-शाही ने।

दूसरा नवयुवकः—और तो और इन हिन्दुस्तानी अफसरों को तो देखो, इनमें भी तो खुद-दारी का जज्बा नही रहा। कितने गिर गए हैं ये लोग। अपनी कौम की जलालत को किस तरह बर्दाश्त कर लेते है ये।

पहला नवयुवकः—यही तो इस नौकर शाही का सब से बुरा असर है। अंग्रेजों की गुलामी करते करते हमारे दिमाग़ों मे गुलामी भर गई है। और फिर सरकारी मुलाजिम तो ज्यादातर बहुत ही गिर गये है। वर्ना देखो तो सही कि देश के इतने महान नेता को इस प्रकार लाठियों से पिटवाया जावे कि वह मृत्यु को प्राप्त होजाय, और सारा देश उसके ग़म मे आंसू बहाता रहे। मगर इन नौकर शाही के गुलामों के कान पर जूं भी न चले? ये उसी प्रकार हिन्दुस्तानी अवाम को चूसते रहे! और विदेशी हुकूमत को खुश करने के लिए अपने ही भाइयों पर दिन रात मनमाने अत्याचार करते रहे? इनका इलाज यही है। (पतलून की जेब पर हाथ रख कर) जब आज की तरह हर मौके पर अत्याचारियों का इस प्रकार बदला लिया जाता रहेगा, तभी इस नौकर-शाही की आंखे खुलेंगी।

हिन्दुस्तान के मजदूर और किसानों की निजात इन खून चूसने वालों से इसी तरह कराई जा सकती है। हर वह शख्स, जो हमारे मुल्की वक़ार को मिट्टी में मिलाना चाहता है, फिर चाहे वह अंग्रेज हो या हिन्दुस्तानी, इसी प्रकार सजा पाने के काबिल है। परवाह नहीं, अगर हमें इस कोशिश में कुर्बानी भी देनी पड़े।

मगर राजगुरु मेरा यह अटल विश्वास है, कि कुछ क्रान्तिकारियों को फांसी पर चढ़ाकर, या लाला लाजपतराय जैसे महापुरुषों को लाठी से पिटवा कर, अंग्रेज नौकर-शाही हमारे कौमी जज्बात को नहीं कुचल सकती। रूस में भी इसी प्रकार के जुल्म किए जाते थे। मगर ज्यूं ज्यूं विप्लव-वादियों को जार शाही ने कुचलने की कोशिश की, वे उतने ही उग्र होते गये। और आखिर एक ऐसा तूफ़ान उठा कि आनन-फ़ानन में जार शाही को सफ़ा हस्ती से मिटा दिया गया। आज रूस में ज़ार-शाही का न.मोनिशान भी बाक़ी नहीं है।

दूसरा नवजवान:—भगतसिंह ! तुम्हारा ख्याल बिल्कुल दुरुस्त है। हमारा लक्ष्य हिन्दुस्तान में गोरा-शाही की जगह ऐसी हुकूमत कायम करना हर्गिज़ नहीं हो सकता, जिसमे आजकल की तरह जनता को चूसा जाय। और वो बेत्रसी की जिन्दगी बसर करती रहे। (घड़ी देखकर) चार बजने मे अब दस मिनट बाकी हैं। अब और सब बातों को खत्म

करो और अपने काम पर ध्यान दो।

पहला:-(हैरत से) ऐं! पौने चार से भी ज्यादा बज गये, अच्छा? मुझे तो बातों में टायम का भी ध्यान नहीं रहा। तो ··

(दोनों धीरे से खड़े होने लगते हैं) (दोनों नवयुवक खड़े होकर धीरे धीरे चलने लगते हैं। कुछ कदम चलकर फिर लौट आते हैं। बार बार पुलिस हैडक्वार्टर की ओर देख लेते हैं। सड़क पर से कभी-कभी कोई मोटर तांगा या साईकिल गुजर जाती है। वे फिर चलने-चलते रुक गए।)

पहला नवयुवक:—(दूसरे के कन्धे पर हाथ रख कर समझाते हुए) तुम्हें रात वाली स्कीम तो अच्छी तरह याद है न गुरु?

दूसरा:—(दृढता से) हां, मुझे अपने फ़र्ज़ का अच्छी तरह ध्यान है।

पहला:—'स्काट' ठीक चार बजे दफ्तर से उठ जाता है। कुछ मिनट उसे अपनी मोटर साइकिल, जिसे कि नौकर बाहर निकाल कर खड़ी करता है, लेन और 'स्टार्ट' करके बाहर आने में लग जाते हैं। तुम तो देखते ही हो, कि पिछले हफ्ते में, वह रोज़ाना चार बजकर पांच मिनट पर हमारे कालिज के सामने वाली सड़क पर आता है। यहां से उसे अपनी 'मोटर साइकिल' को 'लोअर माल' के चौराहे पर जो यहां से पचास साठ गज से कुछ ही ज्यादा दूर होगा, मोड़ना पड़ता है। हमने यह भी देख ही लिया है कि उसकी रफ्तार १० मील फी घन्टा से ज्यादा नहीं

होती। इसलिए अब हमें तैय्यार होजाना चाहिये। चौराहे वाले उस सिपाही से तो हमें सतर्क रहना ही है, मगर हमें और भी हर एक के मुक़ाबले के लिए तैयार रहना है।

दूसरा नवयुवक:—हां, मुमकिन हो सकता है कि हमारे गोली छोड़ने पर, आवाज होते ही, कोई स्कॉट की मदद को आए। और हमें मुकाबला करना पड़े। मैं तो स्कॉट को पहचानता नहीं हूं तुम्हें ही उसे पहचान कर पहले वार करना है। जैसा कि रात सोचा गया था। महावीरसिंह के इशारे का भी ध्यान रखना है।

पहला नवयुवक:—वह तो मैं सब देख लूंगा। (कुछ ठहर कर) हमें इस बात की जरा भी फ़िक्र नहीं है कि हम किस प्रकार बच निकलेंगे। हमें तो अपने शिकार को जहन्नुम पहुंचाना है। इस कोशिश में यदि हमारा बलिदान भी हो जाय तो चिन्ता नहीं। अगर हम अपनी स्कीम के मुताबिक़ काम करने में कामयाब होजाते हैं। तब तो कोई बात ही नहीं है। अगर ऐसा न हो सका तो फिर हमारा प्रोग्राम पहले ही तय है। जो बचे, वह समय पर अपना बयान दे। वह भी उस सूरत में, जबकि गिरफ्तार कर लिया जाय।

दूसरा:—(घड़ी देख कर) अब चार बजने में सिर्फ दो ही मिनट रहते हैं। पंडित जी भी (इशारा करता है) वह देखो, अपनी जगह पर तैयार खड़े हैं। वह हमारा पीछा करने वाले को डी० ए० वी० कालिज-होस्टल की इमारत की ओर

बढ़ते ही समाप्त कर देंगे। मैं भी तुम से कुछ दूर ही हट जाता हूं। तुम्हारा वार होते ही मैं गोली छोड़ना प्रारम्भ कर दूंगा। और तुम पर वार करने वाले का मुकाबला करूंगा। और फिर प्रोग्राम के अनुसार डी० ए० वी० कालिज के होस्टल में हमें सब कुछ तैयार मिलेगा ही।

पहला नवयुवकः—(ज़ोर से धीरे से) मेरी यह ज़बर्दस्त ख्वाहिश है कि हमारा शिकार आंखों के सामने ही खत्म हो जाय। मैं हर्गिज़ यह नहीं चाहता कि वह हस्पताल में जाकर मरे। इससे मेरी तसल्ली नहीं होगी।

(दोनों नवयुवक एक दूसरे से अलग हट गए हैं उन में कुछ ही गज़ का अन्तर होगा। पहले का एक हाथ पतलून की दाईं जेब में और दूसरा कमर पर है। दोनों बहुत चौकन्ने होकर चारों तरफ़ को देख लेते हैं। उनकी निगाह कभी कभी उस तीसरे नवयुवक की ओर भी जाती है. जिसकी ओर कुछ देर पहले इशारा किया गया था।)

(डी० ए० वी० कालिज के सामने पुलिस हैडक्वार्टर में एक पीतल का घंटा लगा हुआ है जिसे एक आदमी समय २ पर बजाता रहता है। उसी घंटे में ज़ोर २ से चार बजाए गए हैं। आवाज काफी दूर तक सुनाई देती है। चार बजने की आवाज़ सुनते ही दोनों नवयुवको ने दूर २ खड़े हुए भी किसी खास मक्सद से एक दूसरे को देखा और फिर निगाहें फेरलीं।)

(कुछ मिनट बाद)

(पुलिस हैडक्वार्टर से धीरे२ फट-फट करती हुई एक

मोटर साइकिल निकली ही है। दरवाजे पर खड़े हुए बन्दूक-धारी सिपाही ने, साइकिल पर बैठे हुए अंग्रेज़ को, जो कोई ऊंचा पुलिस अफसर मालूम होता है, पैर में पैर मारते हुए, दाएँ हाथ से सलामी दी। साइकिल की चाल बहुत धीमी है! साइकिल सवार, सर पर छज्जेदार चमकीली टोपी लगाए, अपनी पूरी खाकी वर्दी में, जिस के कोट की छाती और कन्धों पर कई प्रकार के बैज और निशान लगे हुए हैं, आगे को छाती निकाले जमा हुआ मोटर साइकिल की गद्दी पर बैठा है। सड़क पर कुछ गज़ चलकर उसने फिर दाएँ हाथ से मोटर साइकिल के किसी पुर्जे को घुमाया। शायद रफ्तार कुछ तेज़ करना चाहता है। उसी समय गोली चलने की भीषण आवाज के साथ सनसनाती हुई एक गोली उसकी बगल में आकर लगती है। लॉ कॉलिज के सामने खड़ा हुआ पहला नवयुवक पिस्तौल ताने गोलिया छोड़ते हुए कह रहा है।)

पहला नवयुवकः— (अति क्रोध से दांत पीस कर) यह ले! लाला लाजपतराय पर लाठी बरसाने का मजा! (दूसरी गोली छूटने पर) तेरा काम तमाम ही करके दम लूंगा।

ए, लो! कुछ दूर खड़े हुए दूसरे युवक ने भी गोली दागी। गोरा पुलिस अफसर मोटर साइकिल से नीचे गिर पड़ा। पहले युवक को, दूसरा नवयुवक वापिस मुड़ने का, हाथ से इशारा कर रहा है। पहले नवयुवक ने क्रोध में बड़बड़ाते हुए दो तीन फायर और किये)

पहला नवयुवकः—(फुर्ती से पीछे लौटते हुए) ! फिनिश ! काम अब जाकर तमाम हुआ है । (चारों तरफ़ चौकन्ना होकर देखता है, दोनों युवक ला कॉलिज होस्टल और डी० ए० वी० कॉलिज के बीच वाली स्ट्रीट में घुस कर भागने लगते हैं।)

गोलियों की आवाज चारों तरफ दूर दूर तक गूंज जाती है। चारों तरफ के लोग चौकन्ने होकर आशंका से देखने लगते हैं। सड़क पर गोरे पुलिस अफसर की लहूलुहान हुई लाश तड़प रही है। पास ही मोटर साइकिल पड़ी है। उसी समय लोअर माल के चौराहे का सिख सिपाही उस तरफ़ दौड़ता है। उसने दोनों नवयुवकों को भागते देख लिया है।)

सिपाहीः—(बेतहाशा भागते हुए) पकड़ो२ कातिलों को पकड़ो ! खून ! एस० पी० साहब का खून कर दिया ! पकड़ो !

पहला नवयुवकः—(भागते २ पीछे मुड़कर) खबरदार ! ..... जान प्यारी है तो हमारा पीछा मत करो । हम किसी हिन्दुस्तानी सिपाही की जान नहीं लेना चाहते। (ऊपर की तरफ़ गोली छोड़ते हुए) ठहर जाओ !

(सिपाही भाग रहा है। उसी समय दूसरी ओर से एक गोली उसके पेट में आकर लगती है । और वह घायल होकर सड़क पर गिर जाता है।)

(सिपाही के पीछे एक और पुलिस अधिकारी भी भागा आ रहा है। शायद इसने पुलिस हैडक्वार्टर से निकलते ही गोली चलने की

आवाजें सुनी होंगी। यह मामूली सिपाही मालूम नहीं होता।

दोनों नवयुवक हवा होगए। वे डी० ए० वी० कालिज के होस्टल की तरफ दौड़ रहे हैं। उसके समीप ही पहुंच गये हैं। पीछा करने वाले को ललकारती हुई एक कर्कश आवाज सुनाई देती है)

आवाज़:—चाननसिंह !...... क्यों कुत्तों की मौत मरना चाहते हो?

(पीछा करने वाला व्यक्ति चिल्लाता हुआ भाग रहा है) दौड़ो! दौड़ो!! पकड़ो! वह देखो! वही हैं खूनी। (उंगली का इशारा करता है।)

(आवाज फिर आती है)

ख़बरदार! आगे बढ़ने की कोशिश की तो खत्म कर दिए जाओगे!

(पीछा करने वाला ठिठक कर चारों तरफ़ देखता है। क्षण भर रुक कर फिर भागना प्रारम्भ करता है, उसी समय गोली चलने की आवाज आती है। और नवयुवकों का पीछा करने वाला सब-इन्सपेक्टर चाननसिंह मुंह के बल ज़मीन पर गिर कर बेहोश हो जाता है। और उसके शरीर में से खून बहने लगता है। दोनों नवयुवक डी० ए० वी० कालिज के होस्टल में घुस कर नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। सड़क पर कोई ज़ोर से चिल्ला रहा है।) मि० सांडर्स को गोली से उड़ा दिया गया। दौड़ो! दौड़ो!! पकड़ो!!!

बारदौली

बारदौली के पात्र

(कालः—सन १९३०-३१)

स्थान—भारत के प्रसिद्ध गुजरात प्रांत का 'बारदौली' ताल्लुका।

सरदार वल्लभभाई पटेलः—गुजरात-केसरी, प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता।

ब्रेल्सफोर्डः—इंगलैण्ड के विख्यात ब्रिटिश-मजदूर-दली नेता तथा लेखक। जिन्होंने उन दिनों, भारत भ्रमण के समय 'बारदौली ताल्लुके' का दौरा किया था।

मीराबहनः—गांधी जी की प्रसिद्ध चेली। जो उन दिनों सत्याग्रह आश्रम में रहती थीं। राष्ट्रीय कार्यकर्त्री।

अमृतलालः—बारदौली 'स्वराज्य आश्रम' के संचालक।

डायाभाईः—एक केन्द्र की युद्ध-समिति के प्रधान।

मगनलालः—कांग्रेस सेवा दल के अधिकारी।

जेठाभाईः—एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता।

हरगोविन्दः—कां० सेवा दल के अधिकारी।

कान्तिलालः—सेवा दल का एक स्वयंसेवक।

सादिकः—पुलिस का सिपाही।

सावित्रीबाईः—स्वराज्य आश्रम बारदौली के स्त्री विभाग की अध्यक्षा और स्त्री दल की प्रमुख अधिकारिणी।

सुन्दरबाईः—एक राष्ट्रीय-कार्यकर्त्री तथा कवि।

सबइन्सपैक्टर, पुलिस के सिपाही, किसान, ग्रामीण तथा पुलिस के अनेकों सिपाही, राष्ट्रीय कार्यकर्ता जन, साधारण और किसान।

बारदौली

सन् १६२८ में, कलकत्ता कांग्रेस के अवसर पर, ब्रिटिश सरकार को १ वर्ष का 'अल्टीमेटम' दिया गया था कि वह ३१ दिसम्बर १६२६ तक, यदि नेहरू रिपोर्ट के आधार पर, भारत को 'औपनिवेषिक स्वराज्य' नहीं देगी, तो फिर भारतीय-कांग्रेस का उद्देश, भारत के लिए, 'पूर्ण स्वाधीनता' प्राप्त करना होगा। भारत के नवयुवक प० जवाहरलाल नेहरू और श्री सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में काफ़ी जागरूक हो चुके थे। किसानों और मज़दूरो के संगठन भी अच्छे ढग पर चल रहे थे। भारतीय राजनीति मे यह वर्ष एक विशेष महत्व रखता है। सन १६२६ में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ। देश की भावनाओं के अनुरूप, कांग्रेस सभापति-पद के लिये, युवकों के हृदय-सम्राट, जवाहरलाल नेहरू को चुना गया। कांग्रेस का सचालन, एक प्रकार से, वृद्ध भारत से तरुण भारत के हाथों में आया। बाप के बाद बेटे को कांग्रेस का अध्यक्ष-पद दिया जाना कांग्रेस के इतिहास में पहली चीज थी। और, यह भी पहला ही अवसर था कि देश मे सब से अधिक सम्मानित पद, इतनी कम आयु वाले युवक को दिया गया।

कांग्रेस का 'लाहौर अधिवेशन' देश में जागृति का सूचक था। ३१ दिसम्बर को रात के बारह बजकर १ मिनिट पर 'पूर्ण स्वाधीनता' की घोषणा कर दी गई।

'२६ जनवरी का दिन 'स्वाधीनता दिवस' के रूप में मनाया गया। उस दिन समस्त देश में जल्से हुए और कांग्रेस के 'घोषणा-पत्र' को जनता ने दोहरा कर प्रतिज्ञा ली कि हम पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिये कांग्रेस के आदेशों का पालन करेंगे। महात्मा गांधी तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन से पत्र व्यवहार कर रहे थे। कुछ दिन बाद ही कौन्सिल बहिष्कार प्रारम्भ हुआ। और केन्द्रीय तथा प्रांतीय धारा सभाओं के समस्त राष्ट्रीय सदस्य त्यागपत्र देकर बाहर आ गये। श्री विट्ठलभाई पटेल भी केन्द्रीय असेम्बली की प्रधानता को त्याग कर राष्ट्रीय संग्राम में सम्मिलित हो गये। पंडित मदनमोहन मालवीय ने समस्त देश का दौरा करके विदेशी वस्त्रों के बाइकाट का कार्यक्रम बनाया।

गांधी जी ने सर्वप्रथम नमक क़ानून भंग करके, 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' प्रारम्भ किया। कुछ समय बाद आंदोलन को चलाने का अधिकार कांग्रेस ने गांधी जी को दे दिया। १२ मार्च सन ३० को गांधी जी अपने ७९ साथियों सहित-'डांडी' पर नमक बना कर नमक कानून तोड़ने निकले। गांव गांव में ठहरते २ वे ५ अप्रैल को 'डांडी' पहुंचे। वहां उन्होंने नमक बीन कर नमक कानून भंग किया। इसके बाद ही उन्होंने समस्त देशवासियों से नमक बना कर 'नमक कानून' तोड़ने की अपील की। गांधी जी उसी दिन रात को पकड़ लिये गये। फिर क्या था! सारे देश में नमक कानून टूटने लगा। जगह २ अत्याचार और अमानुषिक व्यवहार पुलिस की

ओर से जनता पर किये जाने लगे। गाधी जी की गिरफ्तारी से समस्त देश में हड़तालें हुईं। तमाम काम बन्द हो गये। जगह २ जुलूस और जल्सों पर पुलिस का लाठी प्रहार और गोली वर्षा होने लगे। के अतिरिक्त, नित्य कठोर 'आर्डिनेन्सों' द्वारा जन-आन्दोलन को कुचलने की असफल चेष्टा की गई। विलायती व्यापार हज़ारों घायल हुए और सैकड़ों मारे गये। गाधी जी की योजना के के अनुसार धरसाना आदि के नमक गोदामों पर सत्याग्रहियों ने धावे किये। लोग हजारों की संख्या में धावा करने आते और पकड़े जाते थे। १३ अप्रैल सन ३० को पेशावर मे गोली काड हुआ, जिसमें सैकड़ों आदमी हताहत हुए। गढ़वाली सैनिकों ने निहत्थी जनता पर गोलिया चलाने से इन्कार कर दिया, जिसके फलस्वरूप उन्हें कठोर यन्त्रणाए दी गईं।

विलायती कपड़े और शराब की दुकानों पर व्यापक धरना दिया जाने लगा। सारे देश की व्यवस्था छिन्न भिन्न होगई। साधारण कानूनों के अतिरिक्त, नित्य कठोर 'आर्डिनेन्सों' द्वारा जन-आन्दोलन को कुचलने की असफल चेष्टा की गई। विलायती व्यापार चौपट होगया। समाचारपत्रों पर कठोर नियन्त्रण और प्रतिबन्ध लागू कर दिया गया। हर प्रान्त में भीषण विद्रोह को दबाने के लिए पुलिस के अत्याचार अपनी चरम सीमा को पहुच गए। समस्त राष्ट्रीय नेता पकड़ कर जेलों में बन्द कर दिये गये। कांग्रेस खिलाफ कानून संस्था करार देदी गई। जगह जगह उसकी सम्पत्ति नष्ट करदी गई या ज़ब्त करली गई। लंकाशायर और मानचैस्टर के वस्त्रोद्योगों को भीषण क्षति पहुची। विलायती मिलों के लाखों मज़ूर बेकार होगए।

करबन्दी आन्दोलन के लिए सर्वप्रथम गुजरात को चुना गया। गुजरात के 'बारदोली' ताल्लुके के किसानों ने असाधारण त्याग का प्रमाण दिया। वे सामूहिक रूप में गावों को खाली करके चले गये

किन्तु सरकार को १ पाई लगान देना स्वीकार नहीं किया। ८० हज़ार किसान अपना सब कुछ छोड़ कर बड़ौदा राज्य में जा बसे। इस प्रकार अकेले बारदौली ने ही पचास लाख की खड़ी फ़सलों, छै करोड़ की एक लाख सत्तर हज़ार एकड़ भूमि, और तीन करोड़ के मकानों को त्यागना स्वीकार करके भी स्वराज्य बिना लगान देना स्वीकार नहीं किया। यह सरदार पटेल के जादू का प्रभाव था। ब्रिटिश मजदूर पार्टी के नेता मि० ब्रेल्सफोर्ड ने उन दिनों 'बारदौली' का दौरा किया था। उन्होंने लिखा है कि सारे बारदौली के ग्राम सुन्सान हैं, वहा के किसान कहते हैं कि "स्वराज्य नहीं तो लगान भी नहीं।" इस प्रकार समस्त देश में जनता ने प्राणों की बाज़ी लगाकर स्वाधीनता संग्राम को जारी रखा।

औरतो और बच्चों का त्याग भी अपूर्व था। हज़ारों माताए बहिनें केसरिया बाना पहन कर धरना देने और सत्याग्रह करने निकलतीं, और हसी खुशी जेल जाती। अनेकों प्रकार की यातनाए लाठी, गोली और बलात्कार की यन्त्रणाएं इन्हें झेलनी पड़ीं। छोटे छोटे बच्चों का गोली से उड़ाया जाना तक भी सभ्य कहाने वाली 'गोरी सरकार' के राज में मामूली बात थी। अनेकों बेटियों ने बाप, स्त्रियों ने पति तथा बहनों ने भाइयों की दुकानों पर धरना देकर अपना कर्तव्य निभाया था। पुलिस को असीमित अधिकार थे। हर ओर पुलिस के अत्याचारों और लूट से त्राहि त्राहि मची हुई थी। इस आन्दोलन के दिनों में हड़तालों लाठी-प्रहारों और गोली काण्डों से अनगिनत भारतीय मारे गये और घायल हुए। समाचार

पत्रों पर इतना कठोर नियन्त्रण था कि वे सच्ची खबरें प्रकाशित नहीं कर सकते थे। प्रायः मृतों तथा घायलों की संख्या का दसवां भाग भी सरकारी रिपोर्ट में प्रकाशित नहीं किया जाता था। इतना सब कुछ होने पर भी जनता अबाध रूप से आन्दोलन में भाग ले रही थी। विद्यार्थियों ने भी अपना भाग पूरी तरह पूरा किया था।

व्यवस्थापिका सभाओं के चुनाव निकट थे। अवसरवादियों ने मैदान खाली देख असेम्बली तथा कौंसिलों में जाना चाहा। कांग्रेस ने इनका बहिष्कार कर रक्खा था। फिर भी कांग्रेस ने अपनी ओर से हर प्रान्त और केन्द्र की व्यवस्थापिका सभा के लिए हरिजनों को मनोनीत किया। सरकारी पिट्ठुओं ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया, किन्तु कांग्रेस द्वारा मनोनीत, भंगी, चमार, धोबी, नाई, कुम्हारों आदि के सम्मुख उन्हें बुरी तरह परास्त होना पड़ा।

भारत के क्रान्तिकारी भी चुप नहीं थे। लाहौर कांग्रेस से कुछ ही दिन पहले दिल्ली के पुराने किले के समीप, लार्ड इरविन, तत्कालीन वाइसराय की ट्रेन को बम से उड़ा दिया गया। यह बम श्री हंसराज वायरलैस आदि ने छोड़ा था। क्रान्तिकारियों ने सारे देश में खलबली मचा रक्खी थी। दूसरी ओर मज़दूरों की हड़तालों और देश के करबन्दी-आन्दोलन ने सरकार की आर्थिक स्थिति को डांवाडोल कर रक्खा था।

खाद्य पदार्थों तथा अन्य वस्तुओं में भीषण मन्दी आ गई थी। लोग आसानी से लगान नहीं दे सकते थे। सरदार पटेल ने इस आन्दोलन में भी गुजरात का अभूतपूर्व संगठन किया था। बारदौली समस्त भारत के करबन्दी आन्दोलन की जान था।

(प्रथम दृश्य)

(बारदौली में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया है। आज गुजरात-केसरी सरदार वल्लभभाई पटेल का भाषण होने वाला है। शाम के पाच बज चुके हैं। सभा-स्थल में काफी जनता इकट्ठी हो गई है। कई २ मील से लोग आए हैं। सभा में एक मंच बनाया गया है जिसके समीप कुछ प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता बैठे बातें कर रहे हैं।)

पहला व्यक्तिः—अभी तो सरदार पटेल के आने में बीस मिनट की देर है ?

दूसराः—कितनी ही देर क्यों न हो हम लोग तो ग्यारह मील पैदल चल कर आये हैं। बिना सरदार का भाषण सुने नहीं जायंगे।

पहलाः—इसके लिये आप कुछ नहीं कह सकते। आजकल पुलिस परछांई की तरह उनके पीछे पड़ी रहती है। जहां जाते हैं, कई २ सिपाही और दरोगे साथ चलते हैं।

दूसराः—अजी, साथ चलने की तो कोई बात नहीं। मगर वे तंग बहुत करते हैं ना। जहां कहीं बोलने खड़े हुए कि पुलिस कागज पैन्सिल लेकर पहले आ बैठती है।

पहलाः—मगर वे क्या पुलिस से डरते हैं ? ऐसी खरी २ सुनाते हैं कि सरकारी आदमी भी दांतों तले उङ्गली दबाने लगते हैं।

(भीड़ और बढ़ती जाती है। कुछ स्वयंसेवक एक तरफ पंक्ति बद्ध होकर खड़े हैं। कुछ जल्से का प्रबन्ध करने में लगे हैं। एक व्यक्ति मंच पर खड़ा होकर)

भाइयो, आप लोग शान्तिपूर्वक अपने २ स्थान पर बैठ जाये। हमे सूचना मिली है कि सरदार शीघ्र ही आने वाले हैं। (बैठता है)

(स्वयंसेवक दल के एक अधिकारी मगनलाल का प्रवेश।)

मगनलालः—(दूसरे साथी से) कहिए हरगोविन्द जी, आपके यहां कितने स्वयंसेवक भरती हो चुके हैं?

हरगोविन्दः—महाशय! मेरे यहां सात सौ व्यक्ति तो ऐसे दर्ज किए जा चुके है, जो किसी भी प्रकार पीछे नहीं हट सकते। वे सर्वस्व न्यौछावर करके भी देशसेवा करना चाहते हैं। 'धरसाना' के नमक गोदाम पर धावा करने वाले दल के लिए छांटा है हमने उन्हें।

मगनलालः—धन्य है वे लोग! आपका अपने क्षेत्र मे बहुत प्रभाव मालूम देता है।

हरगोविन्द—अजी मेरे प्रभाव का क्या बनता है? यह तो गांधी जी और नेहरू का प्रभाव है। कांग्रेस पर जनता की अटूट श्रद्धा का परिणाम है, या सरदार पटेल का जादू है।

मगनः—यह तो आपने मेरे मन की बात कह दी। सरदार पटेल का भाषण जादू ही है।

(एक व्यक्ति मंच पर खड़ा होकर 'बैठो बैठो' चिल्ला रहा है। दूसरा व्यक्ति मंच पर आकर कुछ गाने लगता है।)

फिर आज वही है प्रण मेरा।

रावी की तरल तरङ्गों में

गूंजा जो मधुर गान होकर,

भारत के कोने कोने में

फैला जो सरस तान होकर,

राष्ट्रीय-विरोधक शिविरों में

चमका जो अग्निवाण होकर,

जिसकी रक्षा अब तक की है,

अपनी सब आन बान खोकर,

अब अधिक समय तक क्या कोई, कर पाएगा शोषण तेरा।

फिर आज वही है प्रण मेरा॥

भारत आज़ाद कराने को—

भारत का वीर किसान उठे,

धनवान उठे गुणवान उठे—

मजदूर छात्र बलवान उठे,

हिन्दू मुस्लिम भाई भाई—

हर मुख से यह शुभ गान उठे,

उठ जाय दासता दुनिया से—

यदि भारतवर्ष महान उठे,

उठ, बलिदानों का असर देख, कटने को है बन्धन तेरा।
फिर आज वही है प्राण मेरा॥

(गीत समाप्त होता है। भीड़ में एक ओर भीषण कोलाहल हो रहा है। 'सरदार पटेल की जय', 'गुजरात-केसरी की जय', 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से आकाश गूंज उठता है। भीड़ में से बहुत से आदमी उठ कर खड़े हो जाते हैं। सरदार पटेल मंच पर आते हैं। और हाथ से सब को बैठने का इशारा करते हैं। जनता एक दम शान्त होकर बैठ जाती है। एक व्यक्ति खड़ा होकर कुछ कहता है)

सज्जनो! जिस महापुरुष की हम लोग इतनी देर से बाट जोह रहे थे, वे पधार चुके हैं। आशा है वे जो कुछ आदेश देंगे आप लोग उसे शान्तिपूर्वक सुनेंगे।

(सरदार पटेल खड़े होते हैं)

सरदार:—बहिनो, और भाइयो! यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आज आप लोगों के सामने आकर कुछ कहने का अवसर मिला। आप सब लोग यह तो जानते ही हैं कि अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध हमने स्वराज्य का संग्राम प्रारम्भ कर दिया है। हमारे सफल सेनानी महात्मा गांधी ने सब से पहले 'नमक-कानून' तोड़ने का निर्णय किया है। वे साबरमती आश्रम से अपने ७९ साथियों के साथ पैदल यात्रा को चल पड़े हैं। आपको चाहिए कि आप भी अपनी पूरी तय्यारी कर लें चूंकि करबन्दी के सामूहिक आन्दोलन

के लिए उन्होंने गुजरात को ही चुना है। और वह भी इसी ताल्लुके को। देखना, उनकी लाज रखना !

तैयार होजाओ ! तुम्हारी आंखों के सामने तुम्हारे प्यारे पशु कुर्क होंगे। कल ही से ऐसी नौबत आ सकती है कि अपने २ घरों को ताले लगा कर तुम्हे दिन भर खेतों में रहना पड़े, और सांझ पड़े लौटना पड़े। तुमने यश कमाया है, मगर अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है। पासा पड़ चुका है। अब पीछे हटने की गुंजायश नहीं रही।

(दूर तक सर ही सर दिखाई देते हैं। कई हजार का जन समुदाय चुपचाप बैठा है, सरदार पटेल ने ठहर कर कहा)

सरदार पटेलः—अपने २ गांव का ऐसा संगठन करो कि दूसरे तुम्हारा अनुकरण करें। अब गांव-गांव छावनियां बन जाने चाहियें। सरकार तो हर गांव में एक-एक तलाटी रखती है। गांव के प्रत्येक वयस्क स्त्री पुरुष को कांग्रेस का स्वयंसेवक बन जाना चाहिए। मुझे दीख रहा है कि इन पन्द्रह दिनों में तुम अपना भय भगाना सीख गये हो। डरना तो सरकार को चाहिए। मैं तुम्हारे अन्दर निर्भयता भर देना चाहता हूं।

(तालिया बजती हैं)

मैं जानता हूं, तुम में से कुछ लोगों को जमीनें ज़ब्त होने का डर है। पर जब्ती से क्या होगा। क्या अंग्रेज तुम्हारी ज़मीनें सर पर उठा कर विलायत ले जायंगे ? विश्वास

रक्खो, जिस दिन तुम्हारी जमीनें ज़ब्त हो जायंगी उस दिन सारा गुजरात तुम्हारी पीठ पर आकर खड़ा हो जायगा।

सब भाई प्रण करलें कि महात्मा गांधी के वतलाए हुए मार्ग पर चलेंगे और स्वाधीनता प्राप्त किए विना न चैन से बैठेंगे और न सरकार को बैठने देंगे। हम सब को शपथ-पूर्वक घोषणा करनी चाहिए कि भारत का उद्धार सत्य और अहिंसा से ही होगा।

जो भाई मेरे इस विचार से सहमत हैं और इस को निबाहने का प्रण करते हैं, वे हाथ ऊंचा करदें।

(सारा जन-समूह हाथ उठा देता है)

(सरदार के इशारा करने पर हाथ नीचे गिर जाते हैं)

एक व्यक्तिः—आपने इस विषय में जो आदेश दिया है, अकेला बारदौली ही नहीं समस्त गुजरात उसका पालन करेगा। हम अन्तिम श्वास रहने तक गुजरात का सर ऊंचा रखेंगे। स्वराज्य के संग्राम में सब कुछ बलिदान कर देंगे।

एक आवाजः—'गुजरात केसरी की'

सारा समूहः—"जय हो"

(जयघोष से आकाश गूंज उठता है। सभा विसर्जित हो जाती है)

(दूसरा दृश्य)

[गुजरात प्रान्त में 'बारदौली' ताल्लुके का स्वराज्य-आश्रम। कई व्यक्ति बैठे चर्खा कात रहे हैं। एक सज्जन एक ओर बैठे कुछ लिख पढ़ रहे हैं। दो स्त्री तकली चला रही हैं। आश्रम के संचालक श्री अमृतलाल रतनलाल एक साथी जेठाभाई से कुछ विचार विमर्श कर रहे हैं।]

अमृतलाल:—कुछ समझ में नहीं आता कि महात्मा जी एक ज़रा सी बात को लेकर, उसके द्वारा, इतनी बड़ी ब्रिटिश सरकार को हिला देने की बात कैसे ढूंढ निकालते हैं।

जेठाभाई:—महात्मा जी का आत्म-बल और ईश्वर पर उनका दृढ़ विश्वास ही उनका मार्ग-दर्शक बन जाता है। फिर वे तो कई बार साफ़ साफ़ प्रगट कर चुके हैं कि मैं तो आत्मा की पुकार पर चलता हूं।

अमृतलाल:—हां! देखिये ना! क्या ज़रा सी बात है। जिसके विषय में सारा देश सोचता था कि नमक क़ानून को तोड़ कर स्वराज्य प्राप्त करना कैसे सम्भव होगा, उसी नमक क़ानून को लेकर गांधी जी ने सारे देश मे चेतना की लहर दौड़ा दी। कई सप्ताह तो तैयारी में ही लगे रहे।

जेठाभाई:—वह कैसे?

अमृतलाल:—देखो न, वे पहले वायसराय से पत्र व्यवहार करते रहे, और फिर डांडी पर नमक बना कर, नमक क़ानून भंग करने के लिये चल पड़े। इसके लिये उन्होंने जो ढङ्ग निकाला वह भी निराला था।

जेठाभाई:—वह क्या?

अमृतलाल:—उनकी योजना यह रही कि 'साबरमती आश्रम' से लेकर डांडी तक का जो मार्ग है, वह पैदल चल कर ही तय किया जाये।

जेठाभाई:—उसमें तो निरालेपन की कोई बात नहीं थी।

अमृतलाल:—यदि महापुरुषों की साधारण सी बातों का असाधारण प्रभाव न पड़े तो उनकी महानता ही क्या?

जेठाभाई:—क्षमा कीजिये, मैं आपका आशय नहीं समझ सका।

अमृतलाल:—मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि उनके पैदल चल कर 'डांडी' पहुंचने और वहां पहुंच कर नमक इकट्ठा कर लेने में सरकार को कोई विशेषता दिखाई नहीं दी। इसी लिये उसने उनके 'डांडी कूच' पर कोई पाबन्दी भी नहीं लगाई। मगर जब उन्होंने 'डांडी कूच' आरम्भ कर दिया और नमक कानून तोड़ने वहां पहुंच गये, तब तक तो समस्त देश पूरी तरह तैयारियों में लग चुका था।

जेठाभाई:—देश ने इस बीच में क्या तैयारी की?

अमृतलाल:—यह तो आप जानते ही हैं कि कांग्रेस ने इस

आन्दोलन को चलाने की समस्त जुम्मेदारी गांधी जी को सौंप दी है। गांधीजी भली भांति समझते हैं कि इतने बड़े देश का जन-आन्दोलन किस प्रकार संचालित किया जा सकता है। उन्होंने गुजरात से अपने कार्य को आरम्भ किया है। 'साबरमती आश्रम' में ही, चलने समय, उन्होंने जो वक्तव्य दिया, उससे उन्होंने एक दृढ़-संकल्प-धारी, कर्मठ नेता की भांति, देशवासियों में आशा और त्याग की लहर दौड़ा दी है।

जेठाभाई:—उन्होंने प्रस्थान करते समय क्या वक्तव्य दिया था?

अमृतलाल:—उन्होंने कहा था कि या तो मैं स्वराज्य लेकर लौटूंगा अन्यथा मेरी लाश समुद्र में तैरती होगी। मैं बिना स्वराज्य लिए 'साबरमती आश्रम' नहीं लौटूंगा।

जेठाभाई:—उन्होंने पैदल चलकर डांडी पहुंचने का निश्चय क्यों किया? क्या इसमें भी उनका कोई विशेष उद्देश्य था?

अमृतलाल:—हां, अवश्य!

जेठाभाई:—वह क्या था, अमृतलाल जी?

अमृतलाल:—देखिए, महात्मा जी, भारतीय जनता की नाड़ी की जितनी अच्छी तरह परीक्षा कर सकते हैं, दूसरा नहीं कर सकता। और यही सफल नेतागिरी है। वे भली भांति समझते हैं कि भारतीय जनता किस प्रकार आन्दोलन के औचित्य और अंग्रेजी सरकार के अन्याय को समझ

सकती है। जैसा कि मैंने पहले कहा, इसी लिए उन्होंने निश्चय किया, कि सारबमती से डांडी तक जितना भी मार्ग है वह पैदल चलकर तय किया जावे। आप जानते हैं उसका गुजरात पर और समस्त देश पर क्या प्रभाव पड़ा?

जेठाभाई—मैं तो यही समझता हूं कि उन्होंने हमारे नेताओं और कार्यकर्ताओं के सन्मुख यह उदाहरण रख दिया कि उन्हें भी देशसेवा के कार्यों मे सवारी का मुंह नहीं देखना चाहिये, बल्कि पैदल चलने का अभ्यास करना चाहिये।

अमृतलाल:—यह तो एक साधारण सी बात है। उनके पैदल यात्रा करने का मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह पड़ा कि वे रास्ते में पड़ने वाले प्राय: हर ग्राम में ठहरते। वहां के ग्रामवासियों को समझाते, सरकारी कर्मचारियों से अच्छा व्यवहार करने की शिक्षा देते। और वे ग्रामीण भाइयों से यह भी प्रार्थना करते कि जब उन्हें आदेश दिया जावे सामूहिक आन्दोलन में भाग लें। यह भी वह समझाते कि वे नमक कानून क्यों भंग करना चाहते हैं। और किसानों और अन्य लोगों को अपने प्रयोग के लिये नमक बनाने का अधिकार है। और अंग्रेजी सरकार अपने आर्थिक लाभ के लिए उनके इस अधिकार पर अन्यायपूर्वक पाबन्दी लगाये हुए हैं। वर्षों से भारत को स्वतन्त्र करने का संकल्प करने वाले भारतीय

नेता के दर्शन करके सब कुछ निछावर करके भी उसके आदेशों का पालन करने का 'प्रण फिर क्यों न करती जनता!

जेठाभाई:—बहुतों ने तो उनके दर्शन भी कभी उससे पहिले नहीं किए होंगे ?

अमृतलाल:—दर्शन ही नहीं, वे जहां जाते वहाँ के सरकारी कर्मचारी अपने अपने पदों से त्यागपत्र देते जाते अब तक गुजरात में सैकड़ों पटेलों और दूसरे सरकारी कर्मचारियों ने काम छोड़, आन्दोलन में भाग लेना आरम्भ कर दिया है। उनके वक्तव्य समस्त समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते जाते हैं। इस प्रकार गुजरात के ग्रामों में भारी चेतना का संचार ही नहीं हो गया अपितु वे प्रतीक्षा में है कि कब समय आवे और कब हम गाँधी जी से किए गये प्रण के अनुसार देश के 'स्वाधीनता संग्राम' में अपना सर्वस्व लुटा कर, देश के लिए उदाहरण स्थापित करदें, और विश्व को दिखलादें कि गांधी जी का गुजरात उनके आदेशों पर बिना किसी हिचकिचाहट के किस प्रकार प्राणों की बाजी लगा सकता है, अपने आप को मिटा सकता है।

(एक स्वयंसेवक का प्रवेश)

स्वयसेवक:—बन्देमातरम् ! श्रीमान !

अमृतलाल:—बन्देमातरम। कहिए कान्तिलाल जी ! क्या समा-

चार लाए ? क्या प्रांतीय कांग्रेस का कोई आदेश है ?

कान्तिलाल:—आदेश ही नहीं, गुजरात भर में संग्राम का बिगुल बज गया है।

अमृतलाल:—वह कैसे, शीघ्र बताइए!

कान्तिलाल:—कल खबर आई थी, कि गांधी जी को सरकार ने परसों रात को एक बजे के बाद गिरफ्तार कर लिया।

अमृतलाल:—हैं क्या कहा, गाँधी जी पकड़े गए?

कान्तिलाल:—जी हां, गान्धी जी परसों प्रातःकाल ही डांडी पहुंच गए थे और प्रार्थना के शीघ्र पश्चात ही वे और उनके अन्य साथी समुद्र के किनारे जाकर नमक इकट्ठा करने लगे। इस प्रकार उन्होंने नमक क़ानून को तोड़ डाला।

(गान्धी जी की गिरफ्तारी की खबर सुन कर सब उपस्थित व्यक्ति विचलित से हो उठते हैं।)

एक स्त्री:—भइया, कान्तिलाल जी! गांधी जी के साथ और कौन पकड़े गए?

कान्तिलाल:—उनके साथ तो सिर्फ उनके साथी ही पकड़े गये हैं, कोई बड़ा नेता नहीं पकड़ा गया।

जेठाभाई:—क्यों जी, अब आन्दोलन का सचालन कौन करेगा?

कान्तिलाल:—अब्बास तैयबजी को गांधी जी ने अपने बाद आन्दोलन का संचालक नियुक्त किया है। सरोजिनीदेवी

भी वहां उनसे मिलने आईं थीं।

स्त्री:—तब तो देश में बड़ी अशान्ति फैल जायगी। लार्ड इर्विन ने यह कोई बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं किया। कुछ पता चला कि उन्हें कहां की जेल में रक्खा गया है?

कान्तिलाल:—ठीक ठीक तो कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु सुनते है कि उन्हें यरवडा जेल में रक्खा जायगा—इसे पढ़िए!

(झोले में से निकाल कर समाचारपत्र देता है)

(स्त्री समाचारपत्र को अमृतलाल की ओर बढ़ा देती है। अमृतलाल जल्दी जल्दी समाचारपत्र को पढ़ते हैं। चेहरे पर के उतार चढ़ाव साफ दिखाई देते हैं।)

जेठाभाई:—सुना है गांधी जी ने आदेश दिया है कि कोई भी कांग्रेस-जन अभी नमक क़ानून न तोड़े और अपने २ क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करे। वे इस बारे में लार्ड इर्विन से भी लिखा पढ़ी कर रहे हैं।

अमृतलाल:—अभी तक आपकी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का तो कोई आदेश आया नहीं है किन्तु मैंने इसी समाचार-पत्र में पढ़ा है कि गांधी जी ने अपनी गिरफ्तारी के बाद ही एक विशेष वक्तव्य दिया है जिससे सारे देश में स्फूर्ति आ गई है, संसार में खलबली मच गई है।

जेठाभाई:—ऐसा कौनसा वक्तव्य दिया है उन्होंने?

अमृतलाल:—उन्होंने समस्त देशवासियों को आदेश दिया है कि वे जहां कहीं भी सम्भव हो सके नमक बनावें, सरकार का क़ानून भंग करें। जो अधिक बना लें वे बेच भी सकते हैं।

जेठाभाई—तब तो, अब यों समझिये कि सब को खुली छूट मिल गई।

अमृतलाल:—छूट ही नहीं मिल गई, बल्कि यों कहिये कि इतने दिन से जिस अहिंसात्मक युद्ध की तैय्यारी की जा रही थी, और जिस युद्ध में कूद पड़ने के लिए देश का कोई भी सैनिक पीछे नहीं रहना चाहता था, वह युद्ध आरम्भ हो गया है। गांधी जी ने उसमें कूद पड़ने के लिये समस्त देश-वासियों को आदेश दिया है।

जेठाभाई:—क्यों अमृतलाल जी! आखिर इसकी भी तो कोई योजना रक्खी होगी गांधी जी ने? किस प्रकार कहां कहां क्या क्या कार्यवाही की जाय?

अमृतलाल:—(मुस्करा कर दृढ़ता से) क्यों नहीं? एक सफल सैनानी की भांति, पूर्व योजनानुसार चले बिना, और अपने सहयोगी नायकों को समझाये बिना कोई प्रवीण से प्रवीण सेनानायक भी विजयी नहीं हो सकता। और फिर गांधी जी तो बड़े मनोवैज्ञानिक ढङ्ग से अपने आन्दोलन को चला रहे हैं। उनमें इतना प्रबल आत्मबल है कि उनके विरोधी भी उनका लोहा मानते हैं।

(कुछ ठहर कर)

उन्होंने पकड़े जाने के अविलम्ब पश्चात ही एलान कर दिया था कि अब जो कोई सजा भुगतने को तैय्यार हो, वह, जहां चाहे और जब सुविधा देखे, नमक बना सकता है।

जेठाभाई:—क्या राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के लिये कोई और विशेष आदेश हैं ?

अमृतलाल:—जी हां, कार्यकर्ताओं को उनका आदेश है कि वे हर जगह नमक बनावें, और ग्रामवासियों को भी बनाना सिखा दें। किन्तु उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि नमक चोरी-छुपके न बनाया जाय, तथा ग्रामवासियों को बता दिया जावे, कि नमक क़ानून भंग करने पर उन्हें सजा भी हो सकती है और उन्हें पुलिस भी तंग कर सकती है।

जेठाभाई:—अमृतलाल जी, इस राष्ट्रीय युद्ध की कोई अवधि भी निश्चित की है उन्होंने ?

अमृतलाल:—गांधी जी एक पूर्ण योजना बता गये हैं। उन्होंने नमक क़ानून भंग करने की अवधि एक सप्ताह की रक्खी है। इसके पश्चात हमारे राष्ट्रीय नेता और कांग्रेस के कर्णधार पं० जवाहरलाल नेहरू जैसा आदेश देंगे वैसा होगा।

जेठाभाई:—क्या उन्हें सरकार छोड़ देगी ? नेहरू जी न पकड़े जायंगे ?

अमृतलाल:—तो फिर क्या है ? क्या आप समझते हैं यह युद्ध संचालित न होगा ? कांग्रेस में न जाने कितने मोती और जवाहर हैं, सरदार जैसे कर्मठ योद्धा हैं। फिर देश के वासी स्वयं भी अब अपने कर्तव्य को पहले से अधिक समझने लगे हैं।

एक स्त्री—भाई अमृतलाल जी, क्या मैं भी कुछ पूछ सकती हूं ?

अमृतलाल:—क्यों नहीं, अवश्य पूछिये सावित्रीबाई, आखिर सम्पूर्ण क्षेत्र की बहिनों और माताओं का संचालन तो आपको ही करना है।

सावित्रीबाई:—(तक्ली को रोक कर) मैं तो अपने ही विभाग की बात पूछूंगी, अमृतभाई।

कान्तिलाल:—आपको अपने विभाग का ध्यान है न ? तभी तो !

सावित्रीबाई:—मैं यह पूछना चाहती हू कि जो स्त्रियां नमक बनाना नहीं जानतीं, क्या उन्हें भी हमें नमक बनाना सिखाना चाहिए ? या हम और भी किसी प्रकार इस युद्ध में भाग ले सकती हैं ?

कान्तिलाल:—सावित्री बहन को तो यह लग्न है कि वे किसी प्रकार भी पीछे न रह जायं, 'स्त्री दल' का त्याग किसी से कम न रहे। तभी तो सात सौ स्त्री स्वयंसेवक तैय्यार कर सकी हैं।

अमृतलाल:—देश को स्फूर्ति और त्याग का पाठ हमारी मां

बहिनें ही पढ़ा सकती हैं। वे ही हमे, देश की स्वतन्त्रता के लिये, हंसते हंसते बलिदान होने और हर प्रकार का त्याग करने की क्रियात्मक शिक्षा दे सकती है। जब माताएं-बहनें वीरांगनाओं की नाईं, घर की सीमाओं से बाहर निकल आती हैं देश पर बलिदान होने के लिये, हंसी खुशी अपने भाइयो और पुत्रों का मार्ग प्रदर्शन करती हैं, तो, निर्बल से निर्बल मनुष्य की भुजाओं में भी बल आ जाता है। मां बहिनों की रक्षार्थ, मातृभूमि के कल्याण के लिए, और विदेशियों द्वारा पददलित देश को स्वतन्त्र कराने के लिये, पहली ललकार पर ही वह उठे बिना नहीं रह सकता। साविन्नीबाई! बहिनों के लिये तो गांधी जी ने दूसरा कार्य निर्धारित किया है?

साविन्नीबाई:– क्या किया है, अमृतभाई?

अमृतलाल:— उन्होंन तो स्त्रियों से बड़ी बड़ी आशाए लगाई है। उन्होंने कहा है कि जो बहिनें, इस नमक क़ानून को तोड़ने में भाग न लेना चाहें, वे विदेशी वस्त्र बहिष्कार, खद्दर प्रचार और अधिक से अधिक खादी बनाने का कार्य करना आरम्भ कर देवें। उन्होंने एक और कार्य भी आपके सुपुर्द किया है।

साविन्नी:—स्त्रियों के लिये?

अमृतलाल:—हां, वह है मदिरा-निषेध।

साविन्नी:—वह कैसे होगा, अमृतभाई?

अमृतलाल:—इसके विषय में विस्तृत आदेश और ढङ्ग की तो अभी हमें वाट जोहनी चाहिए। किन्तु मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि बहनों को ऐसी दुकानों पर धरना देना होगा, जहां शराब, अफीम और इसी प्रकार की नशीली वस्तुओं का व्यापार होता है। कैसा सुन्दर कार्य सौंपा गया है आपको? सामाजिक कुरीति भी दूर हो, और विदेशों को जाने वाला करोड़ों रुपया भी बचे। आदमी, आदमी बनना सीखें सो अलग, और वह भी मां बहिनों द्वारा।

सावित्री:—हे भगवान! गांधी जी को लाखों वर्ष जीवित रख। ताकि संसार से इस प्रकार की कुरीतियाँ और अन्याय पूर्ण बातों का नाश हो। आदमी ढोर बनना बन्द हो, दूसरों के मान व अधिकारों को हड़प लेने वाला समाज सीधे रास्ते पर आ जाय। आदमी आदमी के मन पर राज्य करना सीखे, और उसके शरीर को दास बनाने की कुचाल को छोड़ देवे। तभी मानव को शान्ति मिल सकती है।

(कुछ देर रुक कर)

कितना घोर अन्याय है! सत्य बोलने वाला, दूसरों को अच्छे मार्ग पर डालने वाला, करोड़ों असहाय भारतीयों के लिये न्याय चाहने वाला, हड्डी का प्राणी भी जेल में बन्द किया जाता है। और वह भी न्याय के नाम

पर ? धन्य है ! वाह रे न्याय के ठेकेदारो ! दुनियां की 'सभ्य' कहलाने वाली अंग्रेज जाति का जब यह हाल है तो असभ्य फिर कौन रहा ? (अमृतलाल को लक्ष्य करके) यदि सरकार दमन करे तो ?

अमृतलाल:—गांधी जी का निर्देशन इस विषय में यह है, कि छात्रों को सरकारी संस्थाओं को छोड़ देना चाहिये। गांधी जी ने यह भी कहा है कि लोगों को जुर्माने नही देने चाहियें, चाहे सरकार उनकी सम्पत्ति को नीलाम ही क्यों न कर दे। सरकार के अनैतिक कार्य से जन-साधारण विचलित हो सकते हैं, किन्तु इसकी जुम्मेदार भी सरकार ही होगी।

एक बात जो मुझे सब से अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम दी और जो उनके वक्तव्य की जान है, उसे समझने की आवश्यकता है।

जेठाभाई:—वह क्या है अमृतलाल जी ? क्या कहा है गांधी जी ने ?

अमृतलाल :—गांधी जी ने अपना हृदय खोल कर रख दिया है। वे कहते हैं कि सरकार अनेकों प्रकार के अन्यायपूर्ण, अमानुषिक कार्य करके भारतीयों को भड़काने और हिंसा की ओर ले जाने का प्रयत्न करेगी, और कर रही है। जिसके लिये वह स्वयं उत्तरदायी है। किन्तु मैं चाहता हूं कि इस संग्राम का हर एक सैनिक मन-वचन-

कर्म से, अहिंसक रहते हुए अपना कार्य करता रहे। ईश्वर ने चाहा तो हम अवश्य स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेंगे। नमक क़ानून तोड़ने के औचित्य को प्रमाणित करने के पश्चात उन्होंने जो प्रेरणा दी है, वह बड़ी सजीव है। वे कहते हैं "सम्पूर्ण भारत का स्वाभिमान और सर्वस्व एक मुट्ठी नमक में निहित है। मुट्ठी टूट भले ही जाय, पर खुलनी हर्गिज़ न चाहिए।" कितनी गहरी, अधिकार-पूर्ण भावना! सत्याग्रही के दृढ़ विचार छुपे हुए हैं इस वाक्य में! तभी तो एक अंग्रेज़ ने लिखा है—

सावित्रीबाई:—क्या इसी समाचारपत्र में है?

अमृतलाल:—हां, इसी में। लन्दन के एक समाचारपत्र के सम्वाददाता हैं। लिखते हैं कि —(पढ़ कर सुनाता है)

कौन जाने आगे चल कर यह घटना ऐतिहासिक बन जाय? एक ईश्वर-दूत को पकड़ना कोई छोटी सी बात है? इसमें कोई शक नहीं, कि गांधी आज करोड़ों भारतीयों की दृष्टि में महात्मा और दिव्य पुरुष हैं। कौन कह सकता है कि तीस करोड़ भारतवासी उसे अवतार मान कर नहीं पूजेंगे?

(उसी समय आश्रम की सायकालीन प्रार्थना का घण्टा बजता है, सब घण्टा सुन कर उठने लगते हैं)

(तीसरा दृश्य)

(बारदोली ताल्लुके के हरिपुरा ग्राम का वन-मार्ग। दो व्यक्ति बातें करते जा रहे हैं। दोनों शुद्ध खादी के वस्त्र पहने हुए हैं। सर पर सफेद गांधी टोपी है.)

पहला व्यक्तिः—मैं अभी अभी बारदौली से आ रहा हूं। सरदार पटेल को कांग्रेस का स्थानापन्न अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

दूसराः—वे जेल से कब छूटे?

पहलाः—कुछ ही दिन हुए, वे अपनी ४ मास की जेल यात्रा समाप्त करके आये हैं।

दूसराः—बड़ा त्याग किया है उन्होंने, देश के लिए। आज उन्हीं के कारण गुजरात का सर ऊंचा है। अब इस ओर भी तो आने का विचार होगा उनका?

पहलाः—अरे, तुम्हें पता नहीं। मैं कल बारदौली गया ही किस लिये था? वहां इस क्षेत्र के समस्त कार्य-कर्ताओं का सम्मेलन बुलाया गया था।

दूसराः—वह किस लिए?

पहलाः—आज हमारे सरदार पटेल का ही तो भाषण था। उन्होंने एक व्यापक योजना बनाई है। अब सारे प्रान्त में कर-बन्दी आन्दोलन को और भी तीव्रता से चलाने का विचार है उनका।

दूसरा:—अब क्या आदेश दिया है सरदार ने ? उनके तो मुंह खोलने भर की देर है, गुजरात का बच्चा बच्चा, एक एक किसान उनके आदेश पर मर मिटने को तैयार बैठा है। क्या योजना बनाई गई है अब ?

पहला:—सरकार ने कांग्रेस को, सारे देश मे, अवैध संगठन घोषित कर दिया है, गैरकानूनी संस्था करार दे दिया है। इस प्रान्त के समस्त कांग्रेस कार्यालयों और अन्य संस्थाओं की सम्पूर्ण सम्पत्ति को भी सरकार शीघ्रता पूर्वक जब्त कर रही है।

दूसरा:—क्या हमारे स्वराज्य-आश्रम और खादी-केन्द्र भी जब्त कर लेगी सरकार ?

पहला:—अवश्य ! उन्हे भी सरकार की कोप-दृष्टि से नहीं बचाया जा सकता, मगर सरदार ने लार्ड इर्विन को इसका उपयुक्त ही उत्तर दिया है। उनकी नई योजना से सरकार की सारी मशीन फेल हो सकती है।

दूसरा:—क्या उत्तर दिया है उन्होंने ?

पहला:—उन्होंने आज जो भाषण दिया था, उससे गुजरात के समस्त कार्यकर्ताओं और नवयुवकों में, नया जोश और नई लहर दौड़ गई है। वे कहते हैं कि सरकार यदि हमारे कांग्रेस दफ्तरों और आश्रमों पर अधिकार कर रही है, तो घबराना नहीं चाहिये। यदि कार्यकर्ता सच्चे मन मे कार्य करेंगे तो सरकार कार्यालयों को जब्त करके भी

हमारे कार्य में बाधा नहीं डाल सकती।

दूसरा:—बिल्कुल ठीक ही कहा है उन्होंने।

पहला:—इतना ही नहीं, उन्होंने कार्यकर्ताओं को सम्बोधन करते हुए यह भी कहा कि आज से भारतवर्ष का हर एक घर कांग्रेस का दफ्तर और हर एक व्यक्ति कांग्रेस-संस्था होना चाहिए। देखें सरकार सारे देश को जब्त करके कहां ले जाती है?

दूसरा:—कार्यकर्ताओं को और क्या आदेश दिया है उन्होंने?

पहला:—उन्होंने आशा प्रगट की है कि गुजरात, देश के समस्त प्रान्तों से, कर-बन्दी आन्दोलन में आगे रहेगा।

दूसरा:—वह कैसे?

पहला:—यह इस प्रकार कि जहां जहां अभी तक पटेलों तथा अन्य ग्राम-कर्मचारियों ने त्याग पत्र नहीं दिए हैं, वे त्याग-पत्र देकर आन्दोलन में भाग लेने लगे। जिन लोगों पर जुर्माना हो, वे जुर्माना न दें, बल्कि पुलिस पकड़ने आवे तो जेल चले जावें।

दूसरा:—पुलिस तो पकड़ती है नहीं। जमीन और घर नीलाम करती है।

पहाल:—ऐसी अवस्था में उनका आदेश यह है कि जमीन जायदाद जब्त हो जाय किन्तु उसे कोई न खरीदे। यदि कोई खरीदे तो उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाय। सरकारी कर्मचारियों को कोई सहयोग न दिया

जाय। सब लोग उनका काम करना बन्द करदें किन्तु हिन्सा का लेश भी न हो। हर कार्य शान्तिपूर्वक, अहिंसक मनोवृत्ति से किया जावे।

दूसरा:—इस प्रकार तो सरकार बहुत अन्याय कर सकती है ?

पहला:—यदि पुलिस और सरकारी कर्मचारियों का अन्याय अमानुषिकता का उग्र रूप धारण करले, तो समस्त ताल्लुके के वासियों को सामूहिक रूप से ग्रामों को खाली करके चला जाना चाहिए। मौका लगे तो फसलों को काट लेना चाहिए।

दूसरा:—अच्छा! इतना तक आदेश दे दिया गया? मातृ-भूमि का त्याग?

पहला:—जी, हां। उनका कहना है कि जिस स्थान पर सम्मान पूर्वक जीवन बिताना असम्भव हो जाय उसे त्याग देना चाहिये। फिर चाहे वह स्वर्ग भी क्यों न हो। वे कहते थे कि 'यदि गुजरात के वासियों ने उनके आदेशों के अनुसार कार्य नहीं किया तो उन्हे बड़ा दु:ख होगा।

दूसरा:—इस पर क्या उत्तर मिला?

पहला:—उत्तर क्या मिलता? समस्त कार्यकर्ताओं ने एक स्वर से उन्हें आश्वासन दिया है।

दूसरा:—क्या?

पहला:—उन्हें बारदौली ताल्लुके की ओर से पूर्ण विश्वास

दिलाया गया है कि बारदौली का एक भी किसान अपना कर नहीं चुकाएगा, चाहे उसे अपना घर छोड़ कर बड़ौदा राज्य में बसना पड़े। बारदौली की ओर से डायाभाई ने ऐलान कर दिया था, उसी स्थान पर।

दूसरा:—क्या ऐलान कर दिया था डायाभाई ने ?

पहला:-उन्होंने सरदार पटेल को आश्वासन देते हुए कहा था कि ज़ब तक सरदार पटेल या गांधी जी का आदेश न होगा बारदौली एक पाई भी कर नहीं देगा। चाहे उसे सर्वस्व ही क्यों न त्यागना पड़े। दस दिन के भीतर भीतर समस्त बारदौली खाली हो जायगा। जलालाबाद और बोरसद आदि स्थानों के कार्यकर्ताओं ने भी उनका समर्थन किया था।

(शराब पिए हुए-एक सबइन्सपैक्टर तथा कुछ पुलिस के सिपाहियों का प्रवेश)

सबइन्सपैक्टर:—(कड़क कर) तुम लोग कहां से आये हो ?

पहला व्यक्ति:—कहिए! आपका क्या आशय है ? मैं बारदौली से आ रहा हूं।

सबइन्सपैक्टर:—क्या तुम्हारा ही नाम डायाभाई है ?

पहला व्यक्ति:—जी नहीं, मैं डायाभाई का छोटा भाई जेठाभाई हूं।

सबइन्सपैक्टर:—चलो छोटा ही सही, (अकड़ कर) तुमने अभी तक २८) अपना कर क्यों नहीं चुकाया। जमीन

क्या तुम्हारे बाप की है, जो योंही बोते जोतते हो ? तुम्हारा घर नीलाम करने का हुक्म हो चुका है। २८) दोगे तब भी घर नीलाम होगा ही।

पहला व्यक्ति:—मुझे इसकी कुछ फिक्र नहीं है। जब तक सरदार पटेल और गांधी जी का हुक्म नहीं होगा, कर नहीं दिया जायगा। घर के नीलाम होजाने की कोई चिन्ता नहीं। २८) नहीं चुकाऊंगा।

सबइन्सपेक्टर:—अकड़ कर क्यों बोलते हो ? तुम्हारी शेखी अभी भुला दी जायगी। (सिपाही से) रहमान! पकड़ लो इस हरामजादे को।

पहला व्यक्ति:—सबइन्सपैक्टर साहब! गाली न दीजिए! आप मुझे गिरफ्तार कर सकते हैं। (सिपाही उसे पकड़ लेते हैं।)

सबइन्सपैक्टर:—क्या कहा! गाली न दो ? (आगे बढ़ कर) पाजी, गधे! क्या बकते हो ? (गुस्से में लाल होकर उस व्यक्ति के मुह पर कई थप्पड़ जमा देता है। ऊपर तक के जूतों की ठोकरों से उसके पांव लोहूलुहान हो जाते हैं।)

(दूसरे व्यक्ति की ओर इशारा करके) इसे भी पकड़ो। बने हैं साहब गांधी के चेले। कहां रहते हो तुम ?

दूसरा व्यक्ति:—धीरुभाई तलाटी के घर के पास।

सबइन्सपैक्टर:—तुम भी पक्के हो। सुन्दरबाई कौन है ?

दूसरा व्यक्ति:—आपका मतलब ?

सबइन्सपैक्टर:—मतलब भी सब पता चल जायगा। पहले जो कुछ पूछता हूं उसका जवाब दो। सुन्दरबाई कौन है? वह तुम्हारे पास क्यों रहती है?

दूससरा व्यक्ति:—वह मेरी विधवा बहन है। चरखा कात कर गुजारा करती है।

सबइन्सपैक्टर:—वह बेवा है? अच्छा! झूठ क्यों बकते हो, सच बोलो।

दूसरा व्यक्ति:—इन्सपैक्टर साहब! आप अपना मक़सद बतलाइए। मैं जो कुछ कह रहा हूं ठीक है।

सबइन्सपैक्टर:—इसे भी थाने ले चलो इब्राहीम! देसाई और बाकी लोग मेरे साथ चलो। ज़रा देखें इसकी बेवा बहन सुन्दरबाई कौन सी है, जिसकी इतनी तारीफ़ की जाती है।

दूसरा व्यक्ति:—दरोग़ा जी, मुझे आप क्यों तंग करते हैं? मेरा क्या क़सूर है?

सबइन्सपैक्टर:—बको मत, गांधी टोपी पहन कर भी और क़सूर पूछते हो। ज्यादा बकवास करोगे तो मारते मारते हड्डी तोड़ दी जायगी। तुम ही तो पुलिस के फ़ोटू लेकर कांग्रेस बुलैटिन में छापते हो। और पूछते हो क्या क़सूर है? इसका झोला भी छीन लो। देखो इसमें क्या है? (एक सिपाही झोले में से कैमरा निकाल कर देता है)

एक सिपाही:—ये लीजिये। आप ही हैं वह छुपे रुस्तम, जिनकी महरबानी से पुलिस को बदनाम होना पड़ता है।

दूसरा व्यक्ति:—गांधी टोपी पहनना या फ़ोटू लेना कोई जुर्म नहीं हैं। आप बिना वारन्ट मुझे नहीं पकड़ सकते। कैमरा लेते हो तो इसकी रसीद दीजिए।

सबइसन्पैक्टर:—(मुस्करा कर) ओहो, आप तो क़ानून भी जानते हैं। (इन्सपैक्टर के इशारे से उस मनुष्य के शरीर पर बेतहाशा मार पड़ने लगती है।)

सबइन्सपैक्टर:—सादिक, बन्द कर दो इस हरामखाने को, अन्दर ले जा कर ! और हमारे लिए टांगा लाओ (शराब के नशे में चूर झूम रहा है) चलें सुन्दरबाई के यहां! तलाटी के घर के पास।

सादिक:—सरकार! उसका भी तो वारण्ट है। वही सुन्दर-बाई तो, जो जल्सों में गाना गाती है।

सबइन्सपैक्टर:—अबे हां, वही। वारण्ट तो हम खुद जिसका चाहे बना सकते हैं। मजिस्ट्रेट के दस्तख्तों के कोरे वारण्ट हमारे पास मौजूद हैं। नाम लिखा और तैयार।

(कुछ सिपाही दोनों घायल व्यक्तियों को पकड़ कर ले जाते हैं, दारोगा दो तीन सिपाहियों के साथ तांगे में बैठ कर चला जाता है)

(परदा गिरता है)

(चौथा दृश्य)

(बारदौली ताल्लुके का एक प्रमुख ग्राम। युद्ध समिति की बैठक हो रही है। आस पास के समस्त ग्रामों के प्रतिनिधि बैठे हैं। इस केन्द्र की युद्ध समिति के प्रधान कार्यकर्ता डायाभाई कोई योजना सब को समझा रहे हैं। प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री श्रीमती सुन्दरबाई भी उपस्थित हैं।)

डायाभाई:—भाइयो ! हमारे केन्द्र के वास्ते बारदौली से आदेश आया है, कि चूंकि सरकार लगान न देने वालों पर कुर्की के नोटिस देकर उनके घर, ढोर और गृहस्थी के अन्य सामान के अतिरिक्त खड़ी फ़सल तक भी कुर्क कर रही है, अतः हमें यह कहा गया है कि हमारे क्षेत्र से सरकार को किसी भी रूप में एक पाई वसूल न होने पावे।

एक किसान:—इसका क्या उपाय है डायाभाई ?

डायाभाई:—इसका उपाय स्पष्ट है। प्रथम तो आप पर नोटिस की तामील ही नहीं हो सकती, क्योंकि दिन में कोई किसान गांव में मिलता ही नहीं, सब ताले बन्द करके जंगल में चले जाते हैं।

दूसरा किसान:—अब पुलिस ने दूसरी तरह अन्याय करना आरम्भ कर दिया है।

डायाभाई:—वह क्या ?

दूसरा किसान:—वह अब जंगल में घूम घूम कर औरतों को

तलाश करते हैं। और उन्हें डरा धमका कर जबर्दस्ती नोटिसों पर अंगूठे लगवा लेती है कि नोटिस मिल गया या दस बीस रुपये के बदले सैंकड़ों हजारों का माल उड़ा कर ले जाती है। हंसा मेहता की दो बैलों की जोड़ियां, घर का और सामान और १५ मन अनाज सिर्फ ४२ रुपये में कुर्क कर लिया गया। मकान का ताला तोड़ कर सामान निकाला गया और फिर भी जमीन जब्त करने की घोषणा कर दी गई।

सुन्दरबाई:—हां, यह तो मुझे भी पता चला है।

डायाभाई:—ऐसी परिस्थिति में हमें अपनी स्त्रियों को समझा देना चाहिये कि पुलिस की बन्दूकों से डर कर अंगूठे न लगावें। और फिर अब तो इस बात का प्रश्न ही नहीं रहा। हंसा मेहता के मामले की मैं सूचना भेज दूंगा, बारदोली को।

पहला किसान:—हमारे ताल्लुके के बहुत से ग्राम तो उठने भी प्रारम्भ हो गये।

डायाभाई:—हां, उन्होंने परसों से उस योजना पर अमल करना आरम्भ कर दिया है, जो हमें गत मास प्राप्त हुई थी। और जो हमारा अन्तिम अस्त्र है।

दूसरा:—हम भी तो पूरी तरह तैयार हैं। सुन्दरबाई तो कई दिन पहले से अपने कार्य को पूरा किए बैठी हैं। इस क्षेत्र की सब स्त्रियों को पता लग चुका है कि किस प्रकार

अपनी जन्मभूमि को छोड़ कर चल देना है। कष्ट सहना है।

तीसरा किसान:—अब सबने अपनी २ फसलें तो काट ही ली है। जो बाक़ी है उन्हें सब मिल कर आज रात को और काटे लेते हैं।

पहला:—तो डायाभाई किस दिन का निश्चय रहा?

डायाभाई:—कल रात को आधी रात पीछे तमाम गाड़ियां रुक जानी चाहियें।

दूसरा:—जो खेत न कट सकें उन्हें क्या किया जाय?

तीसरा किसान:—किया क्या जाय? हम एक दाना भी यहां नहीं छोड़ सकते। सरकार हमारी फसल से एक पाई भी वसूल नहीं कर सकती। हम तो उन समस्त खेतों को आग लगा देना चाहते हैं, जो कटने से रह जायं।

पहला:—यह योजना बिल्कुल ठीक है। जला डालना स्वीकार! सरकार के लिये नहीं छोड़ना। सरदार को दिया हुआ वचन पूरा करने के लिये, खड़ी खेती क्या सर्वस्व भी अर्पण करना पड़े तो चिन्ता नहीं।

डायाभाई:—तो यह ही निश्चित रहा, कि बची हुई खेती को आग लगादी जावे।

सब किसान:—(एक स्वर से) हमे यही स्वीकार है।

डायाभाई:—तो आप लोग आज ही दोपहर बाद से अपने २ ग्रामों की गाड़ियों में सामान लदवाना प्रारम्भ करदें।

दिन छिपते २ सब गाडियां लद जानी चाहिएं। दिन छुपे बाद खेतों को काट दिया जाए। थोड़ी देर आराम करके आधी रात पीछे अपने २ गावों से चल देना पड़ेगा। उसी समय खेती को जलाने का भी काम करना चाहिये इस प्रकार सूर्योदय पर समस्त ग्रामों की गाड़ियां बड़ौदा रियासत की सीमा में पहुंच जानी चाहिये।

सुन्दरबाई:—डायाभाई! आपको और भी कुछ मालूम है? खोज के बारे में?

डायाभाई:—नहीं बहन, मुझे तो कुछ नहीं मालूम।

सुन्दरबाई:—खोज के कार्यकर्ता श्री भण्डारी मिले थे मुझे परसों, जब मैं स्त्रियों की एक सभा में गई थी। उन्होंने जो अपने ग्राम का निश्चय सुनाया, उससे तो मैं दंग रह गई।

डायाभाई:—क्या निश्चय किया है खोज-निवासियों ने?

सुन्दरबाई:—उन्होंने भी इसी प्रकार ग्राम त्याग देने का तो निर्णय किया ही है। उन्होंने यह भी योजना बनाई है कि खोज ग्राम के पचास दृढ़-निश्चयी किसान वहीं रहें। और हर प्रकार से ग्राम की रक्षा करें। वे समस्त लुटेरों और हत्यारों का सामना करेंगे। चाहे कितना भी कष्ट क्यों न उठाना पड़े, वे गांव को लुटने न देंगे।

एक किसान:—क्या उन्होंने लगान दे दिया है?

सुन्दरबाई:—आजी वाह! लगान वे कैसे दे सकते थे। उनका तो स्पष्ट कहना है कि "स्वराज्य नही तो लगान भी नहीं।"

दूसरा किसान:—तो हमारे ताल्लुके में तो सिर्फ 'खोज' ही ऐसा ग्राम रह गया समझो, जहां के सब निवासी घर छोड़ कर नहीं चले जायंगे।

तीसरा किसान:—वहां तो अभी २ एक बूढ़े किसान की पुलिस की लाठियों से मृत्यु भी हो गई बताते हैं। तभी तो उन्हें रोष आगया है।

डायाभाई:—हरिपुरा में तो जिनका लगान सरकार ने वसूल कर लिया है उनके नोटिस चिपकाये गये हैं कि वे वापिस आ सकते हैं, फिर भी वे लोग वापिस नहीं आते।

सुन्दरबाई:—अब तो तभी वापिस आयंगे जब सरकार गांधी जी की बात मान लेगी, और सरदार पटेल का आदेश होगा।

(एक स्वयसेवक का प्रवेश)

स्वयंसेवक:—(सैनिक ढंग से अभिवादन करके) बन्देमातरम्!

डायाभाई:—बन्देमातरम्! कहो! कैसे आए? क्या तुम पंचाभाई पटेल के पास हो आए?

स्वयंसेवक:—नहीं श्रीमान! मैं तो रास्ते से ही लौटा दिया गया हूं। जब मैं अरबा ग्राम में पहुंचा तो मैंने देखा कि वहां पुलिस बुरी तरह लोगों को मार रही है। समस्त ग्राम के कांग्रेस कार्यकर्ता पकड़ लिए गए। वहां का कांग्रेस कार्यालय लूट लिया गया। राष्ट्रीय झंडा फाड़ डाला गया। जहां कहीं भी झंडा दिखाई देता था पुलिस उसी स्थान से

उतार कर उसे जला देती थी या फाड़कर अपमानित करती थी।

डायाभाई:—क्या किसी को चोट भी आई है?

स्वयसेवक:—हां, कई निरपराध किसानों को बुरी तरह पीटा गया है। उनका अपराध यह था कि कांग्रेस-कार्यालय उनके पड़ौस मे था। और उन्होंने भी राष्ट्रीय झंडा लगा रक्खा था। रास्ते में मैंने देखा कि पुलिस स्त्रियों से अपने लिए पानी भरवा कर मंगवा रही थी।

डायाभाई:—मेरा विचार है कि हमें अब अपनी बैठक समाप्त करके तैयारी करनी चाहिए। (स्वयंसेवक की ओर देखकर (अच्छा! आप मेरे साथ चलिए। सुन्दरबाई भी हमारे साथ ही होंगी। उस घायल बहन के चलने का प्रबन्ध कर आवे, जिसे फौजी रंगरूट घायल अवस्था में जङ्गल मे छोड़कर चले गये थे।

(सब उठते हैं।)

(पांचवां दृष्य)

(बड़ौदा राज्य की सीमा मे जहा तहा बारदौली के किसान आकर पड़ गए हैं। उन्होंने चटाई की झोंपड़िया बनाली हैं, जिनकी छतों पर टाट है और टाट पर ताड़ के पत्ते डाल कर कामचलाऊ मकान बना लिए गये हैं। वर्षा समाप्त हो चुकी है। अब वे कई मास

के लिए निश्चिन्त होकर पडे मालूम देते हैं। उन्होंने अपने प्यारे पशुओं को भी एक ही जगह इकट्ठा कर रक्खा है। उनके सामान में बड़े बड़े मिट्टी के बरतन भी हैं। प्रायः गांधी जी की तस्वीरें दिखाई दे रही हैं। चमकते हुए पीतल के बरतन, बिछौने, दूध के बरतन सभी सामान, ये अपने साथ ले आए हैं। एक ओर कई व्यक्ति एक अंग्रेज को घेरे खडे हैं। यह अंग्रेज विख्यात ब्रिटिश मजदूर दली नेता तथा लेखक श्री ब्रेल्सफोर्ड हैं। सत्याग्रह आश्रम की श्रीमती मीराबहन तथा अन्य राष्ट्रीय कार्यकर्ता भी उनके साथ हैं। किसानो मे बातें हो रही हैं।)

ब्रेल्सफोर्ड:—तो आप लोग अपने घर छोड़ कर क्यों चले आए ?

एक किसान:—न आते तो क्या करते ? वहां रह कर क्या करें। खेती में तो आमदनी कम है और सरकार का लगान अधिक, उस पर भी पुलिस का भीषण अत्याचार।

ब्रेल्सफोर्ड:—(दूसरे किसान से) क्या तुम भी इसलिए अपना घर बार छोड़ आए हो ?

दूसरा किसान:—नहीं। मैं तो इसलिए आया हूं कि इससे स्वराज्य मिलेगा।

तीसरा:—और जब तक गांधी जी और सरदार पटेल जेल में हैं, हम वापिस भी नहीं लौटेंगे।

ब्रेल्सफोर्ड:—(मीराबहन से) हमने पिछले गांव मे देखा था कि वहां कोई भी आदमी नहीं है। सिर्फ पुलिस का ही अखंड

राज्य है, क्या वहां रात को भी कोई नहीं रहता ?

मीरा बहन:—कुछ दिन तक तो ये लोग रात को अपने अपने घरों को चले भी जाते थे, मगर दो सप्ताह से तो अब वहां रात में भी कोई नहीं मिलता। श्मशान पड़े रहते हैं ये ग्राम।

ब्रेल्सफोर्ड:—तब तो बड़ा नुक़सान पड़ा है इन किसानों को। यह सब गांधी जी पर उनकी श्रद्धा का फल है। ऐसे नेता को अधिक समय तक जेल में नहीं रखा जा सकता। क्या आप इन ग्रामों की हानि का कोई अनुमान लगा सकते हैं ?

मीराबहन:—इन लोगों का त्याग अपूर्व है। इस ताल्लुके के लोगों को पचास लाख को खड़ी फसलों से हाथ धोना पड़ा। एक लाख सत्तरह हज़ार एकड़ भूमि, जिसकी लागत छै करोड़ रुपया होती है, सरकार ने जब्त करली। और तीन करोड़ से अधिक के मकानों को त्याग देना आज कल के समय में कितना कठिन है। और वह भी फिर उन गुजराती किसानों के लिए, जिनकी आमदनी बहुत कम और हमेशा दरिद्रता जिन्हें घेरे रहती है।

ब्रेल्सफोर्ड:—(चौथे किसान से) क्यों भाई ! तुम्हे यह शिक्षा किसने दी ? किसके आदेश से तुमने घर छोड़ा ?

चौथा किसान:—हम तो प्रारम्भ से ही 'स्वराज्य आश्रम' के आदेशों का पालन करते आए हैं। वहां गांधी जी और

सरदार पटेल की तमाम बातें आती रहती हैं। और वे ही हम तक पहुंच जाती हैं।

ब्रेल्सफोर्ड:—तुम्हें कितनी देर पहले गांव छोड़ने को कहा गया था?

चौथा किसान:—केवल २४ घण्टे पहले।

तीसरा किसान:—हमें तो केवल १५ घण्टे पहले ही आदेश दिया गया था।

ब्रेल्सफोर्ड:—तुम्हारे गांव में कितने आदमी बाकी बचे हैं?

चौथा किसान:—इस समय तो केवल पुलिस मौजूद है। दो दिन पहले कुछ आदमी चावल की फसल काटने रह गये थे। परसों वे भी वापिस आगए।

ब्रेल्सफोर्ड:—तुम्हारे गांव में किसी को मालूम है कि तुम यहां आगए हो?

किसान:—हमें स्वयं भी पता नहीं था कि हम यहां ठहरेंगे। वहां तो कोई जाने कैसे कि हम यहां आगए हैं। आप तो उधर ही से पधार रहे हैं, आपने क्या देखा?

ब्रेल्सफोर्ड:—सरकार ने बारदौली के विस्तृत और रम्य आश्रम-भवनों पर अधिकार कर लिया है। बारदौली में बांकानेर और 'बलौर' से 'मांडवी' तक मैंने समस्त ग्रामों को उजड़ा हुआ पाया। उन ग्रामों में मुझे एक भी आदमी नजर नहीं आया। घरों में बाहर से ताले पड़े

हुए थे। ढोर मैदानों में छोड़ दिए गये थे और कहीं कहीं झोंपड़ियों मे कोई मजदूर दिखाई दे जाता था।

मैंने सैकड़ों गाड़ियां रास्ते में आती देखीं। रास्ते में भी पुलिस लोगों का पीछा करके पकड़ रही थी। वागेच ग्राम मे तो हमे सिर्फ एक किसान और मन्दिर का पुजारी ही मिले। मैं तो अचरज में हूं कि बचपन मे परियो की जो कहानियां पढ़ा करते थे वे साक्षात सामने आ रही हैं। मैंने समझा कि शायद यह किसान गांधी भक्त न हो। किन्तु जब मैंने उससे लगान के विषय मे पूछा तो उसकी आखें चमक उठीं। बोला, कि जब तक महात्मा जी और सरदार जेल मे हैं तब तक लगान नहीं दिया जा सकता।

(मीरा बहिन से) भारत के किसानों का यह जातीय संगठन समस्त विश्व मे अद्वितीय है। इनकी आश्चर्यजनक एकता को देख कर तो मुझे बड़ा अचम्भा होता है। इन लोगों का सीधापन, गांधी जी पर अटूट श्रद्धा, अंग्रेजी सरकार से उनकी सामूहिक अहिंसात्मक लड़ाई, सभी आश्चर्य की बातें मैंने संसार में कहीं ऐसे मनुष्य नहीं देखे, जो सदियों की दासता के पश्चात भी इस प्रकार, अहिंसक रहते हुए, इतना बड़ा त्याग अपने नेता के आदेश को मानकर करदें।

मीरा बहन:—गांधी जी की शक्ति, जो कुछ जादू करदे सो कम है।

ब्रेल्स फोर्ड:—(एक किसान से) तुम यहां खाने का प्रबन्ध कैसे करते हो ?

किसान:—खाने का कोई नियमित प्रबन्ध नहीं है। कुछ अन्न हम साथ लाए हैं। उसे भी मितव्ययता से बरत रहे हैं। बहुत से किसानों का अन्न राह में पुलिस ने लूट लिया है। उनकी दशा चिन्ताजनक है। वे किसी प्रकार दिन में एक बार आधे पेट रोटी खाते हैं। कभी भुने चने चाब कर ही पानी पीलेते हैं।

ब्रेल्सफोर्ड:—आप लोग कब तक इस प्रकार से कष्ट उठायेंगे ?

किसान:—(दृढता पूर्वक) जब तक स्वराज्य न ले लेंगे। हमने तो कुछ भी कष्ट नहीं उठाया। कष्ट तो उन महान पुरुषों का है, जिन्होंने दुनियां के सब वैभव छोड़कर अपना जीवन भी हमारे लिए अर्पण कर देने का प्रण कर रक्खा है। (कुछ सोच कर) और यदि किसान का त्याग देखना चाहते हैं, तो आप यहां से कुछ कोस पर स्थित, कराड़ी ग्राम में गांधी जी की कुटिया अवश्य देखने जांय।

ब्रेल्सफोर्ड:—(मुस्करा कर) मैं हो आया हूं वहां, (नोट बुक पलटकर) एक किसान जो कि गांधी भक्त हैं, मुझे मिले। उन्होंने बताया था कि उन्होंने सन २० में सरकार को १ पाई लगान देने से इन्कार कर दिया था। सरकार ने जमीन जब्त करली और बेच दी। किन्तु, आज तक भी किसी

को हिम्मत नहीं हुई कि उसे जोत सके। उस जमीन पर ऊंचे बांस में एक तरंगा झंडा फहरा रहा था। वह सम्मानित किसान कुटिया में बैठा चर्खा चला रहा था। उसका नाम पंचाभाई पटेल है।

किसान:—जी हां, फिर हमारे कष्ट तो बहुत मामूली हैं उनके त्याग के सामने।

(कुछ देर बाद)

ब्रेल्सफोर्ड:—और कोई विशेष बात ?

किसान:—हमें सबसे अधिक शिकायत पुलिस के वर्ताव की है। पुलिस ने हम पर बड़े बड़े अत्याचार किए हैं। हमें लूटा गया है, हमारी स्त्रियों को अपमानित किया गया है, और हमें बुरी तरह मारा पीटा गया है जो कि नितान्त अवैधानिक और नीच कर्म है।

ब्रेल्सफोर्ड:—आप लोगों ने किसी अन्य पुलिस अधिकारी से इसकी शिकायत की ?

किसान:—हां, हमने पुलिस कमिश्नर से कहा था। पुलिस अधिकारी, इस्माइल देसाई, की भी हमने उनसे शिकायत की थी।

ब्रेल्सफोर्ड—उन्होंने क्या कहा ?

किसान:—वे बोले कि तुम्हारी शिकायत पर ध्यान दिया जायगा। किन्तु उनके जाते ही हम लोगों पर फिर अत्याचार किया गया।

(एक स्त्री को लाया जाता है)

किसानः—देखिए सरकार ! इस स्त्री के शरीर में चोट के कितने नीले निशान हैं। इसकी टांगों और पीठ पर घाव भी है।

ब्रेल्सफ़ोर्डः—हम घाव देख सकते हैं ?

(स्त्री नीचे गरदन कर लेती है)

मीरा बहनः—शरमाओ मत ! जो बात हो साफ़ २ कहो ! तुम घाव नहीं दिखाना चाहती तो कोई बात नहीं ! जाओ ।

(जाती है।)

ब्रेल्सफ़ोर्डः—श्रीमती जी ! इन किसानों की क्या संख्या होगी। जो सरकार के अत्याचारों से तंग आकर और अपने घर छोड़कर बड़ौदा राज्य में आगये हैं ?

मीरा बहनः—अस्सी हज़ार से अधिक ?

ब्रेल्सफ़ोर्ड—(अचम्भे में) अस्सी हज़ार से अधिक ? ओह ! मेरे परमात्मा !

(परदा गिरता है)

फांसी के तख्ते पर

फाँसी के तख्ते पर
के
पात्र

काल:—सन् १९३१ का मार्च :—

स्थान:—लाहौर का सेन्ट्रल जेल:—

सरदार भगतसिंह:—भारत के प्रसिद्ध एतिहासिक क्रान्तिकारी जिन्हें अंग्रेजी राज्य में फांसी की सजा दीगई।

श्री राजगुरु:—(श्री शिवराम हरि जी राजगुरु) जो भगतसिंह के साथ ही फांसी पर चढ़ाए गए।

श्री सुखदेव :—श्री भगत सिंह के साथ फांसी पर चढ़ने वाले।

नेहरू जी:—विश्व-विख्यात भारतीय नेता, पं० जवाहरलाल नेहरू।

आसफ़अली:—प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता। क्रान्तिकारियों के मुकदमों की पैरवी करने वाले प्रसिद्ध बैरिस्टर

ख्वाजा साहब:—लाहौर सैन्ट्रल जेल का डिप्टी जेलर।

फिलिप:—एक गोरा फ़ौजी अधिकारी।

जेल का डाक्टर, जेलर, मजिस्ट्रेट, चीफ़ वार्डर, सुपरिन्टेण्डेण्ट जेल, गोरे फ़ौजी, साधारण सैनिक, ड्राइवर, पुलिस के सिपाही तथा अनेकों बन्दी।

रहीम:—जेल कार्यालय का चपरासी।

फाँसी के तख्ते पर

[भारत की स्वाधीनता के लिए जो सक्रिय प्रयास, शान्ति तथा अहिंसामय उपायों द्वारा गांधी जी के नायकत्व में निरन्तर जारी था, उस से भारत के नवयुवक ऊब चुके थे। और कई वर्षों से उन्होंने फिर अपनी क्रान्तिकारी योजनाओं पर अमल करना प्रारम्भ कर दिया था। गोल-मेज कान्फ्रेन्सों और कमीशनों से किसी को भी कोई आशा नहीं थी। ९ अप्रेल सन् १९२९ को केन्द्रीय असेम्बली में सरदार भगतसिंह व श्रीबटुकेश्वरदत्त ने, 'पब्लिक सेफ्टी बिल' के विरोधस्वरूप गोलियों की दनादन के बीच, ठीक उस समय बम फैंका, जब श्री विट्ठल भाई पटेल बिल पेश करने खड़े हुए। और दोनों क्रान्तिकारी नवयुवकों ने आत्म-समर्पण कर दिया। इस जुर्म में दोनों को आजन्म कैद का दण्ड दिया गया। क्रान्तिकारियों के विरुद्ध कई षडयन्त्र केस चलाए गए। सान्डर्स को मारने के अभियोग में भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को फांसी का दण्ड सुनाया गया। २१ फ़रवरी सन १९३१ को भारतीय क्रान्तिकारियों के नेता, श्री चन्द्रशेखर 'आज़ाद' अकेले ही पुलिस का मुकाबिला करते हुए, अपनी ही गोली से, स्वर्ग सिधारे। इलाहाबाद का 'अल्फ्रेड पार्क', तभी से 'आजाद पार्क' कहलाने लगा।

नमक सत्याग्रह को 'अहिन्सात्मक' क्रान्ति के दिनों में, १८ अप्रैल सन ३० को, १५ नवयुवकों ने चटगांव के शस्त्रागार को लूट लिया। फ़ौज को नाकों चने चबाकर कई बार सैनिकों को परास्त किया। तीन चार दिन तक युद्ध होता रहा। क्रान्तिकारियों को अन्त में चारों ओर से घेर लिया गया। नवयुवक भूक प्यास से तंग हो चुके थे। अन्तिम मुठभेड़ ६ मई को हुई, जिसमें कई नवयुवक मारे गये। इस मुकद्दमे में बारह युवकों को काले पानी की सज़ा हुई। मिदनापुर में तो क्रान्तिकारियों ने पांच महीनों में चार ज़िला मजिस्ट्रेटों को गोली से उड़ाया। मोतीहारी, पूना, दिल्ली, अजमेर, इन्दौर और कराची में भी घटनाएं हुईं। अलीपुर के सैशन जज, ढाका के कमिश्नर व कलक्टर तथा त्रिपुरा के मजिस्ट्रेट पर भी आक्रमण हुए। लड़कियों ने भी इसमें पूरा भाग लिया। ६ फ़रवरी सन ३२ को कुमारी वीणादास ने बङ्गाल गवर्नर पर गोलियां चलाईं। राजपूताना के देवली कैम्प में ५०० क्रान्तिकारी नज़रबन्द कर दिए गए।

सरदार भगतसिंह आदि ने अपने मुकद्दमों की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया। उन्होंने जेल के दुर्व्यवहार के कारण भूख हड़ताल की, जिसके फलस्वरूप श्री जितेन्द्रनाथ दास ६४ दिन के आमरण अनशन के पश्चात शहीद होगये। भगतसिंह ने उस समय ११५ दिन तक भूख हड़ताल जारी रक्खी। सरकार झुकी और राजनैतिक बन्दियों की अलग श्रेणियां बना दी गईं। गोलमेज़ कानफ़्रेन्स में कांग्रेसी नेताओं को शामिल करने के बहाने से, स्वराज्य के लिये जारी किये गये आन्दोलन से तंग आकर, ब्रिटिश सरकार ने, कांग्रेस से समझौता

कर लिया। जो कि "गांधी-इर्विन-पैक्ट" कहलाया। इसमें उन सब राजनैतिक बन्दियों की रिहाई भी शामिल थी जो अहिंसक रहे थे। देश की इससे तसल्ली नहीं हुई। श्री सुभाष, विट्ठल भाई पटेल व पं० जवाहरलाल नेहरू तक को यह पसंद न था, कि समझौता भगतसिंह को खोकर किया जावे। नेहरू जी ने उस समय कहा था कि गांधी जी ने अपने देश को वाइसराय के हाथ बेच दिया है।"

सारे देश में इसके लिये आन्दोलन हुआ। गांधी जी का कहना था कि मैं अपने सिद्धान्त को बलिदान नहीं कर सकता। भगतसिंह आदि अंग्रेजी सरकार से मांगी हुई भीख पर फांसी खाने को अच्छा समझते थे। एक बार लार्ड इर्विन माने भी, कि अगर ये क्रान्तिकारी भविष्य में अहिंसक रहने का बचन देदें, तो फांसी से बच सकते हैं। किन्तु गवर्नर पंजाब ने त्यागपत्र की धमकी दी, और क्रान्तिकारियों तक गांधी जी के संदेशवाहक श्री आसफअली को पहुंचने भी नहीं दिया गया। कहते हैं कि यदि भगतसिंह को गांधी जी का वह संदेश मिल जाता तो वे अवश्य गांधी जी की बात मान लेते।

भारतीयों को अपनी दासता, बेबसी और अंग्रेजी समझौते की चाल का तब अनुभव हुआ, जब करोड़ों भारतीयों की प्रार्थना को ठुकराकर, अंग्रेजी राज्य के क्रूर ठेकेदारों ने, भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियों को जेल नियम भंग करके, ठीक उस समय फांसी पर लटका दिया, जब कि सूर्यास्त के समय लाहौर सैन्ट्रल जेल 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से गूंज रहा था। गोरा फौज जेल की रक्षा कर रही थी। और ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ कांप रहे थे। क्रान्तिकारियों की लाशों को

उनके परिवार वालों को न देकर, गोरे फौजियों ने, टुकड़े टुकड़े करके, लाहौर से ४५ मील दूर सतलज नदी के किनारे, पैट्रोल छिड़क कर फूंक दिया गया। और दूसरे दिन पौ फटते फटते ही लोगों ने देखा कि चील कौवे अधजले मास के टुकड़ों को उठा उठा कर लिये जारहे हैं।

यह फासीकाड ठीक उसी दिन हुआ जिस दिन कि, कराची में, काग्रेस के वार्षिक अधिवेशन पर, उस वर्ष के प्रधान, सरदार बल्लभभाई पटेल का राजसी जुलूस निकालने को तैयारिया हो रहीं थी। सरदार भगतसिंह आदि की फासी से समस्त देश में कुहराम मचगया। नवयुवकों का क्रोध सीमा को पार कर गया। यदि उस समय पं० जवाहरलाल नेहरू और सुभोषचन्द्र बोस नवयुवकों को बस मे न रखते तो न जाने क्या हो जाता। नवयुवकों ने इस सब का दोषी गाधो जी को ठहराया। उन्हें कराची में भगतसिंह आदि का कातिल तक कहा गया, और काले फूल भेंट किए गए। स्वय पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "जब इगलैंड हमसे संधि का प्रस्ताव करेगा, उस समय उसके और हमारे बीच भगतसिंह का मृत शरीर उस समय रहेगा, जब तक हम उसे विस्मृत न करदें। यद्यपि मेरा हृदय बिल्कुल पक गया था और खून अन्दर से उबाल खा रहा था परन्तु तिस पर भी मै मौन था। भारत आज अपने प्यारे बच्चों को फासी से छुड़ाने में असमर्थ है।"

इस घटना से यह प्रबल आशंका होने लगी थी कि कहीं भारत के नवयुवक काग्रेस से विद्रोह न कर बैठें। किन्तु भारतीय नेताओं

ने अपनी उच्च राजनीतिज्ञता का परिचय देते हुए, ब्रिटिश-साम्राज्यवादी चाल को विफल कर दिया।)

(सरदार भगतसिंह श्री सुखदेव और श्री राजगुरु की फांसी के वारंट बन चुके हैं। गांधी इर्विन समझौता हो चुका है। सारे देश में इन युवकों की रिहाई के लिए आन्दोलन हो रहा है।)

(पहला दृश्य)

(नेपथ्य में कोई कैदी गा रहा है)

* हैफ़१ हम जिस पै कि तैयार थे मरजाने को,
यक ब यक हमसे छुड़ाया उसी कासाने२ को।
दिल फ़िदा करते हैं क़ुर्बान जिगर करते हैं,
पास जो कुछ है वो माता की नजर करते है,
खानए-विरान३ कहां देखिए घर करते हैं,
खुश रहो अहलेवतन४ हम तो सफ़र करते हैं,
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को।

हम भी आराम उठा सकते थे घर रह रह के
हमको भी पाला था मां बाप ने दुख सह सह के,
वक़्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आए कहके,
गोद में आंसू जो टपकें कभी रुख५ से बह के,
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।

नौजवानो जो तबियत में तुम्हारी खटके,
याद करलेना कभी हमको भी भूले भटके,
आपका सारा बदन होवे जुदा कट कटके,
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके,
पर न माथे पै शिकन आए क़सम खाने को।

अपना कुछ ग़म नहीं लेकिन यह ख्याल आता है,
मादरे हिन्द पै कब तक यह ज़वाल आता है,
'हरदयाल'६ आता है पैरिस से न 'पाल'७ आता है,
कौम अपनी पै तो रह रह के मलाल आता है,
मुन्तज़िर'८ रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को,

(सेन्ट्रल जेल लाहौर का कार्यालय:—जेलर साहब का कमरा अलग है। आज वे किसी विशेष मामले के कागज़ पत्र देख रहे हैं। उसी समय एक शोर सा सुनाई देता है। जेलर ने मेज पर रक्खी हुई घन्टी बजाई। क्षण भर बाद ही पेटी लगाए एक आदमी चिक उठा कर अन्दर आया और अभिवादन करके आदेश की प्रतीक्षा करने लगा)

---

* प्रसिद्ध काकोरी षड्यन्त्र केस में बलिदान होने वाले स्वर्गीय रामप्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा लिखित:—

१—अफ़सोस २—घर ३—गृहविहीन ४—देशवासी ५—कपोल ६—ला० हरदयाल ७—विपिन चन्द्रपाल ८—प्रतीक्षा करने वाला।

(एक क्षण बाद)

जेलर:—(रूखे स्वर में) रहीम, यह कैसा शोर है? नारे कहां से लगाए जा रहे हैं?

रहीम:—हुज़ूर। (कुछ झुक कर) वही बम केस के क़ैदी हैं।

जेलर:—क्या मामला है?

रहीम:—(गरदन हिलाते हुए) सरकार मुझे कुछ पता नहीं। वह ··

जेलर:—अच्छा, अच्छा, (नीचे देखते हुए) ख्वाजा साहब को भेजो।

(पेटी वाला आदमी जान सी बचाकर बाहर निकल जाता है)

(कुछ देर बाद ख्वाजा साहब का प्रवेश)

ख्वाजा साहब:—(अन्दर आकर) फरमाइये! मुझे याद फ़रमाया था आपने।

जेलर:—(जान बूझ कर एक क्षण बाद, गर्दन ऊपर उठा कर) हां! मैंने आपको इस लिए बुलाया था, (कुर्सी की तरफ इशारा करके) तशरीफ़ रखिए, कि यह शोर सा कैसा क्या आज भी कुछ गड़बड़ कर रहे हैं ये लोग?

ख्वाजा साहब:—क्या बताऊं. मेरी तो रात की भी नींद हराम कर रक्खी है इन बम-केस वालों ने। वही लोग हैं। कोई गाता है, कोई नारे लगाने लगता है।

जेलर:—आप 'जेल मैनुअल' के मुताबिक़ उन्हें सजा क्यों नहीं

देते ? इन लोगों के साथ किसी भी तरह की रिआयत नहीं करनी चाहिए।

ख्वाजा साहब:—(नमकर) क्या अर्ज़ करूं। सोचता हूं सयासी कैदी हैं, इनके साथ सख्ती न करनी पड़े तो अच्छा। मगर आप जैसा हुक्म करे वैसा ही सही। उस रोज़ आपके हुक्म के मुताबिक़ उस १०५ नं० के कैदी को सारी रात खड़ी बेड़ियां लगाकर, बाहर ठंड मे खड़ा रक्खा गया। उसे नींद न आजाय इसलिए बार २ उसके जिस्म पर पानी भी डाला जाता रहा। मगर न जाने किस मिट्टी का बना है, उस पर कोई असर ही नहीं हुआ। सवेरे तीन बजे जब वह गिर पड़ा और बेहोश होगया तब उसे घसीट कर कोठरी में बन्द कर दिया गया। अब फिर उसका वही हाल है।

जेलर:—आज क्या मामला था ?

ख्वाजा साहब:—आज बात तो कोई खास नहीं थी। सिर्फ़ इतनी सी थी। कि बम केस के जिन कैदियों की शनाख्त के लिए, पुलिस को जरूरत पड़ती है, वह उनकी शनाख्त कराने के लिए, अपने कुछ गवाहों को उस नए दर्वाज़े अन्दर ले आती है।

जेलर:—वहीं दरवाज़ा, जो अभी २ पोशीदा तौर पर सरकारी हुक्म से यूरोपियन 'लौक अप' में बनवाया गया है ?

ख्वाजा साहब:—जी ! वही।

जेलरः—फिर ?

ख्वाजाः—(सटपटा कर) कल शाम, दो तीन बिना वर्दी के सिपाही चुपचाप उस दर्वाज़े से अन्दर आगए, तो किसी कैदी ने उनमें से एक सिपाही को पहचान लिया। और लगा शोर मचाने।

जेलरः—क्या कहने लगा ?

ख्वाजाः—(लापरवाही से) अजी और तो कुछ नहीं। यूंही चिल्लाने लगा कि "जेल में भी यह पुलिस वाले कैसे आजाते हैं ? टोडी-बच्चों को यहां किसने आने दिया ? यह शनाख्त करने आए हैं। हम पुलिस की पोल खोलेंगे" वग़ैरा २।

जेलरः—(भयभीत होते हुए) अच्छा ! यों कह रहा था। ओ, हो ? फिर ?

ख्वाजाः—फिर, पुलिस के सिपाहियों को तो फ़ौरन बाहर कर दिया गया। मगर उनकी पीठ मुड़ते ही बम-केस वाले कैदी नारे लगाने लगे। आज उन्होंने उन जमादारों पर भी आक्रमण किए जो उन्हें नाश्ते के लिए भुने हुए चने देने गए थे।

जेलरः—यह क्यों ? वो तो सब ऐजूकेटेड हैं ?

ख्वाजाः—हां, हैं तो सब पढ़े लिखे। मगर उन्हें यह शक होगया है, कि जमादार, उनकी पोशीदा बातें आपको या मुझे बतला देते हैं। इस पर कई कैदियों को तनहाई की

सजा दे दीगई। वही कैदी अपनी २ कोठरियों में जाते ही नारे लगाने लगे। उनकी आवाज सुन कर और कैदी भी उनके साथ शामिल होगए।

भगतसिंह, सुखदेव वग़ैरा, जिन्हें फांसी होने वाली है, उनके तो जोश का ठिकाना ही कुछ नहीं। यूँ तो क़ैद-तनहाई में हैं, वो लोग। मगर उनकी आवाज सुनते ही सारे सियासी क़ैदी जेल को सर पर उठा लेते हैं। वो लोग अक्सर वो गाना गाते हैं, "सर फ़रोशी की तमन्ना"। जब ये लोग अदालतों तक में नारे लगाने और इन्कलाबी गाने गाने से नहीं चूकते, तो जेल में भला उन्हें ऐसा कौनसा डर है? जिन्होंने अपनी जान की बाजी लगा रक्खी है, वो किससे डरने वाले हैं?

जेलर :— अब तो ठीक होगया सब? या अब भी कुछ गड़बड़ है।

ख्वाजा :—(संतोष प्रगट करते हुए) अब तो सब ठीक है।

(बाहर जाता है।)

(पट परिवर्तन)

(दूसरा दृश्य)

(भगतसिंह जेल की कोठरी में लेटे स्वप्न देख रहे हैं कि वे अपने कमरे में एक कुर्सी पर बैठे हैं, और उनके सामने तरुण भारत के प्राण, पं० जवाहरलाल नेहरू बैठे हुए उनसे बातें कर रहे हैं)

भगतसिंह:—माननीय पंडित जी ! आप तो कांग्रेस के प्रधान है। आप पर बहुत बड़ी जुम्मेदारी है और साथ ही साथ मैं यह भी समझता हूं कि क्रान्तिकारियों के लिए भी आपके मन में अगाध प्रेम और मोह है। सच पूछिए तो आप और बाबू सुभाषचन्द्र बोस ही है, जिन्हें भारत के नवयुवक अपना सच्चा नेता समझते है। आपके अदम्य उत्साह और जोश से ही भारत के नवयुवकों को देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है। किन्तु मैं यह न समझ सका कि आपके होते और इतना विरोध करते हुए भी यह 'गांधी-इर्विन-समझौता' कैसे हो सका ?

नेहरू जी:—प्यारे भगतसिंह ! मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूं। तुम्हारे उत्साह से भी परिचित हूं, जो कि तुम्हारा एक विशेष गुण है। तुममें यह गुण ठीक इस प्रकार से भरा हुआ है जिस तरह अंधेरी रात में एक चमकीला तारा। संसार तुम्हारी अनुपम वीरता और सच्ची देशभक्ति को देखकर चकित हो रहा है। तुम्हे शायद इस बात का पता नहीं, कि मैं तो प्रारम्भ से ही इस समझौते के विरोध में बोल रहा हूं। यह समझौता अभी तक 'कांग्रेस' ने स्वीकार नहीं किया है। मैंने तो स्वयं गांधीजी के ही सामने उस रोज दिल्ली में, समस्त कांग्रेसी नेताओं की मौजूदगी में कहा था कि, "गांधीजी ने ऐसा फिजूल समझौता करके अपने देश को वायसराय

के हाथ बेच दिया है।" इस के अलावा मैंने तो खुल्लम-खुल्ला कह दिया है कि "मैं केवल महात्मा गांधी का विरोध ही नहीं करूंगा बल्कि इसके लिए पूरी तरह झगड़ूंगा भी।" सुभाषचन्द्र बोस भी इस समझौते से सख्त नाराज है।

भगतसिंह:—अच्छा! वे भी गांधी जी के विरोध में बोल रहे हैं?

नेहरू जी:—हां, हम दोनों की ही क्या, देश के अधिकतर राजनैतिक विचार के नवजवानों का भी यही ख्याल है। हम तो चाहते हैं कि धीरे२ 'कांग्रेस' को मजदूर, किसान और सामान्यवर्ग अर्थात जनता की संस्था बना दिया जावे। तभी भारत में समाजवादी ढंग की सरकार स्थापित करना सम्भव हो सकता है।

(कुछ ठहर कर)

किन्तु चाहे बतौर 'पॉलिसी' ही सही, मेरा यह ख्याल है कि हम अहिंसात्मक ढङ्ग से ही अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध मोरचा ले सकते हैं। खास कर आजकल के हालात मे तो यह मुमकिन ही नहीं, कि अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध कोई सशस्त्र लड़ाई लड़ी जा सके। कुछ आदमियों को डरा धमका कर या मौत के घाट उठाकर हम थोड़े बहुत समय के लिए सरकार पर अपना आतंक ही बिठा सकते है, उसे

भारत छोड़ने, या हकूमत भारतीयों को सौंप कर चले जाने पर, मजबूर नहीं कर सकते।

भगतसिंह:—(प्रश्नात्मक) क्यों? इसका कोई ठोस कारण है?

नेहरू जी:—हां, इसके लिये अधिक प्रमाणों की आवश्यकता नहीं। तुम्हें शायद मालूम हो कि आजकल देश में सांप्रदायिकता ने भीषण रूप धारण कर रक्खा है। जगह २ साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं। दूसरी तरफ़ गवर्नमेण्ट ने साम्प्रदायिक मुसलमानों की क़मर ठोंकनी शुरू कर दी है। वे सामुहिक रूप से, कांग्रेस से किसी भी राजनैतिक कार्य या आन्दोलन में सहयोग करने के बजाय, लड़ाई झगड़े की धमकी देने लगे हैं।

भगतसिंह:—यह तो सरकार की पुरानी चाल है। इतिहास हमें बताता है कि विदेशी हुकूमत जन-साधारण के हाथ में सत्ता देने की मांग पर, इसी प्रकार के वर्गों को सामने खड़ा करके, देश में फूट और कलह प्रारम्भ करा देती है। किन्तु जबतक मजदूर और किसानों को जागृत नहीं किया जायगा, तब तक सरकार की यह चाल विफल नहीं की जा सकती।

नेहरूजी:—यह तो ठीक है किन्तु उसके लिये साधन और समय की भी तो बड़ी आवश्यकता है। इस समय राष्ट्रीय आन्दोलन के मुकाबले पर कई शक्तिशाली वर्ग गवर्नमेण्ट ने लाकर खड़े कर दिये हैं, जिनसे सुलटना आसान बात नहीं है।

साम्प्रदायिकता तो धर्म की आड़ लेकर राष्ट्रीय-आन्दोलन को नुकसान पहुंचा ही रही है; फिर नौकरशाही, सरमायेदारी जागीरदारी और खिताब-याफ्ता-टोडियों की भी एक पूरी फौज है, जो हर प्रकार से सम्पन्न है। ऐसे समय में तुम जैसे कर्मठ और क्रान्तिकारी विचारों के नवजवानों की देश को कितनी आवश्यकता है, यह तुम्हे बताने की आवश्यकता नहीं। आज देश तुम्हे भी उतना ही जानता है जितना गांधी जी को। बच्चे बच्चे की जबान पर तुम्हारा नाम है। मैं तो तभी से तुम्हारी बहादुरी पर मुग्ध हूं। जब तुमने अपने मुक़दमे के दौरान में पूरे ११५ दिन भूख हड़ताल करके सारी दुनिया को चकित कर दिया था।

(सरदार भगतसिंह अपने महान शुभचिन्तक और राष्ट्रीय नेता के मुख से अपनी बड़ाई सुनकर उनकी महान हृदयता की मन ही मन प्रशंसा करते हैं, और उठकर उनके चरण पकड़ लेना चाहते हैं। कुर्सी से उठने का विचार करते ही उनकी निद्रा भंग हो जाती है। उसी समय उन्हें सुनाई देता है कि डिप्टी जेलर का मुर्गा अजान दे रहा है। "कुकड़ू कू ! कुकड़ू कूं !!)

(पट परिवर्तन)

(तीसरा दृश्य)

२३ मार्च १६३१ को:—

(जेलर अपने दफ्तर में बैठा कुछ कागज देख रहा है। थोड़ी

देर बाद मेज़ पर रक्खे हुए टेलीफोन की घण्टी बजती है ! जेलर फोन का चोंगा उठाकर कान में लगाते हुए बोलता है)

"हैलो ! हैलो ! ! हां, यस, सैन्ट्रल जेल,"...

"गवर्नमेंन्ट हाउस से ?"

"अच्छा"

"मेरे पास नहीं आये, कल आये थे मि. आसफ़अली।"

"आज आने का वायदा जरूर कर गये थे।"

(कुछ देर टेलीफोन पकड़े बैठा रहता है फिर कुछ सुन कर)

"अच्छा !" (अचम्भे में) क्या कहा ? आज साढ़े सात बजे ? मगर यह तो 'जेल मैनुअल' के कतई खिलाफ है ? क़ायदे के मुताबिक़ सवेरे के वक्त ही फांसी लगाई जा सकती है । खैर आप तमाम कागजात और आर्डरस देकर इन्सपैक्टर साहब को भेज दें। फांसी का वारंट हमारे यहां मौजूद है । (कुछ देरबाद)

"मजिस्ट्रेट ?"

(लापरवाही से) "कोई भी हो उसमें कोई फ़िक्र की बात नहीं है । मगर लाशों का क्या होगा ?"

"तीनों की लाशों को ?" "किसी भी वारिस को न दी जायेगी ? बहुत अच्छा"

"क्या नुकसे-अमन का अन्देशा है ? मगर रात को ही करना होगा, रावी की बजाय सतलुज पर ठीक रहेगा। वह है भी लाहौर से दूर। किसी को शक भी नहीं हो सकता।"

"इसमें क्या देर लगती है, तीनों लाशों को लारी में डलवा कर भेज दिया जायगा।"

"क्या फ़रमाया ? टुकड़े टुकड़े करवा कर ? मिट्टी का तेल ?" खैर देखा जायगा, आप पुलिस का काफ़ी इन्तज़ाम करा लें। तमाम शहर में यह खबर आग की तरह फैल जानी लाज़मी है। हर मौके पर झगड़ा हो जाने का अन्देशा है।

(चौंगा कान में लगाए कुछ देर तक सुनता रहता है)

"आख़िरी मुलाकात भी किसी से नहीं कराई जायगी, बहुत अच्छा, ऐसा ही लीजिये। अच्छा ? मां, बाप, भाई और बहनों से कराई जा सकती है ? अच्छा।

"राख ? (कुछ जोर से) हां, मैं नहीं समझ सका, बाद में न ? अच्छा।"

"लाशों की राख ?"

"दरियाए सतलुज में बहा दी जायगी, कोई निशान बाक़ी नहीं रहेगा।"

"बहुत अच्छा ! अच्छा, ऐसा ही होगा, ठीक है। किसी को भी कानों कान ख़बर नहीं हो सकती, आप बेफ़िक्र रहें, अच्छा।"

(चौंगा टेलीफ़ोन पर रख देता है)

(थोड़ी देर बाद एक कार्ड लिए हुए रहीम का प्रवेश)

रहीमः—(कार्ड मेज़ पर रखते हुए) यह कार्ड ख्वाजा साहब ने

भेजा है। ये साहब कल भी आये थे हुजूर से मिलने।

जेलर:—(रूखे स्वर मे) अन्दर भेज दो।

(कुछ क्षण पश्चात श्री आसिफअली का प्रवेश, चुस्त पाजामा, लम्बा कोट, सर पर गाधी कैप पहने हुए हैं। एक संक्षिप्त सा बैग उनकी बगल में है। जेलर अनिच्छा स अभिवादन के लिए खड़े होते हुए।)

जेलर:—हैलो! आइए। आपने आज फिर तकलीफ़ की, (कुर्सी की ओर इशारा करते हुए) तशरीफ़ रखिए।

आसिफअली:—(बैठते हुए) मुझे तो आना ही था। कहिए! आपके पास आया कोई आर्डर, होम मिनिस्टर पंजाब का?

जेलर:—(सूखी मुस्कराहट के साथ गर्दन हिलाते हुए) बैरिस्टर साहब! आपको बड़ी तकलीफ़ हो रही है। अफ़सोस! हमारे पास अभी तक कोई हुक्म नहीं है।

आसिफअली:—मैंने कल गांधी जी को भी 'वायर' कर दिया था। उन्होंने भी कल ही लार्ड इर्विन को तार दे दिया होगा। आज तो पंजाब गवर्नमेण्ट के पास से इत्तला जरूर आ जानी चाहिये। अब तीन बजने वाले है। (स्वतः) (सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट भी पजाब गवर्नमेण्ट के खिलाफ़ कुछ नहीं कर सकती। मगर पंजाब गवर्नमेण्ट तो इन्कलाब पसन्दों को कुचलने पर तुली हुई है)

(कुछ ठहर कर)

मगर मुलाक़ात में आज इतनी अड़चने किस लिए?

गवर्नमेण्ट हाउस में तो मुझे कहा गया था कि पंजाब गवर्मेण्ट को एतराज ही कुछ नहीं। कभी कहा जाता है कि गवर्मेण्ट जेलर को हिदायतें दे चुकी है। आप फर्माते हैं कि मुझे कोई हुक्म ही नहीं दिया गया है। अजीब परेशानी है। क्या गवर्नमेण्ट ने फांसी का कोई हुक्म दे दिया है?

जेलर:—(गर्दन हिलाते हुए) इस बारे मे भी अभी तक हमें कोई हुक्म नहीं दिया गया है। यूं तो फांसी का वारंट हमारे पास हफ्तों पहले का आया हुआ है। वैसे मैं आपको कोई पोशीदा राज़ बताने की पोजीशन में भी नहीं हूं।

(ह, ह, ह, ह की सूखी हसी हसता है)

आसफअली:—(कुछ सोच कर) तो फिर ऐसी सूरत मे मुझे क्या करना है? क्या मैं और इन्तज़ार करूं? मेरी मुलाकात का असर, इस वक़्त तमाम मुल्क पर पड़ सकता है। इस अमर का आप ख्याल रखिए।

जेलर:—(गम्भीरता से) मेरा तो खयाल ये है कि आज तो अभी तक कोई भी हुक्म हमें मिला ही नहीं है। फांसी तो बहरहाल 'जेल-मैनुअल' के मुताबिक सबेरे ही दी जा सकती है। मगर मैं मजबूर हूं कि आपको भगतसिंह वगैरा से मुलाकात की आज भी इजाज़त नहीं दे सकता।

आसिफअली:—हां! फांसी का तो आज कोई टाइम ही नहीं रहा। फिर भी अगर जरूरत पड़े तो आप मुझे डा० किचलू की कोठी पर फ़ोन कर सकते हैं। उनका फ़ोन नम्बर है

"फ़ोर सैवन वन"। किसी भी तरह अगर मुमकिन हो सके तो मुझे आज इन लोगों से मिलने की इजाजत देने मे गवर्मेंएट का कुछ नुक़सान नहीं होगा।

(कुर्सी से खडे होते हुए)

अच्छा ! माफ़ कीजिये ! (हाथ मिलाने को आगे बढाते हैं)

जेलर:—(हाथ मिलाते हुए) "आल राइट, थैंक्यू" मुझे अफ़सोस है कि मै आज भी आपकी मन्शा पूरी न कर सका। (मुस्कराने की कोशिश करते हुए हाथ मिला कर अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है)

(पट परिवर्तन)

चौथा दृष्य

(भगतसिंह अपनी कोठरी में बन्द, किसी विचार मे मग्न हैं. मुख पर शान्ति और गम्भीरता छाई हुई है)

भगतसिंह:—(स्वत. ही) आज क्या कारण है ? आज मुझसे मिलने वालों में कोई भी बाहर का आदमी नहीं आने दिया गया। और तो और मेरे अन्य कुटुम्ब वालों को भी मिलने की इजाजत नहीं दी गई। बाबा जी तो आज अवश्य ही आने का वायदा कर गए थे। उन्हें पुलिस ने क्यों नहीं मिलने दिया ? दादी जी भी बिचारी ७५ वर्ष से ऊपर होगई हैं। उनका तो मुझ पर बहुत ही मोह है।,,

"तीनों बहिनों, 'कुलबीर' और 'कुलतार' को तो देखो ! आज तो 'कुलतार' की आखों में आसू देखकर मुझे बड़ा दुखः हुआ। पत्र तो मैंने उसे लिख दिया है—

(उसी समय जेब से एक पर्चा निकाल कर, जिस पर पैन्सिल से कुछ लिखा हुआ है, पढते हैं)

अजीज कुलतार !

आज तुम्हारी आंखों में आंसू देखकर बहुत रन्ज हुआ। आज तुम्हारी बातों में बहुत दर्द था, तुम्हारे आंसू मुझसे बर्दाश्त नहीं होते।

बर्खुर्दार ! हिम्मत से शिक्षा प्राप्त करना, और सेहत का ख्याल रखना—हौसला रखना, और क्या कहूं:—

उसे यह फ़िक्र है हर दम, नया तर्जे जफ़ा क्या है,
हमें यह शौक़ देखें तो सितम की इन्तहा क्या है।
घर से क्यों ख़फ़ा रहें चर्ख़ का क्यों गिला करें,
सारा जहां उदू सही आओ मुक़ाबला करें।
कोई दम का महमां हूं, ऐ अहले महफ़िल,
चिराग़े सहर हूं बुझा चाहता हूं।
मेरी हवा में रहेगी, ख़्याल की बिजली,
यह मुश्ते ख़ाक है फानी रहे या न रहे।

अच्छा। आज्ञा ! खुश रहो अहले वतन हमतो सफ़र करते हैं। हौसले से रहना, नमस्ते !

तुम्हारा भाई—
भगत सिंह

(कुछ ठहर कर)

' भागों वाला"

दादी जी का "भागों वाला" भगतसिंह, उनके आज दर्शन भी नहीं करसका।

"भागों वाला" तो मुझे इसी लिये कहती है, कि मेरे उत्पन्न होते ही मेरे पिता जी नैपाल से वापिस आए। मेरे चचा सरदार स्वर्णसिंह जेल से वापिस आए। और दूसरे चचा सरदार आजीतसिंह जी की 'मांडले जेल' से छुटने की सूचना मिली। मेरे परिवार वालों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। तभी से वो मुझे भागों वाला कहती हैं।"

"लो ! तुम्हारा भागोंवाला भी आज अपनी जीवन लीला समाप्त कर रहा है। तुम्हारे नाम को भारत की तारीख में हमेशा के वास्ते रोशन करने जारहा है।

(आखो में आसू आते हैं)

(कुछ क्षण पश्चात संभल कर, जोश में) भगतसिंह ! तुम्हारा रास्ता साफ है। जब वर्षों से तुम्हे अपने घर कुटुम्ब से कोई सम्बन्ध नहीं रहा. तुम तो सम्पूर्ण देश को अपना घर, और समस्त देश वासियों को अपना कुटुम्बी समझते हो, फिर यह ख्याल क्यों ?

"तुम कुत्तों की मौत नहीं मर रहे ? आज तुम अपने उस लक्ष्य को प्राप्त करने जारहे हो जिसके लिए तुमने अपार कष्ट झेले हैं। तुम्हारी कुर्बानी हिन्दुस्तानी जनता में

अंगडाई लारही है। साम्राज्य वादी सरकार कांप रही है. । उसका साम्राज्य-वादी-गढ़ डगमगा रहा है।"

(जोश से)

भगतसिंह के खून. की एक २ बूंद से हजारों भगतसिंह पैदा होंगे। भगतसिंह की मौत से एक ऐसा तूफान उठेगा, जो हिन्दुस्तान में 'मलूकियत परस्तों' के लिए मौत की घण्टी होगा। बस ! अब आखिरी फर्ज की अदायगी के लिए तय्यारी करो। आज दुनियां के इन्क़लाब पसन्दों की रहनुमाई करते हुए, सच्चे आदर्श पर बलिदान होकर, एक बार फिर तहल्का मचादो। दुनिया को दिखादो कि साम्राज्य वादी हकूमत को समाप्त करने और जनता की, किसान मजदूरों की, हकूमत क़ायम करने के लिए, सच्चे क्रान्तिकारी, इस तरह हंसते २ अपने आप को कुर्बान कर देते है। फांसी के तख़्ते को चूमा करते हैं, करोड़ों कमजोरों की ताक़त बढ़ाने के लिए, जुल्म का खात्मा करने के लिए !

जालिम स्कॉट बच गया। खैर उसकी भी कोई मेरे जैसा ही खबर लेगा।

(पर्दा गिरता है)

(पांचवां दृश्य)

(भगतसिंह फांसी की कोठरी मे शात भाव से बैठ कर कुछ सोच रहे हैं)

आज जरुर साम्राज्य शाही अपना असली रूप दिखायगी। इसीलिए आज मुलाक़ातों पर कुछ पावन्दी लगाई गई मालूम होती है। सचाई पर चलने वालों को मौत की सज़ा दी जाती है, ग़रीबों का गला घोटने वाले ऐश करते है। यही साम्राज्य वादी हुकूमत का असली रूप है। मगर इन जालिमों को यह इल्म नहीं, कि जनता के ख्यालात को सख्ती से दबाने का वही प्रभाव होता है, जो रवड़ की हवा भरी हुई गेंद को पीटने से।

'कार्ल मार्क्स' ने ठीक लिखा है कि "कोई विदेशी सरकार जब किसी गुलाम देश के जन प्रिय नेता पर सख्ती करती है तो वहां की जनता भीतर ही भीतर सरकार से घृणा करने लगती है, और कोई भी मौका मिलने पर विद्रोही हो उठती है। किसी विदेशी सरकार को, किसी देश की जनता की असमर्थता का यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि वह सरकार से सन्तुष्ट है"

इस समय भारत में भी वही ववडर उठ रहा है। अब साधारण जनता भी क्रान्तिकारियों से सहानुभूति प्रकट करने लगी है।

(उसी समय जेल का 'हेडवार्डर' उनकी कोठरी की ओर आता दिखाई देता है। उसके साथ एक जमादार भी है। वह कोठरी का ताला खोलने लगता है)

भगतसिंह:—(व्यंग पूर्ण मुद्रा में) कहिये जनाव! आज तो आप बड़ी जल्दी २ तशरीफ़ लारहे है। अब फिर मुझे कोई ख़ास

पैग़ाम देना है क्या ?

(हैड वार्डर बिल्कुल शान्त रहता है जैसे उसने सुना ही नहीं। ताला खुलने पर लोहे की मोटी ज़ंजीर झनन झनन करती हुई नीचे लटक जाती है। और लोहे का भारी दरवाज़ा एक कर्कश स्वर निकालता हुआ खुल जाता है। जमादार को बाहर छोड़ कर चीफ वार्डर भीतर प्रवेश करता है।)

चीफवार्डर:—सरदार जी नमस्ते !

भगतसिंह—नमस्ते ! आइए ! आज तो आपने बड़ी खुशखबरी सुनाई। मेरे जीवन का चिर-प्रतिक्षित उद्देश आज पूरा होने जारहा है।

चीफ़ वार्डर:—मि० भगतसिंह ! आप जैसे महानपुरुष संसार में थोड़े ही होते हैं। अपने देश और जन साधारण की भलाई के लिए असहाय-यातनाएं झेल कर, अपने आप को हंसते २ बलि चढ़ा देना साधारण मनुष्य का काम नहीं है।

भगतसिंह—यह मेरे लिए कोई विशेष बात नहीं। मैं तो अपने कर्तव्य का ही पालन कर रहा हूं।

चीफ़ वार्डर.—मैं अन्तिम दिन आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूं।

भगतसिंह:—खूब ! फ़रमाइए ! आखिर इतने दिन आपके साथ रहते हो गये है, और आज तो समस्त संसार ही से नाता टूट रहा है। (चीफ वार्डर की ओर प्रश्नात्मक मुद्रा में देखने

लगते हैं) कहिये ?

चीफ़ वार्डर:—अब आपकी फांसी में थोड़ा ही समय रह गया है।

भगतसिंह:—(लापरवाही से) यहां तो चाहें जब भी फांसी पर चढ़ाया जा सकता है, जिसकी लाठी उसकी भैंस।

चीफ़ वार्डर:—मेरी प्रार्थना है कि आप अब इस संसार की तमाम बातों से ध्यान हटा कर, उस परम पिता परमात्मा का ध्यान करें जिसकी शरण में, मरने के बाद, सबको जाना होता है।

भगतसिंह:—क्या कहा ? परमात्मा का ध्यान करूं ? (मुस्कराते हैं)

चीफ़ वार्डर:—मेरा आशय यह है कि अन्तिम समय में यदि आप धार्मिक ग्रन्थों के कुछ श्लोकों का जप करेंगे तो आप, मृत्यु के बाद, सीधे स्वर्ग को जायगे।

(चीफ़ वार्डर की बात सुनकर भगतसिंह खिलखिला कर हंस पड़ते हैं)

भगतसिंह:—मेरे अज़ीज दोस्त ! मैंने तमाम ज़िन्दगी में कभी परमात्मा पर विश्वास नहीं किया। अब अगर मैं, फांसी से चन्द घण्टे पहले, उससे इल्तजा करूंगा, तो वह मुझे अव्वल दरजे का बुज़दिल समझेगा, और कभी माफ़ नहीं करेगा। इससे मुझे, ईश्वर-भक्त बुज़दिल इन्सान के बजाय, एक गुनाहगार मगर दिलेर इन्सान की तरह मरने दो।"

(चीफ़ वार्डर शर्मिंदा सा होकर खड़ा होजाता है। और भगतसिंह

की महान हृदयता तथा निर्भीकता पर अचंम्भा करते-हुए कोठरी से बाहर निकल जाता है)

(पट परिवर्तन)

(छटा दृश्य)

२३ मार्च १९३१

(फांसी-गृह में, तीनों क्रान्तिकारियों, श्री भगतसिंह श्री सुखदेव और श्री राजगुरु को फांसी देने की व्यवस्था की गई है। एक मजिस्ट्रेट, जेल के डाक्टर, जेलर और फांसी-गृह के चार कार्यकर्ता मौजूद हैं। सूर्य अस्त हो चुका है। साढ़े सात बजने वाले हैं। लाहौर का सेन्ट्रल जेल "इन्कलाब ज़िन्दाबाद" "साम्राज्यवाद मुर्दाबाद" के नारों से गूंज रहा है। उसी समय तीनों नवयुवक फांसी-गृह में लाए जाते हैं। तीनों प्रसन्नचित्त मालूम होते हैं।)

मजिस्ट्रेट :—(नवयुवकों को लक्ष्य करके) अब आप लोगों को क़ानून के मुताबिक फांसी दी जाती है, इस लिए आपकी यदि कोई उचित मांग होगी तो उसको पूरा किया जायगा। आपको जिस चीज़ की इच्छा हो कहिये। आपकी अन्तिम इच्छा को भी पूरा करने का प्रयत्न किया जायगा।

भगतसिंह:—हमने समस्त जीवन ब्रिटिश-साम्राज्य शाही के विरुद्ध विद्रोह करके बिताया है, अब अन्तिम समय में

हम उससे क्या मांगेंगे। और क्या आप हमें देंगे।

राजगुरु:—क्या आप हमारी अन्तिम इच्छा को पूर्ण करने का वचन दे सकते हैं?

मजिस्ट्रेट:—मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूंगा।

सुखदेव:—हम चूंकि शाही क़ैदी हैं और हम पर सम्राट के विरुद्ध संग्राम करने का अभियोग है…

भगतसिंह:—(बीच ही में टोक कर) इस लिए हमारी हार्दिक इच्छा है कि हमें फौज का एक टुकड़ी बुलवा कर, गोली से उड़वा दिया जावे। हमें इस प्रकार फांसी पर चढ़ाना हमारी मानहानि करना है।

मजिस्ट्रेट:—(गरदन हिलाते हुए) मुझे दुःख है कि मैं आप लोगों की यह इच्छा पूरी करने में असमर्थ हूं।

भगतसिंह:—फिर यह ख़ानापूरी करने का क्या प्रयोजन? आपको जो कुछ रस्म अदा करनी है कीजिए।

मजिस्ट्रेट:—(डाक्टर की ओर लक्ष्य करके) डाक्टर साहब! इन का डाक्टरी मुआयना कीजिए।

डाक्टर:—बहुत अच्छा। (डाक्टर साहब तीनों नवयुवकों का डाक्टरी मुआयना करते हैं। छाती की भी परीक्षा करते हैं)

भगतसिंह:—भाई राजगुरु और सुखदेव जी! हम लोगों ने वर्षों तक ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध युद्ध किया है। और आज भी साथ ही साथ हम लोग अपनी जीवन लीला समाप्त करने जा रहे हैं। अब हम भी शीघ्र ही

भगवतीचरण से जा मिलेंगे। (ठहर कर)

यदि ईश्वर का कुछ अस्तित्व है तो हमारी प्रार्थना है कि हमें पुनः भारतवर्ष में ही जन्म दे। ताकि हम ब्रिटिश साम्राज्य-शाही के विरुद्ध जारी किए हुए युद्ध मे भाग लेकर अगले जन्म में इसकी समाप्ति देख सकें।

(इतना कह कर सुखदेव से गले मिलने लगते हैं। इस प्रकार तीनो आपस में गले मिलते हैं)

मजिस्ट्रेट:—(जेलर की ओर इशारा करके) सात बज कर सत्ताईस मिनट हो चुके हैं।

जेलर:—नक़ाब* चढ़ाओ!

(एक आदमी तीनों को नकाब देने लगता है)

भगतसिंह:—किस लिए?

मजिस्ट्रेट:—जेल का नियम है।

भगतसिंह:—जब हम स्वयं फांसी खाने को उद्यत है, तो फिर इस 'नकाब' की कोई आवश्यकता नहीं है। आप बिल्कुल चिन्ता न करें।

जेलर:—क्या आप लोग अपने हाथ भी बंधवाना पसन्द न करेंगे?

भगतसिंह:—हर्गिज़ नहीं! हम नहीं चाहते कि हमारी गर्दनों

---

*एक प्रकार की काली टोपी जो फांसी से पहले पहनाई जाती है ताकि मुंह ढक जाए।

में फांसी का फन्दा कोई और डाले। हम आपको इसकी भी तकलीफ़ नहीं देना चाहते।

(जेलर और मजिस्ट्रेट एक दूसरे को देखते हैं। डाक्टर भी इस उत्तर को सुन कर दंग रह जाता है)

मजिस्ट्रेट:—फांसी का समय हो गया। (नवयुवकों को लक्ष्य करके) अब आप लोगों को फांसी के तख्ते पर चढ़ जाना चाहिए। और यह लटकता हुआ फन्दा…

उसकी बात पूरी होने से पूर्व ही तीनों नवयुवक तख्तों पर चढ़ जाते हैं, और पूरी आवाज़ से नारे लगाने लगते हैं)

"इन्कलाब" "ज़िन्दाबाद"

"साम्राज्यवाद", "मुर्दाबाद"

(सारी जेल में नारे गूंज उठते हैं। उसी समय जेल के अन्य बन्दी भी आकाश को गुंजा देने वाली आवाज़ से पुकार उठते हैं)

"इन्क़लाब ज़िन्दाबाद"

"भगतसिंह ज़िन्दाबाद"

"सुखदेव ज़िन्दाबाद"

"राजगुरू ज़िन्दाबाद"

"ब्रिटिश सरकार मुर्दाबाद"

(तीनों नवयुवक नारे लगाने के पश्चात, लटकते हुए फन्दों को गलों में डाल लेते हैं और गाने लगते हैं)

"मां रंग दे बसन्ती चोला—मां रंग दे बसन्ती चोला"

(इशारा पाते ही तख्ते हटते हैं और माई के तीनों लाल

हंसते हसते अपनी जीवन-लीला समाप्त कर देते हैं। एक एक हिचकी और "बस। हाथ पांव कुछ हिल-डुल कर रुक जाते हैं। आंखें" जीभ"'चेहरा सब भयानक हो जाते हैं। 'हृदय-हीन दर्शकों' के दिल भी भर आते हैं)

मजिस्ट्रेट:—डाक्टर साहब! अब तो काम खत्म हुआ। आप फिर परीक्षा कीजिए।

डाक्टर:—(मरे मन से उठते हुए) अच्छा!

(डाक्टर तीनों लटकी हुई लाशों की, जो अभी तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मजाक उड़ा रही मालूम देती हैं, परीक्षा करता है)

डाक्टर:—फिनिश! अब कुछ बाकी नहीं रहा!

(कुछ देर बाद)

(कुछ व्यक्ति लाशों को फन्दों पर से उतार कर नीचे पटक देते हैं)

मजिस्ट्रेट:—(जेलर से) डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट का आदेश है कि तीनों लाशें गोरा-मिलिटरी को सौंप दी जावें।

जेलर:—बहुत अच्छा! (जेल के बन्दी बराबर नारे लगा रहे हैं)

(नेपथ्य में गाया जा रहा है)

भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलाम-खाना,
आजाद होगा होगा आता है वह जमाना।
तेगों के साए में हम, पल कर जवां हुए हैं,
एक खेल जानते हैं फांसी पै झूल जाना।

(पट परिवर्तन)

(सातवां दृश्य)

[लाहौर जेल का फांसीघर। साढे सात बज चुके हैं। कुछ गोरे सैनिक व अधिकारी मौजूद हैं। एक सैनिक अधिकारी जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से बातें कर रहा है। कुछ सशस्त्र गोरे सैनिक विशेष परिस्थिति का सामना करने के लिए तयार रक्खे गये हैं।]

गोरा फौजी।— (सुप० जेल को लक्ष्य करके) गवर्मेण्ट का आर्डर है कि इन तीनों लाशों को रातों रात खत्म कर दिया जावे।

सुप० जेलः—हां, इस समय शहर में भयानक अशान्ति के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे है।

गोरा फौजीः—अशान्ति ही नहीं विद्रोह का भी पूरा भय है। कई सौ फौजी बाहर से बुलाए गए हैं। आकाश में हवाई जहाज इसीलिए उड़ रहे हैं कि जनता में आतंक जमाया जासके और हर परिस्थिति का सामना किया जासके।

सुप० जेलः—आपके विचार में दमन की यह नीति कहां तक ठीक है? क्या भारत के क्रान्तिकारियों और आतंकवादियों को इस प्रकार फांसियां दे देकर, शान्ति स्थापित की जा सकती है?

गोरा फौजीः—(मुस्करा कर) मित्रवर! हम सरकारी कर्मचारी की हैसियत से तो सरकार की किसी नीति की आलोचना नहीं कर सकते। किन्तु मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि लार्ड इर्विन की नीति इस विषय में अधिक ठीक थी।

सुप० जेलः—वह क्या थी ? क्या वे इन फांसियों के विरुद्ध थे ?

गोरा फ़ौजीः—विरुद्ध तो नहीं थे, किन्तु वे मि० गांधी से, एक बार इस बात पर सहमत हो गये थे, कि यदि ये नवयुवक हिंसा पर से अपना विश्वास हटा लें, और भविष्य में अहिंसक रहने का लिखित वचन दे दें, तो इनकी फांसियां टल जाएं। इन्हें बचाया जा सकता था। किन्तु...

सुप० जेलः—(उत्सुकता से) किन्तु क्या ?

गोरा फौजीः—वह मामला प्रान्तीय सरकार से सम्बन्धित था। वायसराय पंजाब गवर्नर की इच्छा के विरुद्ध भी तो कोई आदेश नहीं दे सकते थे ? पंजाब गवर्नर इन क्रान्तिकारियों की फांसी की सजा घटाने के विरुद्ध थे।

सुप० जेलः—अच्छा ! तभी मि० आसफ़अली से इन क़ैदियों की मुलाकात न होने देने का आदेश होम मेम्बर ने दिया था। तभी 'जेल मैनुअल' की उपेक्षा करके यह फांसियां संध्या समय दिलाई गई है।

गोरा फ़ौजीः—(बात बदल कर) हां कहां हैं वे लाशें ? आठ बजने वाले हैं। दो घण्टे और भी लग जाएंगे।

सुप० जेलः—आपके आदेश के अनुसार, गोरे फ़ौजियों ने उन लाशों के टुकड़े टुकड़े करके तीन बण्डल बना दिये हैं। और उन्हें लारी में रखवाया जा रहा है।

गोरा फ़ौजीः—क्या पिछली दीवार तोड़ दी गई ?

सुप० जेल:—हां दीवार तोड़ कर गुप्त मार्ग वना लिया गया है। वह देखिए।

(उङ्गली का इशारा करता है। दोनों लारी के समीप जाते हैं और सैनिक भी पीछे पीछे आते हैं)

गोरा फ़ौजी:—अच्छा! सब ठीक हो गया? कैरोसीन आइल के कितने टीन हैं?

सुप० जेल:—छै टीनें लारी में रखवा दिये गये हैं। कुछ लकड़ियां और रद्दी कपड़े भ है।

गोरा फ़ौजी:—(एक अन्य गोरे से) मि० फिलिप्स! वीस जवान।

मि० फिलिप्स:—वहुत अच्छा जनाव! किस स्थान पर चलना ह ग ।?

गोरा फ़ौजी:—फिरोज़पुर रोड, रिवर सतलुज', नीयर ओल्ड ब्रिज।

(उी समय फिलिप्स हल्की सी सीटी बजाता है और वीस गोरे फौजी लारी पर चढ़ जाते हैं। एक गोरा फ़ौजी लारी-ड्राइवर की सीट पर बैठता है। एक दो पुरजों के चलने की आवाज होती हैं)

मि० फिलिप्स:—(ड्राइवर को लक्ष्य करके धीरे से) फिरोज़पुर रोड, रिवर सतलुज नीयर ओल्ड ब्रिज!

(गोरे फौजियों से भरी लारी, तीनों क्रान्तिकारियों की लाशों के टुकडों को लेकर, उन्हें सतलुज के किनारे (लाहौर से ४५ मील दूर) मिट्टी का तेल डालकर भस्म कर देने के लिए, तेजी से चलने लगती है। और कुछ मिनट बाद दृष्टि से दूर होजाती है।)

(जेल में नारे बराबर लग रहे हैं। बन्दियों ने जेल सर पर उठा रक्खा है। कभी २ नगर मे से भी इसी प्रकार के जोरदार नारे सुनाई देते है, लाहोर की इस भयानक रात्रि का वातावरण "भगत सिंह जिन्दा बाद" "साम्राज्यवाद मुर्दाबाद" "इन्कलाब जिन्दा-बाद" के नारों से गूंज रहा है।

(कुछ देर बाद नैपथ्य मे गाया जारहा है)

अपने अजदाद के घर हमने उजड़ते देखे,
अपने हमदर्द कई जेल मे सड़ते देखे,
खाक और खूं मे जवांमर्द लिथड़ते देखे,
सर फरोशाने-वतन मौत से लड़ते देखे,
खून रोती हुई बहनों को सिसकते देखा।
बाल खोले हुए मिट्टी में तड़पते देखा।

(पट परिवर्तन)

अगस्त
क्रान्ति के दिन
७

अगस्त-क्रान्ति के दिन

के

पात्र

अगस्त १९४२:—

अंग्रेज सैनिक अधिकारी।

भारतीय सैनिक अधिकारी।

रेल का गार्ड।

पुलिस के अधिकारी।

वृद्ध ग्रामीण।

देशमुख:—देश रक्षक दल का अधिकारी।

युवक:—समानान्तर सरकार का संचालक।

युवतियां।

पुलिस व फौज के अनेकों अंग्रेज व भारतीय सिपाही और जन-समूह।

अगस्त-क्रान्ति के दिन

सन १६३५ के लगड़े-लूले विधान के अनुसार भारत में प्रान्तों को स्वतन्त्रता देने का ढोंग रचा जा चुका था। आठ प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारें जैसे-तैसे कार्य कर रही थीं। हरिपुरा और त्रिपुरी के कांग्रेस अधिवेशनों के लिये, दोनों वर्ष, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस को राष्ट्रपति चुना गया। त्रिपुरी में उनका राष्ट्रपति चुना जाना गांधी जी ने अपनी हार समझा। 'नेता जी' ने उस समय ब्रिटिश सरकार को ७ महीने का अल्टीमेटम देकर अन्तिम आन्दोलन जारी करने को कहा। उनकी किसी ने न सुनी।

उसी वर्ष द्वितीय विश्व-व्यापी-युद्ध का आरम्भ हुआ। कांग्रेस ने उस समय तक युद्ध में सहायता देना ठीक न समझा. जब तक ब्रिटिश सरकार भारत की स्वतन्त्रता की गारण्टी न कर दे। इस मांग को ब्रिटिश सरकार ने अनसुनी करके, भारत की इच्छा के विरुद्ध, भारत की ओर से युद्ध घोषित कर दिया। और भारत के समस्त साधनों का स्वतन्त्रता पूर्वक उपयोग होने लगा। कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह जारी किया। कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों ने भी त्यागपत्र दे दिये। ब्रिटिश सरकार किसी भी मूल्य पर युद्ध कार्यों में बाधा को बर्दाश्त नहीं करना चाहती थी।

जापान के एशिया में बढ़ आने और मलाया. सिंगापुर, बरमा आदि पर अधिकार कर लेने के बाद, भारत में क्रिप्स-मिशन आया।

उसे असफल लौटना पड़ा। देश की दासता और अपमान-जनक परिस्थिति को देख कर कांग्रेस ने बम्बई अधिवेशन में प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकृत किया। गांधी जी ने घोषणा की कि "पूर्ण गति-अवरोध, हड़ताल और समस्त अहिंसात्मक साधनों का प्रयोग करके प्रत्येक व्यक्ति अहिंसा के अन्तर्गत चरम सीमा तक जाने के लिए स्वतन्त्र है। सत्याग्रही मरने के लिये बाहर जायें, जीने के लिये नहीं। राष्ट्र का उद्धार केवल इसी दशा में होगा। जब लोग मृत्यु को ढूंढने और उसका सामना करने के लिये बाहर निकलेंगे। करेंगे या मरेंगे।"

८ अगस्त को प्रस्ताव पास हुआ। यह प्रस्ताव समस्त देश की आवाज़ थी। आधी रात के पश्चात से ९ अगस्त १९४२ के प्रातःकाल त समस्त नेता बम्बई में ही पकड़ लिये गये। जो बचे उन्हें अपने घरों पर पहुंचने से पहले ही जेल में ठूस दिया गया। नेता अज्ञात स्थान को भेज दिये गये। इस समाचार से समस्त देश में एक तूफान सा आ गया। उसी दिन भारतमन्त्री मि० एमरी ने कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी का स्पष्टीकरण करते हुए एक भाषण दिया, जिसमें कहा गया कि भारतीय नेता युद्ध प्रयासों में बाधा डालना चाहते थे, वे जापानी फासिस्टों के इशारों पर चल रहे थे, वे समस्त देश में रेल-तार-डाक-व्यवस्था को समाप्त कर देना चाहते थे।

नेतृत्व-हीन जनता ने इसी आक्षेप को अपने नेताओं का आदेश समझा और तदनुसार कार्य में जुट गई। टाई से लेकर झण्डे तक

पराधीनता के समस्त चिन्हो का समाप्त कर देना उसका ध्येय बन गया।

समस्त देश मे भीषण विद्रोह धधक उठा। रेल की पटरिया मीलों तक उखाड़ डाली गई। टेलीफोन और तार के खम्भे नष्ट कर डाले गये। सरकारी मशीनरी को बेकार कर दिया गया। थानो को जला दिया गया। अनेकों अंग्रेजो और सरकारी कर्मचारियो की हत्या कर डाली गई। जनता ने समानान्तर सरकारे स्थापित कर ली। यही सन ४२ की 'महा-क्रान्ति' थी। ब्रिटिश सरकार को आखिरी धक्का था।

इसके बाद जो कुछ हुआ उसे सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अंग्रेज मनुष्यता को छोड़ कर वहशीपन पर उतर आया। देश की आत्मा को शस्त्र के बल पर कुचलने के लिये, जो कुछ नीच से नीच कर्म मनुष्य कर सकता है, वह अग्रेजी सरकार के कर्मचारियो ने सभ्यता, कानून और मानवता के नाम पर किये, जिन्हे भारत की आने वाली सन्ततिया कभी नहीं भुलायगी।

"भारत छोड़ो" प्रस्ताव पास हो चुका है। देश के कोने कोने मे गाधी जी तथा अन्य नेताओं के पकड़े जाने का समाचार पहुंच चुका है।

(प्रथम दृश्य)

अगस्त १९४२ की एक रात:—

('फ्रण्टीयर मेल' अपनी पूरी चाल से चली जा रही है। एक 'एयर कन्डीशन्ड' डिब्बे मे दो नवयुवक सैनिक अधिकारी, जिनमें

एक भारतीय तथा दूसरा अंग्रेज मालूम होता है, आराम से सान ५ तैयारी कर रहे हैं। ये दोनों सैनिक मोरचे से छुट्टी पर आ रहे हैं)

अंग्रेज:—क्या तुम भी बम्बई ही उतरोगे ?

भारतीय:—हां ! बम्बई कुछ दिन ठहर कर मैं जबलपुर जाऊंगा। उसके बाद अपने एक मित्र से मिलने सपत्नीक मुझे अहमदाबाद जाना होगा।

अंग्रेज:—(मुस्करा कर) और तुम्हारा वह छोटा मुन्ना तुम्हें कब मिलेगा ? वह ! जिसका फोटू तुमने हमें 'नारवे' में दिखाया था। छोटा सा !

भारतीय:—(प्रसन्न मुद्रा में) वह तो अब चार वर्ष से भी ऊपर का होगा। वह अपनी मां के साथ 'विक्टोरिया टर्मिनस' पर ही पाएगा। आप भी पहचानना।

(गाड़ी पूरे वेग से चलती २ अचानक एक झटका खाकर बिल्कुल धीमी गति पर आ गई। डिब्बे मे रक्खा हुआ सामान फर्श पर गिर पड़ा। उसी समय खिड़कियों में कई पत्थर आकर लगे और शीशे के टुकड़े कमरे में बिखर गये। दोनो अचम्भे और आशंका से एक दूसरे को देखने लगे)

भारतीय—(एक दम खड़ा होकर) एं ! यह क्या हुआ ! एक्सीडेण्ट ? क्या ट्रेन पटरी से उतर गई ?

अंग्रेज—नहीं ! नहीं !! ऐसा नहीं हो सकता। ट्रेन पटरी से उतरी नहीं है। नो ! नो ऐक्सीडैण्ट !! गाड़ी धीरे धीरे रुकी है।

भारतीयः—हां ! ट्रेन एक झटका खाकर रुकी है।

(खिड़की के शीशे टूट जाने से कमरे में गरम-गरम लू अन्दर आने लगी हैं। रात के भयानक अंधेरे मे कई लालटेनें इधर से उधर घूमती दिखाई दे रही हैं। उसी समय अचानक, शीघ्रता से खिड़की का द्वार खुला और एक काले रंग के हिन्दुस्तानी गार्ड ने लालटेन उठाये भीतर प्रवेश किया)

गार्डः—(घबराते हुए) मालूम होता है कि भीषण गड़बड़ आरम्भ हो गई है। बहुत खतरा है। मेरा विचार है कि आप लोग खिड़कियों से बिस्तर लगा कर लेट जायं।

(भारतीय अधिकारी को एक ओर ले जाकर कान में कहता है)

गार्डः—देखिये ! इस समय परिस्थिति बड़ी भयानक है। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पास करने के कारण समस्त कांग्रेसी नेता पकड़ लिये गये हैं, बम्बई में झगड़ा हो रहा है। रेलों को रोकने के लिये रेल की पटरियों पर बड़े बड़े 'बोल्डर' रख दिये गये हैं। मैं तो भयभीत हो रहा हूं कि हम सरकारी कर्मचारियों का क्या बनेगा ?

(इतना कह कर वह शीघ्रतापूर्वक कमरे से बाहर चला जाता है)

अंग्रेजः—क्या मामला है ? गार्ड कैसी गड़बड़ बताता है ? खतरा कैसा ? मुझे समझाइये ? यह पत्थर किसने फैंके ? गाड़ी बिना स्टेशन क्यों रुक गई ?

(वह बहुत बेचैन है, उठ कर गाड़ी में तेजी से इधर उधर टहलने लगता है।)

भारतीय:—इण्डियन नेशनल कांग्रेस के 'क्विट इण्डिया', प्रस्ताव पास करते ही सरकार ने समस्त कांग्रेसी नेताओं को पकड़ लिया। इसके विरोध स्वरूप समस्त देश में प्रदर्शन प्रारम्भ हो गये हैं।

अंग्रेज:—(अचम्भे में) मगर यह 'फ्रन्टीयर मेल' क्यों रोक ली गई? (खिड़की की ओर इशारा करके) तुम तो कहते थे कि कांग्रेस वाले अहिंसा पर विश्वास करते हैं मगर यह क्या है? तुम तो महात्मा गांधी को अहिंसा का अवतार कहते थे? क्या यही अहिंसा है? 'क्विट इण्डिया' का यही अभिप्राय है?

भारतीय:—आप जब तक भारतीयों के दृष्टिकोण को शान्ति पूर्वक नहीं समझ लेंगे तब तक आप किसी परिणाम पर नहीं पहुंच सकते।

अंग्रेज:—मुझे संक्षेप में समझाइये।

भारतीय:—देखिये, विश्व युद्ध प्रारम्भ होते ही कांग्रेस ने यह घोषणा की थी कि ब्रिटेन को भारत की इच्छा के विरुद्ध, उसकी ओर से, युद्ध घोषित करने का कोई अधिकार नहीं है। गांधी जी ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा था कि हम युद्ध-लिप्त होने से घबराते नहीं हैं, किन्तु हम विश्व के समस्त देशों की स्वतन्त्रता के लिये लड़ना चाहते हैं। उन्होंने यह भी मांग की थी कि पहले हमारी स्वतन्त्रता की भी गारण्टी होनी चाहिये।

किन्तु भारत की यह बात नहीं सुनी गई। और ब्रिटेन जबर्दस्ती भारत के अपरिमित साधनों का उपभोग करने लगा। कांग्रेस के प्रान्तीय-मन्त्रीमण्डलों ने विरोध स्वरूप त्याग-पत्र दे दिये। भारत की राजनीति में गति अवरोध उत्पन्न हो गया।

'क्रिप्स-मिशन' भी जब इस गुत्थी को न सुलझा सका तो कांग्रेस ने 'अन्तिम स्वतन्त्रता युद्ध' की घोषणा की। इसके द्वारा भारतीयों से कहा गया, कि "वे अहिंसात्मक साधनों को अपनाते हुए विदेशी सरकार का अधिक से अधिक विरोध करें या मर मिटें। ६ अगस्त से हर भारतीय अपने आपको स्वतन्त्र समझे और स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करे।" इसी को 'करो या मरो' आदेश कहा गया है। दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार को चेतावनी दी गई है, कि अब भारत किसी भी रूप मे उसका यहां रहना स्वीकार नहीं कर सकता अतः उसे भारत छोड़ना होगा। यही 'भारत छोड़ो' या 'क्विट इण्डिया' प्रस्ताव है।

अंग्रेज:—यह सब गड़बड़ करने को किसने कहा?

हिन्दुस्तानी:—जब समस्त भारतीय नेता पकड़ लिये गये तो जनता को कौन समझाये कि 'करो या मरो' और 'भारत छोड़ो' का क्या अभिप्राय है। नेतृत्वविहीन और क्षुब्ध भारतीय जनता को आपके भारत मन्त्री, 'मि० एमरी' के वक्तव्य से और भी भयानक प्रेरणा मिली और इसी का

यह परिणाम है। (खिड़की की ओर इशारा करता है)

अंग्रेज:—मि० एमरी ने क्या कहा है?

हिन्दुस्तानी:—आज सवेरे ही तो उनका स्टेट्मैण्ट सुना था? उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को पकड़ लेने की पुष्टि करते हुए कहा था कि भारतीय नेता जापानी फासिस्टों के इशारों पर नाच रहे थे। वे भारत से अंग्रेजी राज्य को समाप्त करने के बहाने से युद्ध-प्रयासों में बाधा डालना चाहते थे। उन्होंने समस्त देश में रेल-तार-डाक की व्यवस्था समाप्त कर देने, कारखानों को तोड़ फोड़ देने और सरकारी खजानों को लूट लेने की योजना बना रक्खी थी। उन्होंने यह भी सोच रक्खा था कि फ़ौज और पुलिस को भी विद्रोह में शामिल कर लिया जाय।"

अंग्रेज:—फिर?

हिन्दुस्तानी:—फिर क्या? ऐमरी के 'स्टेट्मेण्ट' को सुनते ही भारतीय जनता, जो अपने प्रिय नेताओं के पकड़े जाने से बहुत ही क्रोधित और किं-कर्तव्य-विमूढ़ सी हो गई थी, अबाध गति से एमरी के बताये हुए मार्ग पर, उसे अपने नेताओं का आदेश समझ कर चलने लगी। नेताओं की अनुपस्थिति में जनता को कौन समझाये कि 'एमरी' का स्टेटमेण्ट नेताओं का आदेश नहीं एक लांछन मात्र है।

(अंग्रेज अधिकारी बहुत ध्यान से सब कुछ सुन रहा है। गाड़ी धीरे धीरे चलनी आरम्भ हो गई है।)

अंग्रेज:—आपका इस विषय में क्या ख्याल है, क्या यह विश्व के सब से बड़े साम्राज्य की समाप्ति का प्रारम्भ तो नहीं है ?

हिन्दुस्तानी:—शायद !

(ट्रेन हिचकोले खाती हुई चली जा रही है। दोनों व्यक्ति अपने अपने विचारों मे डूबे हुए चुपचाप लेट जाते हैं।)

(पट परिवर्तन)

(दूसरा दृश्य)

(बम्बई प्रान्त मे सतारा के 'काटे वाड़ी' ग्राम के कुछ वृद्ध एक थाने की हवालात मे बन्द हैं। पुलिस अधिकारी कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों की मौजूदगी मे, उनसे पूछ ताछ कर रहे हैं)

पुलिस अधिकारी:—(एक वृद्ध से) तुम्हे हम छोड़ देंगे, तुम यदि ठीक २ पता बता दोगे कि कांग्रेस वाले किस के यहां छुपे हुए है और वे लोग किसके पास आकर ठहरते हैं।

वृद्ध:—सरकार मुझे बिल्कुल मालूम नहीं है। मुझे तो दिखाई भी बहुत कम देता है। मेरा तो कोई भी सम्बन्ध आज तक इन लोगो मे नहीं रहा (हाथ जोड़कर रोने लगता है, हाथ आप रहे हैं)

पुलिस अधिकारी.—(क्रोध में) घंटा भर हम लोगों को इनसे पूछते होगया ये इस तरह नहीं बतायगे। शिवराम ! यह

पत्थर की भारी पटरी मंगाओ और इन चारों बुड्ढों के सर पर रख कर चार लड़के भी उस पर बिठादो। चाहे इनका दम क्यों न निकल जाय, पटरी तब उतारना जब यह भेद बता दें।

(पत्थर की भारी पटरी मगाई जाती है और पाच छै आदमियों की सहायता से उसे चार वृद्धों के सर पर रख कर उस पर चार बालक चढ़ा दिये जाते हैं। बुड्ढे, बच्चों की तरह रो रहे हैं)

(तीन बालकों और दो वृद्धों को रस्सी से बाधा गया है)

पुलिस अधिकारी:—(चिल्ला कर) चिम्टा लाओ, अभी तक गरम नहीं हुआ?

(एक सिपाही आग में से गरम चिम्टा निकाल कर देता है)

पुलिस अधिकारी:—(बधे हुए बालकों और वृद्धों को लक्ष्य करके) या तो सच सच बताओ वर्ना शरीर से तुम्हारी खाल खींच ली जायगी।

(उनमे से अधिकतर बेहोश हो गये हैं। एक बुड्ढा होश में है)

वृद्ध:—हुजूर! मैं धर्म से कहता हूं कि मुझे कुछ पता नहीं। मेरे यहां कोई नहीं आता। ना ही मैं किसी को जानता हूं।

पुलिस अधिकारी:—(दात पीस कर) तुम्हें ऐसा कूट २ कर भर दिया गया है कि तुम परसों से भूखे हो फिर भी नहीं बताते। इतनी मार और सख्ती के बाद भी तुम भेद नही खोलना चाहते। (इतना कह कर लाल तपते हुए चिम्टे से वृद्ध की छाती

की खाल नोच लेता है। वृद्ध एक जोर की चीत्कार मार कर बेहोश हो जाता है)

पुलिस अधिकारी:—इस छोकरे को इधर लाओ ! (सिपाही एक आठ वर्ष के लड़के को घसीट कर सामने लाता है। लड़के की आंखें खुलती हैं)

लड़काः—(ज़ोर से चिल्ला कर) दारोग़ा जी ! अजी मुझे पता नहीं। मुझे मत मारो। (इसी समय पुलिस अधिकारी पूर्ण शक्ति से उसके मुंह पर कई थप्पड़ जमाते हुए कहता है)

पुलिस अधिकारी:—हरामज़ादे ! तेरे सामने सब लोग घर पर आते हैं। तू उनकी चिट्ठी भी इधर उधर पहुंचाता है और झूंट बोलता है। तूने ११ लैटरबक्सों में आग लगाने वाले लिफ़ाफे डालकर सारे ताल्लुके की डाक नष्ट करदी, और कहता है मुझे मत मारो

(उसके दांये गाल को गरम चिम्टे से नोच लेता है लड़के का शरीर लहु लुहान हो जाता है, लड़का असह्य वेदना से तिलमिला उठता है किन्तु गले से बोल नहीं निकलता)

(कुछ गोरे सैनिक दो भारतीय नवयुवतियां को खींच कर थाने में घुस आते हैं। नवयुवतियों की आयु १५-से-२१ के बीच होगी। वे बहुत भयभीत मालूम देती हैं। उनके मुंह पर मार पीट के निशान साफ दिखाई दे रहे हैं। उसी समय एक जयघोष सुनाई देता है और हजारों व्यक्तियों की भीड थाने की ओर बढ़ती दिखाई देती है।)

(कुछ देर बाद)

एक आवाज:—"कौमी नारा"

हजारों कण्ठ:—"वन्देमातरम"

एक आवाज:—'आज क्या करोगे"

हजारों कण्ठ:—"अंग्रेजी सरकार खतम करेंगे"

एक आवाज:—"थाने को"

हजारों कण्ठ:—फूंक दो"

(भीषण कोलाहल सुनकर तमाम अधिकारी बन्दूकें संभाल लेते हैं और भीड़ पर गोली वर्षा होने लगती है। गोली का जवाब ईंट पत्थरों से दिया जाता है। थाने का द्वार तोड़कर जनता गोलियों के बीच ही थाने में घुस आती है। एक युवक थाने पर चढ़ जाता है एक भाग मे आग लग रही है। थाने में पचासो व्यक्ति घायल व मृत अवस्था में पड़े हैं)

युवक:—(थाने की छत से) "कौमी नारा"

जनता:—"वन्देमातरम्।"

(कुछ क्षण पश्चात)

(थाने पर तिरगा झंडा लहरा रहा है पुलिस और फौज के अधिकारियो को पकड़ लिया गया है, जनता उन्हें बुरी तरह मारने मे व्यस्त है)

एक युवक:—देश मुख!

देश मुख:—(आगे आकर अभिवादन करता है)

युवक:—इन दोनों गोरों को फौरन जनता के सामने गोली, से उड़ादो और थानेदार को इस जलती आग में फैंक दो। इन्होंने भारतीय नारियों के सतित्व को जान बूझ कर भ्रष्ट किया और कराया है, इन्हें उसका दंड भुगतने दो।

(आदेश का पालन करने के लिए देशमुख सीटी बजाकर कुछ स्वंयसेवकों को बुलाता है)

(पट परिवर्तन)

कोहिमा
८
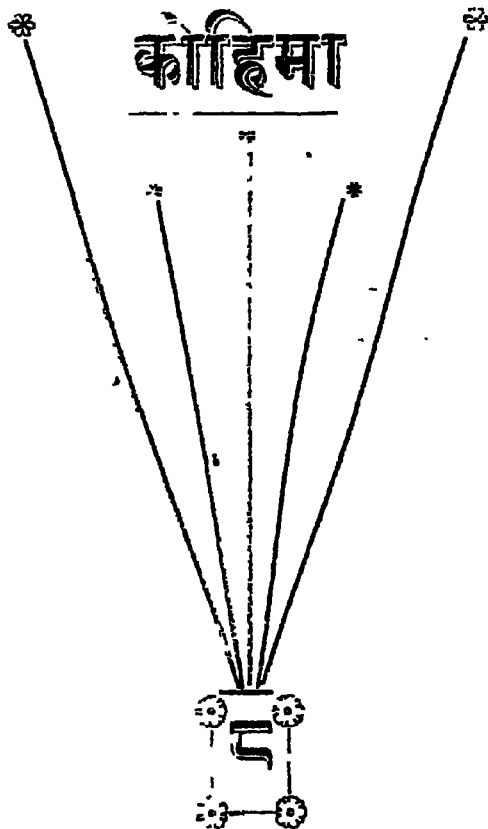
कोहिमा

के

पात्र

रणवीरसिंह:—आज़ाद हिन्द फ़ौज का एक कैप्टिन

कृष्ण:—'जांबाज़ बाल सैना' का कमाण्डर

हमीद:—आज़ाद हिन्द फौज मे सूबेदार

अनेकों सैनिक और 'जांबाज बाल सैना' के जवान।

स्थान:—अस्थाई 'आज़ाद हिन्द सरकार' के अन्तर्गत क्षेत्र

काल:—सन् १९४४—४५

(प्रथम दृश्य)

कोहिमा के मोर्चे पर:—

(आजाद हिन्द सरकार की सैना भारत-भूमि मे प्रवेश कर चुकी है। कोहिमा, पलेल, तामू, टिड्डिम, और आसाम की मणिपुर रियासत का विशनपुर ग्राम भी जीत लिया गया है। दो हजार वर्ग मील क्षेत्र भारतीय सैना के अधिकार में आचुका है। भीषण युद्ध हो रहा है। इम्फाल-कोहिमा सड़क पर अधिकार करके इम्फाल को चारों तरफ़ से घेर लिया गया है। कोहिमा के दुर्गम पर्वतीय वनो से घिरे हुए मोर्चे पर एक टुकड़ी अग्नि चौकी की रक्षा कर रही है। टुकड़ी के कुछ सैनिक बैठे बातें कर रहे हैं।)

पहला सैनिक:—भई कुछ भी हो अपनी लड़ाई अपनी ही होती है। देखो न, जब हम लोग अंग्रेजों की तरफ़ से बग़दाद भेजे गये थे और फिर 'साइप्रस' की रक्षा का भार सौंपा गया था तो हमें कितना भय लगा रहता था।

दूसरा:—भय ? हमेशा यही प्रार्थना किया करते थे कि किसी तरह सही-सलामत अगर एक बार भी घर पहुंच जाय तो फिर फ़ौज का नाम भी न लें। मगर अब भी हम ही हैं।

पहला:—(बात काट कर) अब तो हज़ार मुसीबतें उठाकर भी यह कोशिश की जाती है कि किसी तरह मोरचे पर मोरचा जीतते हुए वड़ी की चौथाई में दिल्ली पहुंच जावें।

दूसरा:—क्या बताएं, अगर हमारी फ़ौजों को भी अंग्रेजी फ़ौजों

की तरह हवाईजहाजों और गोलाबारूद की सहूलियतें होतीं तो अब तक बहुत कुछ काम पूरा हो गया होता।

पहला:—गोला बारूद ? यहां तो तुमने देखा ही है कि ऐसे ऐसे बिकट पहाड़ों मे से रास्ते बना बना कर हम लोगों को पैदल ही चलना पड़ा है कि जापानी अधिकारी भी दंग हैं। भला उनकी या अंग्रेजी सैनिकों की हिम्मत थी कि ऐसे पहाड़ी क्षेत्रों में बनों को काट २ कर रास्ते बना सकते ?

तीसरा सैनिक:—मैं तो कहता हूं कि अगर अब भी हमे जापानियों की तरफ से गोला बारूद लारियों और जहाजों की सहायता मिल जाय तो 'दिल्ली चलो' का स्वप्न पूरा हो। चूंकि रुपये से तो भारतियों ने करोड़ों की सहायता की है। आजाद-हिन्द-फौज की शक्ति भी नित्य बढ़ती जा रही है और हमारी आजाद हिन्द सरकार को भी कई देशों ने स्वीकार कर लिया है।

दूसरा:—कुछ भी हो ! मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि अब अंग्रेजों का भारत में टिकना असम्भव है।

पहला:—वह कैसे ?

दूसरा:—उसका प्रमाण तो स्पष्ट है। क्यों कि युद्ध आरम्भ होते ही कांग्रेसी मन्त्री मंडलों ने त्याग पत्र देदिए।

पहला:—क्यों ?

दूसरा:—वे नहीं चाहते थे कि भारत को उसकी इच्छा के

विरुद्ध इस युद्ध में घसीटा जाय। मगर कौन सुनता था। ब्रिटेन ने गुलाम भारत की ओर से युद्ध की घोषणा करदी और लाखों रुपए का भारतीय माल और सैनिक मोरचों पर जाने लगे।

पहला:—इससे तो अंग्रेज की शक्ति बढ़ी ही है, घटी क्या ?

दूसरा:—मगर फिर देखो न, जब अंग्रेजों से कांग्रेस का समझौता न हो सका, तो महात्मा जी ने सुनते हैं सत्याग्रह जारी कर दिया। और अबतो तुमने जान ही लिया है कि किस तरह कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन जारी किया। इससे अंग्रेजों की पोजीशन और भी गिर गई है।

दूसरा:—(चौंक कर) वाह ! खूब कही। मैं कहता हूं कि जब से भारत में यह आन्दोलन शुरु हुआ है और देश के बड़े २ नेता गांधी जी, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू, जवाहरलाल नेहरू और जयप्रकाश नारायण आदि पकड़े गए है तब से तो भारत की जनता पूरी तरह विद्रोही हो गई है।

पहला:—अच्छा ? क्या खुल्लम खुल्ला लड़ाई हुई है ?

दूसरा:—इससे भी अधिक जनाव ! हजारों तार के खम्भे उखाड़ डाले गए। सैकड़ों मील लम्बी रेल की पटरियां गायब कर दी गई। जगह २ सरकारी इमारतों को फूंक दिया गया, सरकारी खजानों को लूट लिया गया। और न जाने कितने अफसरों की हत्याएं कर दी गई सो अलग। बलिया और

सतारा में तो जनता की समानान्तर सरकारें तक कार्य करती रहीं। सब से अधिक क्रोध तो थानों और कचहरियों पर उतारा गया था।

पहला:—हां गड़बड़ तो कुछ दिन बहुत जोर से चलती रही होगी।

दूसरा:—इतना ही नहीं। जनता का करन्सी पर से भी विश्वास उठने लगा। सुना है बैंकों ने नोटों को भुनवाने वालों की भीड़ लगी रहती है।

पहला:—अब भी तो गड़बड़ चल रही है। सुना है अंग्रेजों ने नेताजी के बंगाल को भूखों मार दिया है?

दूसरा:—बङ्गाल में तो इतना भीषण अकाल पड़ा है कि सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। एक ओर तो तीस चालीस लाख आदमी तड़प २ कर मरते रहे और उधर मुस्लिम लीगी मन्त्रीमण्डल और पूंजीपति मिल कर करोड़ों रुपये डकारते रहे। अन्न गोदामों में पड़ा २ सड़ गया मगर भूखों को नहीं दिया गया। जब नेताजी को पता चला तो उन्होंने कुछ हजार टन चावल पोशीदा तौर पर भारत पहुंचाया।

पहला:—बड़े बड़े अत्याचार किए है इन अन्याइयों ने हमारे देश में। ईश्वर ने चाहा तो उन सब का बदला शीघ्र ले लिया जायगा।

(कैप्टिन रणवीरसिंह का प्रवेश सिपाही खड़े होकर सैनिक ढंग से अभिवादन करते हैं।)

तीसरा सैनिकः—कैप्टिन ! आपके पास आया कोई आदेश ? हमें अब अपने राशन की पूरी तरह चिन्ता करनी चाहिए। कल शाम को ही राशन समाप्त हो चुका था। तब से जवानों को सिर्फ दो दो छटांक चने दिए गए हैं। 'सिगनलर कोर' को तो चने भी नहीं पहुंच सके। शत्रु ने उनसे हमारा सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है आज भी भीषण आक्रमण की आशंका है।

रणवीरसिंहः—चिन्ता की कोई बात नहीं। उसके लिए भी 'जांबाज सैना' के अधिकारियों से परामर्श करके योजना बनाई गई है और कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है राशन के बारे में भी हम सचेत है। फिर भी हमें आपने कर्तव्य पर ध्यान रखना चाहिये। क्या आप लोगों को उस दिन नेता जी को दिया हुआ वचन याद नहीं रहा ?

तीसरा सैनिकः—कौनसा वचन ?

रणवीरसिंहः—वही कि "चाहे भूखों मर जायं, शरीर के टुकड़े टुकड़े हो जायं, मगर कदम पीछे नहीं हटायेंगे, देश से गद्दारी नहीं करेंगे।"

तीसरा सैनिकः—(क्रोध पूर्ण मुद्रा में) कैप्टिन रणवीर ! मेरी भी नसों में वही राजपूती खून है जो आपकी नसों में है।

मैं अभी कई दिन तक लगातार भूखा प्यासा रह कर भी लड़ सकता हूं। 'नेताजी' के आदेश की अवहेलना जान देकर भी इस राजपूत से नहीं होगी।

रणवीर:—(शान्त मुद्रा में) इतने नाराज़ क्यों होने लगे जवान? मुझे तुम्हारी बहादुरी पर शक थोड़ा ही है। मैं तुम्हें सच्चा देशभक्त ही समझता हूं।

(उसी समय एक भीषण विस्फोट होता है और समस्त व्यक्ति अपनी अपनी बन्दूकें संभाल कर किसी आशंका से सतर्क हो कर लेट जाते हैं। गोलियों के चलने की भी कुछ आवाजें आती है। कुछ क्षण पश्चात 'जयहिन्द' का घोष सुनाई देता है। उसी समय जांबाज सेना के कमाण्डर कृष्णशंकर का प्रवेश)

कृष्ण:—(कैप्टिन रणवीर को लक्ष्य करके) कहिए! कैप्टिन साहब, अन्त में हमारी ही योजना सफल रही ना? आगे बढ़ती हुई अंग्रेजी सेना की प्रगति रोक दी गई। अब उस मोर्चे पर हमारी सैना ने अधिकार कर लिया है।

रणवीर:—मैं आपके जांबाज सैनिकों का बड़ा आभारी हूं। यदि आपके सैनिक अपनी जान पर खेल कर बारूदी सुरंगों को बांधे हुए उन टैंकों के आगे लेट कर उन्हें बरबाद न कर देते, तो आज शत्रु अवश्य इस मोर्चे को छीन लेता।

कृष्ण:—(दुखपूर्ण मुद्रा में) किन्तु मुझे अपने उन दोनों सैनिकों का महान दुख है। उनमें से एक भी १३ वर्ष से अधिक

का न था। रामेश्वर तो अपने मां बाप का अकेला ही था, धन्य है वे मां बाप !

(उसी समय खतरा टल जाने की घंटा सुनाई देती है और सब लोग अपनी अपनी बन्दूकें संभालकर खड़े हो जाते हैं। नेपथ्य में सैनिक-गान सुनाई देता है।)

(दूसरा दृश्य)

(आजाद हिन्द सेना का एक मोर्चा। सायंकाल का समय है, कैप्टिन रणवीरसिंह अपने कैम्प में कुछ सैनिकों से वार्तालाप कर रहे हैं। बाहर 'नोटिस बोर्ड' पर एक विशेष सूचना लगी हुई है "रूसी सेनाएं जर्मनी में घुस गईं भारतीय व अंग्रेजी सेनाएं जर्मनी की सीमा पर तेजी से बढ़ रही हैं।")

रणवीरसिंह—भाई हमीद ! अगर अपने वायदे के मुताबिक जापानियों ने ठीक समय पर हमारी फौजों की सहायता की होती तो, हम बरसात आरम्भ होने से पहले ही 'अकयाब' और 'इम्फाल' पर अधिकार करके 'ब्रह्मपुत्र' को पार कर लेते और हमें हर्गिज मनीपुर से पीछे न हटना पड़ता।

हमीद—कैप्टिन रणवीरसिंह ! आपका ख्याल बिल्कुल दुरुस्त है। (कुछ सोच कर) वह ऐसा मौका था कि दुश्मन बिल्कुल कमजोर था, हिन्दुस्तान में बगावत फैली हुई थी, हमारे

मुल्क में लोग बेताबी से हमारा इन्तजार कर रहे थे। हमारी सब खबरें वहां बाकायदा पहुंच रही थीं और लोगों में अंग्रेजों के खिलाफ़ जबर्दस्त नफ़रत फैली हुई थी। (ठण्डी सांस छोड़ कर) अब फिर ऐसा वक्त आना मुश्किल है॥

रणवीरसिंह:—हां, मैं समझता हूं कि नेता जी का वह सुनहरी स्वप्न आसानी से पूरा होता दिखाई नहीं देता। (दोनों कुछ क्षण चुपचाप बैठे रहते हैं)

(पत्र लिये हुए एक सैनिक का प्रवेश—सैनिक ढङ्ग से अभिवादन करके पत्र देता है)

(रणवीरसिंह पत्र को पढ़ कर अवाक् रह जाता है। चेहरे का रङ्ग उड़ जाता है। जल्दी २ फिर पत्र को पढ़ता है)

तीसरा सैनिक:—कहिए कैप्टिन, कोई विशेष आदेश है क्या ?

(रणवीर बिना उत्तर दिए ही कुछ सोचने लगता है)

हमीद—कैप्टिन रणवीर। कोई पोशीदा बात है क्या ? आप तो पत्र पढ़कर बिल्कुल ही चुप हो गये ? खैरियत तो है न ?

रणवीर:—(शोकातुर मुद्रा में) हमीद ! यह तो पासा ही पलट गया ! मन की मन में ही रह गई ! अब क्या होगा ?

हमीद:—(आतुरता से) हैं ! क्या हुआ !! जल्दी बताइए कैप्टिन !!!

रणवीर:—हमीद। जिस बात का खतरा था वही सामने आई। हिटलर की आत्मा भी जिस महा विनाशकारी अस्त्र का

प्रयोग करते हुए कांपती थी, अमरीका ने उसी का प्रयोग करके लाखों प्राणियों को कुछ ही मिन्टों में सदा की नींद सुला दिया।

हमीद:—कैप्टिन ! मैं कुछ नहीं समझा। साफ २ बताओ ?

रणवीर:—अमरीका ने जापान के 'हेरोशिमा' और 'नागा नाकी' टापुओं पर 'एटम-बम' छोड़ कर उन्हें मिनटों में बरबाद कर दिया। और जापान ने हथियार डाल दिए।

हमीद:—(चौंक कर) एँ ! क्या कहा ? हथियार डाल दिए ? अफ्सोस !

रणवीर:—हमीद ! इतना ही नहीं, और भी भयानक सूचना है।

हमीद:—वह क्या है कैप्टिन ?

रणवीर:—हमीद, ख़बर आई है कि जर्मनी पर मित्र राष्ट्रों ने अधिकार कर लिया। हिटलर लापता होगया। मसोलिनी को गोली मार दी गई ! (समस्त सैनिक इस सम्वाद को सुन कर स्तब्ध रह जाते हैं। शोक और गहरी चिन्ता सब के चेहरों पर छा जाती है)

हमीद:—(शोक से) अब क्या होगा ? नेता जी के सारे मन्सूबे अधूरे रह गए ! हिटलर के जर्मनी का अन्त !! (कुछ ठहर कर) बुरा हुआ !

अन्य सैनिक:—हमें अब क्या करना होगा ? आजाद हिन्द फौज का क्या बनेगा ?

रणवीर —(खड़े होकर) भाइयो। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करते हुए बहादुरी का सबूत दें। नेता जी का आदेश है कि "हालात के मुताबिक़ जो मुनासिब हो किया जावे। किन्तु भारत पहुच कर हर आजाद हिन्द सैनिक को राष्ट्रीय कांग्रेस के आदेश का पालन करते हुए देश-सेवा-कार्य में लग जाना चाहिए।" इसलिए बिना देर किए फौरन यहां से चलने की तय्यारी करो। (सब उठते हैं)

(पट परिवर्तन)

---
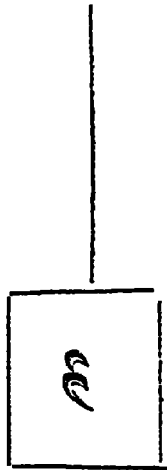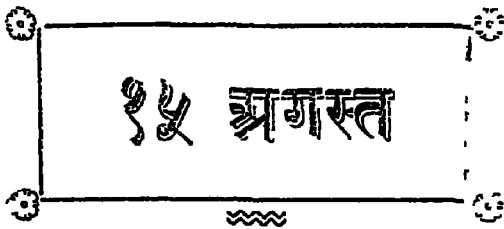
१५ अगस्त
६

१५ अगस्त

के

पात्र

धनीराम:—लाहौर का एक नागरिक ।

राधा:—धनीराम की स्त्री ।

निर्मला:—धनीराम की बड़ी कन्या, आयु १७ वर्ष ।

सावित्री:—धनीराम की छोटी कन्या आयु १५ वर्ष ।

आज्ञाराम:—धनीराम का पुराना घरेलू नौकर, आयु २६ वर्ष ।

विलायतीराम:—ला० धनीराम का छोटा भाई, दिल्ली में नौकर ।

विलायतीराम की स्त्री ।

अनेकों मुसाफिर, बाबू, जन समूह, मुस्लिम गुण्डे तथा हिन्दू मुसलमान सैनिक व रेल कर्मचारी ।

काल—अगस्त १९४७

१५ अगस्त

(प्रथम दृश्य)

(लाहौर के शाहआलमी गेट की एक गली में आग लगी हुई है। कई कई मन्ज़िलों के भवनों को भस्मसात कर देने वाली ज्वाला आकाश को छू रही है। चारों ओर कुहराम मचा हुआ है। 'अल्लाह अकबर' के नारे बार बार सुनाई दे रहे हैं। एक तीनमन्ज़िले मकान में, धनीराम और उसका परिवार, लाहौर से भाग खड़ा होने की तैयारी कर रहा है। मुस्लिम बलवाइयों के दल खुल्लमखुल्ला लूट मचा रहे हैं।)

धनीराम.—(भयभीत मुद्रा में) अब क्या करें, बाहर जाने का कोई साधन नहीं! तमाम मोहल्ले में भगदड़ और लूट मार मची हुई है। हे प्रभू! इस संकट से किसी प्रकार छुटकारा दिलाओ। (कुछ ठहर कर) कुसुम की मां! तुम ही कोई तरकीब बताओ इस मुसीबत में कैसे निकलें ?

राधा.—मैंने तो परसों ही तुम से कहा था कि शहर के ढङ्ग अच्छे नहीं मालूम दे रहे, यहां से निकल चलो। मगर तुम ही नहीं माने। उस रोज तो इतनी लूटपाट भी नहीं थी। अब तो सुना है पुलिस और फौज भी मुसलमानों का ही पक्ष ले रही है। हिन्दू का कोई हिमायती नहीं रहा।

धनीराम.—अगर हम ही दोनों होते तब भी कुछ बात नहीं

थो, चिन्ता तो निर्मला और सावित्री की है। इन लड़-कयों को कैसे निकालें। हे भगवान ! रक्षा करो !

राधा:—मेरा विचार है कि अब शाम हो रही है, गरमी की तीव्रता घटती जा रही है, कल भी इसी वक्त लूट मार आरम्भ हुई थी। इस लिए हमें जल्दी ही किसी निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

धनीराम:—तो फिर क्या करें ?

निर्मला:—पिता जी ! मेरी समझ में एक बात आती है।

धनीराम:—कहो बेटी।

निर्मला:—देखिये। हमने तमाम रुपया पैसा और जेवर तो एक छोटी सी 'अटैची' और पोटली में रख ही लिया है। अब हम लोगों को सिर्फ थोड़े से थोड़े कपड़े पहन कर चल पड़ना चाहिए। खाली हाथ वालों पर हमला भी कम होता है। न हमारे पास किसी को कुछ दिखाई देगा न कोई हमला ही करेगा।

राधा:—निर्मला की बात है तो ठीक। अगर हम इसी प्रकार धन माल और मकान-जायदाद के लोभ मे यहा पड़े रहेंगे, तो जान से भी हाथ धोना पड़ेगा। यदि जिन्दे बच रहे तो घर फिर भी मिल सकता है।

धनीराम:—अच्छा ! अगर तुम सब की यही राय है तो मुझे भी क्या एतराज है।

("अल्लाहो अकबर" के नारे लगाने वाले उत्तरोत्तर समीप आरहे मालूम देते हैं । मकान के अन्दर सारे व्यक्ति नारे सुन कर भयभीत हो जाते हैं)

निर्मला —पिता जी ! जो कुछ करना हो शीघ्र करना चाहिए । मालूम होता है कि आज फिर हमारे मोहल्ले पर आक्रमण हो रहा है।

सावित्री.—पिता जी ! (सामने आकर) यह देखिये । क्या अब भी मैं लड़की लगती हूं ? मुझे कौन पहचान सकता है ?

धनीराम.—सावित्री ! काश, तुम दोनों आज लड़के होतीं । फिर मुझे क्या चिन्ता थी ?

निर्मला:—(जोश से) पिता जी ! आप हमारी रक्षा की चिन्ता न करें । हम स्वयं अपनी रक्षा के योग्य हैं । मैंने राजपूत देवियों की कहानियां पढ़ी है । आज हमें उनही का अनुकरण करना है ।

राधा.—बेटी ! यह गुण्डे बड़े अत्याचारी होते है । मेरा उमेश जिन्दा होता तो अब २१ साल का होता । तेरे से ढाई साल बड़ा था वह । ११ साल की आयु मे ही परमात्मा ने उसे उठा लिया ।

धनीराम.—(क्रोध से) फिर वही क़िस्सा ले बैठी ! अरे, जिनके लड़के नहीं होते वे क्या इस दुनियां मे नहीं रहते ? मैंने अपनी लड़कियों को लड़को से भी अधिक लाड चाव से पाला है, लिखाया पढ़ाया है । मैं इन्हे लड़के ही समझता

हूं। (उसी समय "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "कायदे आजम जिन्दाबाद" के नारे सुनाई देते हैं। "नाराए तकबीर—अल्लाहो अकबर" से वातावरण गूंज उठता है। घर के सब आदमी धड़कते हुए दिलों के साथ बाहर निकल जाने के लिए तैयार हैं)

(कुछ देर बाद)

(गोलिया चलने की आवाजो के साथ ही साथ भीड उसी गली मे आती सुनाई देती है, धनीराम थर २ काप रहा है। जल्दी २ इधर से उधर टहल रहा है)

धनीराम:—(हाथ मलते हुए) अब क्या होगा ? सबकी जाने कैसे बचेंगी ?

(निर्मला और सावित्री की ओर देखकर) मेरी बच्चियो ! मै क्या करूं !! (आखो मे आसू आते हैं।) मैं तुम्हारा बाप हूं। मैं किस तरह इन आंखों से तुम्हारी बेइज्जती होते देख सकता हूं ! मुसलमान आगए ! गुन्डे आगए। चलो पड़ौस के खाली मकान मे कूद जांय, शायद वहां ही भगवान हमारी रक्षा करदे। उस मकान का रास्ता पिछवाड़े वाली गली में खुलता है। भागने मे सुविधा रहेगी।

(मकान के बाहर शोर सुनाई देता है कोई कह रहा है)

आवाज:— यही है सेठ धनीराम का मकान। वह अभी बाहर नहीं गया। मैंने सवेरे ही इस मकान में उसकी आवाज सुनी थी। वर्ना घर अन्दर से क्यों बन्द है ?

दूसरी आवाज़.—दरवाजा तोड़ दो । आग लगादो !! काफ़िरों को ख़त्म करदो !!!

"नाराए तकबीर—अल्लाहो अकबर"

दरवाजे पर चोटों पर चोटें पड़ने लगती हैं । पचासों गुन्डे मकान के फाटक को तोड़कर "पाकिस्तान जिन्दाबाद" का नारा लगाते हुए अन्दर घुस आते हैं । और मकान का कोना २ छानना आरम्भ करदेते हैं ।

(पट परिवर्तन)

(दूसरा दृश्य)

(लाहौर का जंकशन स्टेशन हिन्दू सिक्ख मुसाफिरों से खचाखच भरा हुआ है । शहर की हालत अत्यन्त शोचनीय है । हिन्दू मोहल्लों की खुल्लम खुल्ला लूट पाट जारी है । लाहौर से जान बचा कर निकल भागने के लिए, हजारों हिन्दू सिख धड़ाधड़ स्टेशन की ओर चले आरहे हैं । स्टेशन का चप्पा२ मुसाफिरों से भरा पड़ा है । धनीराम की छोटी लड़की सावित्री, अपनी मा राधा के साथ प्लेटफ़ार्म पर और मुसाफिरों के साथ गाड़ी के इन्तजार में बैठी हैं । उनके पास सिर्फ़ कपड़ों की एक पोटली और झोले में १ लोटा और तौलिया हैं । भीषण नर संहार और आपत्ति से दोनों चिन्ता सागर में डूबी हुई है । उनका पुराना नौकर आज्ञाराम उनके साथ है)

राधा:—(नौकर से) भइया आज्ञाराम ! अगर आज तू हिम्मत न करता तो हम हर्गिज जीवित नहीं बच सकते थे । पांच हजार तो गए मगर जान तो लाखों की बच गई ।

आज्ञाराम:—अम्मा जी, हमें तो अपनी कुछ चिन्ता नहीं थी, फ़िक्र तो लाला जी का था । मुझे विश्वास है कि वे तो हवाई जहाज से दिल्ली पहुंच भी चुके होंगे । अगर इन गुन्डों का दल हमे एक मिनट और न देखे तो, हम भी

निकल गए होते।

सावित्री:—मगर तुमने वहां भी होशियारी से काम लिया। अगर तुम अपना मुसलमानी भेस बनाकर उनके सरदार से सौदा न करते तो वे हर्गिज पड़ौसी मकान की तलाशी लिए बिना नहीं जाते।

आत्माराम:—मुझे तो और कुछ सूझा ही नहीं। मैंने सोचा कि लाला जी तो निर्मला को लेकर निकल गए अब आप लोगों को निकालने का यही ढंग ठीक रहेगा।

(धड़ २ करती हुई एक गाडी स्टेशन मे प्रवेश करती है। गाड़ी पर अन्दर बाहर खचाखच हिन्दू सिख भरे हुए हैं। सैकड़ों आदमियो के शरीर लहलुहान हैं। बहुतसों के पट्टी बंधी हुई हैं। बहुतसों के अंग भंग हैं। गाड़ीके आते ही स्टेशन में खल-बली सी मच जाती है। प्लेटफार्म पर बैठी हुई सवारियां घायलों को देखकर कांप उठती हैं)

पहला मुसाफिर:—(आगन्तुक से) क्यों भाई, यह गाडी कहां से आई है?

दूसरा मुसाफिर:—मुल्तान से

पहला मुसाफिर:—ये लोग क्या मुल्तान में ही घायल होगएथे?

दूसरा मुसाफिर:—(चुपके से) नहीं रास्ते मे कई जगह गाड़ी को रोका गया है। इन्जिन ड्राइवर ने कई २ घण्टे गाड़ी को खड़े रक्खा है। हिन्दू-सिख यात्रियों को ढूंढ़ २ कर मारा गया है। जितनी सवारियां इस गाड़ी मे है, इतनी ही रास्ते मे क़त्ल की जा चुकी हैं। एक भी जवान स्त्री या लड़की को मुसलमान गुन्डों ने नहीं आने दिया। सब को न जाने कहां उठाकर ले गए। मेरी छोटी बहिन ·· ············

(कहते २ सिसकियां लेने लगता है ···आंखों से आंसू बहने लगते है, चुप हो जाता है)

(कुछ देर बाद)

(गोली चलने की कई आवाजें आती हैं। मुस्लिम गुन्डों के एक दल ने स्टेशन पर आक्रमण कर दिया है। हिन्दू फौजी गुन्डों को रोकने में असमर्थ है। मुसलमान सैनिक बलवाइयों से मिल गए हैं।)

आज्ञाराम:—सावित्री !

सावित्री:—हां, भइया !

आज्ञाराम:—तैयार हो जाओ ! स्टेशन पर गुन्डों ने हमला कर दिया है। वह देखो ! सैकड़ों गुन्डे मारकाट करने इधर बढ़े आ रहे हैं, सबके हाथों में हथियार हैं।

सावित्री:—मैं अन्तिम सांस रहने तक माता जी की रक्षा करूंगी।

आज्ञाराम:—सावित्री ! मेरे पीछे रहना। माता जी की फिक्र मत करो ! समझी ? चाकू तय्यार !

(उसी समय गुन्डे उस प्लेट फार्म में घुस आते हैं। कुछ मिनटों में ही सैकड़ों हिन्दू सिख मुसाफिरों की लाशों से स्टेशन पट जाता है। चारों ओर खून ही खून दिखाई दे रहा है। गुन्डे एक एक डिब्बे में घुस घुस कर हत्याकाण्ड मचा रहे हैं। सब कुछ लूट रहे हैं स्त्रियों और बच्चों का चीत्कार चारों ओर सुनाई दे रहा है। हा-हाकार मचा हुआ है। निर्दयी गुन्डे तलवारों और छुरों का खुला प्रयोग कर रहे हैं। हिन्दू सिख चारों तरफ भाग भाग कर जान बचाने की असफल चेष्टा कर रहे हैं।)

आज्ञाराम:—(एक गुन्डे को ललकार कर) खबरदार ! इधर पग बढ़ाया तो अच्छा नहीं होगा।

गुन्डा:—(साथी से) क्या देखता है ! पकड़ ले, मैं इसे देख लूंगा

(दूसरा गुन्डा सावित्री की ओर बढ़कर उसे पकड़ना ही चाहता

है कि सावित्री का तेज चाकू उसके सीने पर पहुंचता है। और आशाराम की खुरपी पहले गुन्डे के तलवार वाले हाथ को घायल कर देती है। उसी समय कई गुन्डे आशाराम पर टूट पड़ते हैं। सावित्री आशाराम पर गुन्डों के आक्रमण को देख कर एक चीत्कार मारकर बेहोश हो जाती है।

(कुछ देर बाद।)

(एक अधेड़ आयु की हिन्दू स्त्री बाल बखेरे नं० ८ प्लेटफार्म पर बैठी हुई बेतहाशा चिल्ला रही है। एक छोटा सा बालक भी उसके पास बैठा रो रहा है।)

बुढ़िया.—अरे मैं तो लुट गई! मेरी बच्ची को गुन्डे पकड़ कर ले गये, कोई मेरी सावित्री को बचाओ। ...अरे यह कैसा अत्याचार है! वे मुझे क्यों न मार गये! (रोती बेहोश हो जाती है।)

(प्लेटफार्म पर सख्त बदबू फैली हुई है। चारों तरफ पड़ी हुई लाशों को कुत्ते और कव्वे स्वतन्त्रता पूर्वक भक्षण कर रहे हैं।)

(तीसरा दृश्य)

(करौलबाग दिल्ली में, धनीराम के भाई विलायतीराम की कोठी। वे सपरिवार अपने ड्राइंग रूम में बैठे रेडियो सुन रहे हैं। आज स्वाधीनता-दिवस का विशेष प्रोग्राम है। वाद्य-संगीत समाप्त होते ही रेडियो बोलता है।)

"यह दिल्ली है, अभी आप राष्ट्रीय गान सुन रहे थे, अब आप, स्वाधीनता-दिवस पर 'विद्रोही' जी का लिखा हुआ 'सम्मिलत गान' सुनिए, जिसे गाने वाले हैं महेन्द्रसहाय एण्ड सामूहिक-पार्टी। इसका शीर्षक है 'स्वाधीनता-दिवस'।

(गाना प्रारम्भ होता है)

भारत में यह दिन आया आजादी का पैग़ाम लिए।
आजादी के लिए देश ने बड़े बड़े बलिदान दिए।
सन सत्तावन में नाना ने पहला बिगुल बजाया था,
झांसी वाली लक्ष्मीबाई ने बलिदान चढ़ाया था,
फौजें बागी हुईं हिन्द की हा हा कार मचाया था,
'जफ़र' बहादुरशाह को भारत का सम्राट बनाया था,
मिले देशद्रोही गोरों से कैद शाह करवाया था,
आजादी के दीवानों को फांसी पर लटकाया था।
जिन्दा जला दिया 'मैना' को अरु लाखोंके प्राण लिए। आजादी···
अट्ठारह सौ पिचासी अठाइस दिसम्बर अमर घडी.
फिर कुछ नायक चले तोड़ने पराधीनता की बेड़ी,
जन्म कांग्रेस का होते ही बलिदानों की लगी झड़ी,
'लाल' 'बाल' 'दादा भाई' 'मालवी' 'घोष' की सैन्य बढ़ी,
दमन चक्र फिर चला वेग से रही सभ्यता दूर खड़ी,
बढ़ी राष्ट्र की सैन्य उग्र हो, चले 'तिलक' हो अग्रगणी।
'जन्म सिद्ध अधिकार हमारा' धाक अमर वरदान
दिये। आजादी··· ·
शस्त्र क्रान्ति की लहर उठी फिर असहयोग का युग आया,
चरखा कातो खादी पहनो गांधी जी ने फरमाया,
छात्रों ने विद्यालय त्यागे बाबू दफ्तर से धाया.
फौज रेल और डाक तार में फिर गई ईश्वर की माया,
भीषण आन्दोलन जब देखा गोरा मन में घबराया,
काले कानूनों ने कुछ को काले पानी भिजवाया,
जलियावाले बाग में 'डायर' ने बहुतों के प्राण लिए। आजादी···
भद्र अवज्ञा के तूफां से ब्रिटिश राज बेजार हुआ।

कई लाख बेकार हुए अरु ठप्प सभी व्यापार हुआ,
चली गोलियां और लाठियां मशीनगन का वार हुआ,
'मोती' 'विट्ठल' 'अन्सारी' के निधन से हाहा कार हुआ,
शेरे पंजाब, राय 'लाजपत' पर लाठी से वार हुआ,
'राजगुरु' सुखदेव यतीन्द्र पै भीषण अत्याचार हुआ,
वीर भगतसिंह ने हसहस कर स्वदेश हित निज प्राण दिए आजादी
उठा एक तूफ़ान भयंकर भड़की प्रलयकर ज्वाला,
चला हिन्द आजाद कराने 'सुभाष' नेता मतवाला,
" अंग्रेजो, "भारत छोड़ो" बापू ने ललकारा,
आखिर समझे चतुर फिरंगी किया हिन्द का बटवारा,
बिस्तर गोल किया भारत से बजा कूच का नक्कारा,
लाल किले पर वीर जवाहर ने तिन—रंगा फहराया,
भारत है स्वाधीन आज से जग में अपनी शान लिए। आजादी।

(संगीत समाप्त होता है। नौकर का प्रवेश, नौकर एक तार का लिफाफा विलायतीराम को देता है। शीघ्रता से लिफाफा खोलकर तार पढते हैं।)

विलायतीराम:—(स्त्री से) ये लो, भाई साहब का तार आया है। सिर्फ वे और निर्मला आ रहे हैं। हमें शीघ्र हवाई अड्डे पर पहुंच जाना चाहिए।

स्त्री.—और सब के विषय में क्या लिखा है? सावित्री क्यों नहीं आरही? सच बताओ।

विलायतीराम —औरों के बारे में मुझे स्वयं बड़ी चिन्ता है। मैंने तो खास तौर पर उनके लिए यहां से सीट रिजर्व कराके भेजी थी। उन्होंने लिखा है बाकी हाल मिलने पर बताऊंगा।

(दोनों हवाई अड्डे पर जाने के लिए खड़े होजाते हैं।)

(पट परिवर्तन)